A-PDF OFFICE TO PDF DEMO: Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

# प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर की चंगाई की शक्ति को किस तरह मुक्त करें
# (How To Release God's Healing Power Through Prayer)

*if you begin to pray for the sick as outlined below,you will begin to see jesus heal the sick through your prayers*

**August 2003**

**Dr.Gary S.Greig**
**Kingdom Training Network and The University Prayer Network**

**Dr.Mark Virkler**
**Christian Leadership University**

**Rev.Frank Gaydos**
**John G,Lake Ministries,Pennsyyivania ealing Rooms Ministry Director**

# प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर की चंगाई की शक्ति को किस तरह मुक्त करें (How To Release God's Healing Power Through Prayer)

यदी आप निम्न बताए गये अनुसार प्रार्थना करना प्रारंम्भ करें, तो आप देखेंगे की, आप की प्रार्थना के व्दारा, यीशु स्वयं बिमारों को चंगा करते हैं।

अगस्त २००३
**डॉ गैरी एस. ग्रेग**
राज्य प्रशिक्षाण जाल एवं विश्वविद्यालय प्रार्थना जाल

**डॉ. मार्क विर्कलर**
मसीही नेतृत्व विश्व विद्यालय

**रेव्ह. फ्रेंक गेडॉस**
जॉन जी लेक संस्था, पैंसीलनेनिया हीलिंग चंगाई देनेवाली संस्था के निर्देशक

# विषयसूची

(Contents)


१. चंगाई की प्रार्थना का संक्षिप्त वर्णन............ ४

२. बाईबल से संबंन्धित चंगाई की बुनियाद...... ११

३. Iकेवल "एक स्वाभाविक गुण" नही....... ११

४. II चंगाई संबंध में परमेश्वर की इच्छा को अपनाना.... १२

५. III विश्वास-चित्रांकित-आत्मिक क्षेत्र में देखना.... १८

६. IV विश्वास-यीशु को चित्रांकित करना...... २१

७. V विश्वास-चंगाई पा चुके व्यक्ति का चित्रांकण करना..... २२

८. VI परमेश्वर की ताकत और बल से चंगाई मिलती है....... २३

९. VII+VIII परमेश्वर की चंगाई की ताकत-पवित्र आत्मा और परमेश्वर की रौशनी......... २८

१०. IX+X मसीही और आत्मा के संघर्ष की भेधता...... २९

११. XIबाईबल की दृष्टि में शैतान ३२

१२. परमेश्वर की चंगाई की शक्ति को मुक्त करने के लिए प्रायोगिक कदम और नियम।......... ३४

१३. प्रयोग के अभ्यास................ ३८

१४. दैवी चंगाई का साधन संदूक(याकूब ५:१४-१८) ५५

१५. चंगाई के उदाहरण व साक्षीयाँ..... ५६

१६. टिप्पणियों की ग्रंथ सूची, उपदेशों की ताकत, चंगाई वगैरह....... ८५

## परमेश्वर की चंगाई के अभीषेक को मुक्त करने के पाँच तरीके मूल कथन

१) यीशु पर केंद्रित हों, बाकी सब भूल जाईए, उस की आराधना करीए।

२) पवित्र आत्मा की ताकत को मुक्त होने के लिए कहीए, उसे देखीए, और उस के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करीए।

३) उस तरह की प्रार्थना करीये जो आप की आत्मा करने को कहती है।

४) नाप की डंडी (अपनी आत्मा के तेल को नापीए) और रूकावटों को निकालीए।

५) अपने मस्तिशक में, उस व्यक्ति को जो चंगाई पा चुका है, उसको चित्रांकित करीए, और परमेश्वर को उस के लिए धन्यवाद करीए।

## विस्त्रित कथन

१) यीशु को परमेश्वर की रौशनी में रूपान्तरित होते देखिए(मत्ती १७:१-८) स्वयं को भूल जाईए, और अपनी आतमा में उसकी आराधना कीजिए (बाई बुनियाद खण्ड III-IV)

२) मांगीये और देखीए, उस व्यक्ति पर और उस के अंदर, यीशु की चंगाई की रौशनी और ताकत किस तरह विस्तीर्ण होती है । उसे दुर्बलता पर केंद्रित होते देखीए, और परमेश्वर को धन्यवाद दीजीए की चंगाई का राजतिलक मुक्त हो रहा है और चंगाई मिल रही है। (बाई बुनियाद खण्ड III,VI-VII)

३) उस तरह की प्रार्थना करीये, जो आत्मा आप का नेतृत्व करती कि आप अनुरोध करें, आज्ञा या आधीकारिक घोषणा। यदि आत्मा द्वारा, आज्ञा की प्रार्थना दर्शित हो, तो पहले आज्ञा दीजीए दर्द को की वह यीशु के नाम में दूर हो, फिर अंदरूणी बीमारी को आज्ञा दीजीए की वह दूर हो(देखिये चंगाई की प्रार्थना का संक्षिप्त वर्णन)

४) उस व्यक्ति से पूछीए की उसे कैसा लग रहा है(पहले से अच्छा, उसी तरह या और खराब) और जैसे जैसे आप का नेतृत्व परमेश्वर करते हैं आप अंदर की रूकावटों को और शैतानी प्रभावों को निकालीये।(देखिए चंगाई की प्रार्थना का संक्षिप्त वर्णन और बाई बुनियाद खण्ड IX-XI).

५). अपने मस्तीशक में उस व्यक्ती की जो चंगाई पा चुका है, एक विस्तारपूर्वक विश्वास का चित्र बनाईए और कहीए, "धन्यवाद है, परमेश्वर, की वही तरीके से यह होएंगा, क्योंकि आपकी ताकत इस व्यक्ति को चंगा कर रही है।"(बाई बुनि.III,V)

## Chapter 1

# प्रार्थना में परमेश्वर की चंगाई के राजतिलक को मुक्त करना।

रीति और विधियां चंगाई नही देती। यीशु देता है। पर यह कुछ मुख्य विषय है जो हमें यीशु के करीब लाते है और बतलाते हैं की वह प्रार्थना के माध्यम से हम से क्या करवाना चाहता है।

### १.**यीशु पर केंद्रित हों, बाकी सब भूल जाईए :**

खामोश हो जाओ, अपने आप को शांत करो, और जिस व्यक्ति के लिए आप प्रार्थना कर रहे है उसे भी खामोश होने को कहीए और शान्त होने को भी और यीशु पर ध्यान केंद्रित करीए, जो सर्वदा हमारे साथ है(मत्ती २८:२०)।उस व्यक्ति से कहीए की वह केवल प्राप्त करे, और संघर्ष न करे और खुद प्रार्थना न करें या आत्मिक भाषाओं में प्रार्थना न करें, जो पवित्र आत्मा को रोकता है, किसी व्यक्ति को चंगाई देने से(यशायाह ३०:१५) " लौट आने और शान्त रहने में तुम्हारा उद्धार है, शांत रहने में तुम्हारा उद्धार है, शान्त रहने और भरोसा रखने में तुम्हारी वीरता। यीशु को उस अंधे व्यक्ति को उस के दोस्तों से दूर ले जाना पड़ा जब उन्होनें यीशु से विनती की कि वह उसे छुए," (मरकुस ८:२२) यह भावात्मक प्रबल भय से भरे हुए संघर्ष को व्यतीत करता है।

अपने मस्तिष्क की आँखो से (मन की आँखों से) देखिए यीशु को रूपांतर होते हुए, जैसे की मत्ती १७:१-८ में दिखाया गया है -यीशु के मुख और कपडों को देखीए, जो परमेश्वर की चमकती रौशनी के से है(इब्रा १:३), परमेश्वर की आत्मा के सुनहरे बादल से लिपटे हुए। यीशु की रौशनी को देखीए(उस के राजतिलक और शक्ति को) आप की ओर और आप के अंदर किरण फैलाती हुई। अपना ध्यान उस पर रखें (देने वाले की आराधना करें उस के उपहार की नहीं) और उस की तारीफ करें अपनी आत्मा में उस ने आप के पापों के लिए क्रूस पर दिया, उस के प्यार और शक्ति के लिए।

पूरी प्रार्थना होने तक अपने अंदर का ध्यान हमेशा यीशु पर रखें। कुछ खास अंतर्दृष्टि या मार्ग दर्शन जो याशु बता रहे हो, उस पर ध्यान दीजीए या प्रार्थना के समय आप के मस्तिष्क में या उस व्यक्ति पर, जब आप परमेश्वर की आवाज़ और दर्शन की ओर ध्यान लगाएं (यानी स्वैच्छिक विचार और स्वैच्छिक चित्र-यदि आप को प्रार्थना में परमेश्वर की आवाज़ सुनने के लिए मदद चाहीए तो आप एच टी टी पी:/डबल्यू डबल्यू.डबल्यू. ईडबल्यूजीमिनिस्ट्रीज़ और / फ्री-क्रिस्टॅन - बुक्स - एण्ड -आर्टिकल्ज़.एच टी एम को खोलीए और "परमेश्वर की आवाज़ को सुनने के चार तरीके " पर जा कर खोलीए) परमेश्वर इस व्यक्ति के जीवन में क्या कर रहा है और आप की प्रार्थना के द्वारा वह क्या करना चाहता है?

यह मान लीजीए की परमेश्वर चंगाई देगा, जब तक वह आप से अन्य प्रकार से नहीं बताता("विश्वास की प्रार्थना के द्वारा कोगी बच जाएगा(यूनानी में फूट बतलाता है 'सोसी' जिस का अर्थ है "चंगा करेगा" यह नहीं की "चंगा कर सकता है" या " यदि परमेश्वर की इच्छा हुई तो....... चंगा कर सकता है)" याकूब ५:१५)।

अपनी आँखों को खुला रखीए, ताकी जब पवित्र आत्मा उस व्यक्ति पर अपने चिन्हों के द्वारा प्रकटीकरण कर रही हो तो आप उससे चूक न जाएं-कुछ प्रतीकात्मक चिन्ह: पलकों का फड़ फड़ाना, साँसों में बदलाव, हलकी कंप कंपी, चर्म पर प्रवाह, मुख पर उज्जवल चमक, प्रत्यक्ष शांति:

संभव उत्तर की परमेस्वर उपस्थित है और पवित्र आत्मा की शक्ति

१. काँपना या थर्राना(निर्ग १९:१६, भजन २:११; ९६:९; ११४:७; ११९:१२०; इति १६:३०; एज्रा ९:४; यशायाह ६६:५; यर्मायाह ५:२२; २३:९, दान१०:१०-११; मत्ती २८:४; प्रेरित ७:३२; इब्रा १२:२१)।

२ गिर जाना---"आरम्भ करना" या आत्मा में "वध होना"(१ राजा ८:११, यहेजकेल १:२८, ३:२३, दान ८:१७-१८, १०:९, मत्ती २८:४, लूक ९:३२, यूह १८:६, प्रेरित ९:४(२६:१४), १कुरि १४:२५, प्रकाशित १:१७)

३ मस्तिष्क की नशे की स्थिती(प्रेरित २:४,१३,१५, .... ५:१८; १शमुएल १:१२-१७; १ शमुएल १९:२३)

४ हंसना, चिल्लाना या रोना(उत्त १७:१,३,१७; एज्रा ३:१३; नहेम्याह ८:९, १२:४३; भजन १२६: २; नीति १४:१३।

५ गर्मी, शक्ति को महसूस करना(मरकुस ५:३०, कुल १:२९, ऐवर्जीया// दुनामिस)

६ गहरी शांति(रोम १५:१३; १ कुरि १४:३३) आदि।

७ चेहरे पर चमक (प्रेरित २:३;६:१५ और ७:५५; २ कुरि ३:१८ (और निर्गमन ३४:२९)

## २.व्यक्ति के अंदर पवित्र आत्मा की चंगाई की शक्ति को छोडने के लिए कहिए।

परमेश्वर से कहिए की वह अपनी शक्ति को छोडे-"यीशु कृपया इस व्यक्ति पर अपनी पवित्र आत्मा की शक्ति और रौशनी को छोडिए।" पवित्र आत्मा आओ इस व्यक्ति पर अपनी शक्ति व रौशनी छोडो।" (यहेज ३७:९ इब्रा बोई हरूआक" आओ हे (पवित्र आत्मा" [इब्रा 'रूअक' का यहाँ पर साफ मतलब है पवित्र आत्मा, क्योंकि यहेजकेल ३७:६ में 'रूअक' को यूनानी भाषा में मंजील के उत्तारार्थ का उल्था में इस के अनुवाद को 'न्यूमा मोऊ' यानी 'मेरी आत्मा' कहा गया है जिस का अर्थ है परमेश्वर की आत्मा और क्योंकि संकेत यह है की सृष्टि की रचना पवित्र आत्मा ने की, उत्पत्ती १:२ में]; "हे यहोवा मैने तुझे पुकारा है; मेरे लिए फुर्तीकर" भजन १४१:१; २ कुरि ३:१७ "प्रभु तो आत्मा है।")

पवित्र आत्मा सर्वदा हमारे साथ है (यूहन्ना १४:१६-१९ भजन १३९:७-१०) पर वह विशेष तौर से आता है, और विशेष राजतिलक प्रगट करता है किसी विशेष उद्देश्य के लिए (लूका५:१७) "चंगा करने के लिए प्रभु की सामर्थ उसके साथ थी।" यह इस बात को बताता है की ऐसा भी वक्त था जब परमेश्वर की सामर्थ प्रस्तुत नहीं थी। १ कुरि ५:४ "जब.....प्रभु यीशु की सामर्थ के साथ इकट्ठे हो;" यशायाह ५५:६ "जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है, तब तक उसे पुकारो।"

"ठहरीए-और यह मुशकिल है-जब तक आप को पवित्र आत्मा के चिन्ह उस मनुष्य पर नहीं नज़र आते-अक्सर परन्तु हमेशा नहीं, पलके झपकती है; साँस में बदलाव आता है, माँस पेशीयो में कसाव या थिरकन, चर्म पर लाली, चेहरे पर चमकती रौशनी, शांती नज़र आती है, गिरना, हँसना, रोना (लूका ५:१७ "और चंगा करने के लिये प्रभु की सामर्थ उस के साथ थी;" भजन संहिता ३७:७,"यहोवा के सामने चुपचाप रह, और धीरज से उसकी प्रतीक्षा कर।")

अपने मस्तिश्क की आँखों से यीशु की चंगाई की शक्ति को देखीये जब वह उस मनुष्य के अंदर एक चमकती रौशनी की तरह प्रवेश करती है। चाहे आप इस अभिषेक को गर्माहट, संसनी और बिजली की तरह अनुभव करें, जैसे की ज्यादातर लोग करते है, या न करें, फिर भी अपने मस्तिश्क की आँख से उस मनुष्य के अंदर उस अभीषेक को प्रवेश होते और उसे उस दुर्बलता के स्थान तक जाते देखीए (अपना ध्यान यीशु पर रखीए), क्योंकि जब तक कोई रूकावट नहीं है (पाप, क्षमा न करना, उत्सुक्ता, डर, अविश्वास), परमेश्वर का अभीषेक यकीनन उस पुरूष के अंदर जाएगा। चंगाई के अभिषेक पर ध्यान केंद्रित करीए, यीशु से कहीए की वह अपनी चंगाई की शक्ति और चंगाई की रौशनी को उस दुर्बल स्थान पर तीव्र करें और देखीए की यीशु की चंगाई की रौशनी अंदर घुसती है और उस दुर्बलता के सही स्थान पर तीव्रता बढ़ जाती है।

विश्वास को जाहिर करते हुए, परमेश्वर को धन्यवाद दीजीए (भजन २२:३-४, ५०:२३, २

इति २०:२१-२३,२७): "परमेश्वर तेरा धन्यवाद है की तेरी चंगाई की रौशनी और शक्ति इस मनुष्य के अंदर और उस दुर्बल स्थान पर जा रही है।" चाहे आपने कुछ होते हुए महसूस किया हो या नहीं, परमेश्वर का धन्यवाद दीजीए।

## 3.जैसे आत्मा मार्ग दर्शन करता है, वैसे प्रार्थना करीए - अनुरोध/ आज्ञा/ आधिकारीक घोषणा :

-जैसे परमेशश्वर अगुवाई करते हैं, वैसे प्रार्थना करीए, अनुरोध/परमेश्वर को निवेदन के साथ और या उन शब्दों से जो परमेश्वर ने किसी परिस्थिति में या शैतान या मनुष्य को कहे हों (उदाहरण मरकुस १:२५, ७:३४; लूका ४:३९, यूह ११:४१-४३, प्रेरित २८:८)

-अनुरोध/निवेदन-यूहन्ना ११:४१, "तब उन्होंनें उस पत्थर को हटाया। यीशु ने आखें उठाकर कहा, 'हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हुँ कि तू ने मेरी सुन ली।" प्रेरित २८:८, "पुबलियुस का पिता ज्वर और आँव लहु से रोगी पडा था। अतः पौलुस ने उसके पास घर में जा कर प्रार्थना की और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया।"

आज्ञा - मरकुस १:२५,".......चुप रह; और उस में से निकम जा;" मरकुस १:२५,".......शुध्द हो जा" (एक कोढी से), मरकुस २:११, युहन्ना ५:८, प्रेरित ९:३४ ".......उठ," मरकुस ३:५,".......अपना हाथ बढा," मरकुस ५:४१, लूका ७:१४, प्रेरित ९:४० ".......उठ" (एक मरी लडकी से); मरकुस ७:३५,".......खल जा (एक बहिरे व्यक्ति के कान से)," लूका ४:३९ "यीशु ने उस के ज्वर को डाँटा और ज्वर उतर गया।" लूका १८:४२ "देखने लग" (एक अंधे व्यक्ति से); युहन्ना ११:४३ "हे लाजरस, निकल आ," प्रेरित ३:६ "चल फिर" (एक लंगडे व्यक्ति से), प्रेरित १४:१० "खडा हो" (एक लंगडे व्यक्ति से)।

आज्ञा की प्रार्थना, इंजील और प्रेरीतों के काम में अक्सर इस्तेमाल की जाने वाली प्रार्थना है, इस कारण, यकीन करो की परमेश्वर आप को चंगाई देने के लिए, आज्ञा की प्रार्थना करने की अगुवाही करेगा।

**-पहले,** आज्ञा दीजिए की दर्द उस मनुष्य को छोड़ कर चला जाए,"दर्द, इस मनुष्य के शरीर से दूर हो जा(हाथ,पैर,दिल आदि) इसी वक्त! यीशु के खून और शरीर की आज्ञा मानीए। लिखा है, "उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए हो।" (पितरस २:२४) और (यशायाह ५३:५) हम यह ऐलान करते है की इस मनुष्य का शरीर यीशु के घावो के कारण यीशु के खून से चंगा हुआ है। यदि आप को दर्द को निकालने के लिए एक बार से ज्यादा भी आज्ञा देनी पडे तो घबराईए मत। (यीशु को भी उस अंधे आदमी के लिए एक बार से ज्यादा प्रार्थना करनी पडी थी, मरकुस ८:२३,२५)। अक्सर २ या ३ बार की आज्ञा प्रार्थना के बाद दर्द चला जाता है।

तब अंदर पड़ी हुई बिमारी(कैंसर, जोड़ों का दर्द, आदि) को उस मनुष्य को छोड़ कर

जाने की आज्ञा दीजीए-उस के साथ एक घुसपैंटी का सा व्यवहार करीए और उससे कहीए की यीशु के नाम में वह उसे छोड़ कर जाए और फिर कभी वापस ना आए। ध्यान दीजीए की यीशु ने बुखार को टोका था, लूका ४:३९ में, जैसे कई जगहों पर शेतान को टोका (वही यूनानी शब्द) (मत्ती १७:१८; लूका ९:४२; मरकुस ९:२५; उन्होने दुष्ट आत्मा को टोका :"हे गुंगी और बहरी आत्मा ......उस में से निकल आ, और फिर कभी प्रवेश न करना।"

अधीकारी घोषणा-(लूका १३:१२;"हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से छूट गयी।" लूका १८:४२;"....तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दीया है।" मत्ती९:६;"....अपनी खाट उठा और अपने घर चला जा।" यूहन्ना ९:७, "...जा शीलोह के कुण्ड में धो ले।" लूका १७:१४, "जाओ , और अपने आपको याजकों को दिखाओ।" और जाते ही जाते वे शुध्द हो गये।"

## ४. नाप की डंडी(तेल को जांचीए) और अंदरूणी रूकावटों को निकालीए।

प्रार्थना के दौरान प्रश्न पूछीए (आप को कैसा लग रहा है? अच्छा? खराब?) यह मालूम करने के लिए की पवित्र आत्मा क्या कर रहा है ताकि ज्यादा जानकारी मिल सके और अगर आवश्यक्ता हो तो यह बदली जा सके (मरकुस ८:२३ मे यीशु ने एक अंधे व्यक्ति से पूछा,"क्या तू कुछ देख सकता है?"; एलीशा ने अपने नौकर को कार्मल की पहाड़ी के किनारे तक सात बार भेजा, यह देखने को की जिस बारीश के आने के लिए वह प्रार्थना कर रहा है, वह आई या नहीं, याकूब ५:१८ और १ राजा १८:४१-४४)

पवित्र आत्मा के प्रती सचेत रहे, ताकी मनुष्य के जीवन में जो चंगाई के विरुद्ध रूकावटे आ रही है उनके बारे में परिज्ञान मिल सके -उदाहरण क्षमा न करना, व्याकुलता और चिंता, डर, अविश्वास, पिशाचीकरण, पाप, जो भावनो की हानी या रिश्तों में हानी वगैरह, की ओर ले जाता है (याकूब ५:१५-१६",विश्वास की प्रार्थना के व्दारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खडा करेगा और यदी उसने पाप भी किया हो, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी। इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ।" मत्ती १३:५८,"और उसने वहाँ उनके अविश्वास के कारण बहुत से सामर्थ के काम नहों किए।" 1कुरि ११:२९-३०"क्योंकी जो खाते पीते समय प्रभु की देह को न पहचाने, वह इस खाने पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। इसी कारण तुम में बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए।")

## ५.उस मनुष्य का जिस ने चंगाई पाई है चित्रांकन करते हुए प्रार्थना करते जाईए।

अपने मस्तीश्क में उस मनुष्य का जिस ने पूर्ण रूप से चंगाई पाई है, चित्रांकण कीजीए (इब्रा ११:१३ यह बताता है की विश्वास का चित्रांकण, विश्वास का एक मुख्य तत्व है )। जैसा परमेश्वर चाहता है की आप करें, आप परमेश्वर से उस मनुष्य का चित्र माँगीए जो पूर्ण रूप से चंगाई पा चुका है। फिर उस मनुष्य के चित्र को अपने मस्तीश्क में रख कर परमेश्वर का

धन्यवाद दीजीए की उस की शक्ति और चंगाई का अभीशेक, चंगाई को पूर्ण कर रहे है। परमेश्वर तेरा धन्यवाद है की इस रीती से यह मनुष्य चंगाई पाएगा, क्योंकि उस के प्रति यह तेरी इच्छा है। हम तेरा धन्यवाद देते है की तेरी शक्ति इस में चंगाई का काम कर रही है, और जो तू इस में कर रहा है, उस पर आशीर्वाद दे।

## Chapter 2

# बाईबली बुनियाद

केवल "उपहारों में एक उपहार" नहीं है -- चंगाई, गैर मसीहों व मसीहों को परमेश्वर की शक्ति व प्रेम बताता है। इंजील और प्रेरितों के काम का ध्यान पूर्वक अध्ययन करने से पता चलता है की नए नियम में चंगाई का एक मुख्य कार्य है की इंजील के प्रचार के साथ चलीए और लोगों को परमेश्वर की शक्ति और दया के बारे में बताईए। चंगाई, केवल आत्मा का एक उपहार नहीं है। नए नियम में, चंगाई संस्था एक महत्वपूर्ण औजार है, परमेश्वर के राज्य के प्रचार के साथ साथ, उन को बतलाने के लिए, जो परमेश्वर को अच्छी तरह से नहीं जानते और उन के लिए भी जो परमेश्वर के लोग है, यीशु की सलीब की ताकत से पापों को क्षमा करना और उन्हे परमेश्वर की राह में वापस लानाः मत्ती ४:२३, ९:३५-३६, १०:१,७-८, ११:५, १२:१५,१८, १५:३०; १९:२; 21:14; मर1:38-39; 2:2,11; 3:14-15; 6:12-13; 10:1; लूका 4:18; 5:17,24; 6:6-11,17-18; 7:22; 9:1-2; 10:9,13; 13:10-13,22, 32; 14:4,7; 21:37; 16:15-18,20; यूहन्ना 3:2; 7:14-15,21-23, 31,38; 10:25,32,38; 12:37,49; 14:10,12; प्रेरित 1:1; 2:22; 3:6,12; 4:29-30; 5:12-16,20-21,28,42; 6:8,10; 8:4-7,12; 9:17-18,34-35; 10:38; 14:3,8-10,15; 15:12,36; 18:5,11; 19:8-12; रोमि 15:18-19; १कुरि 2:4-5; 11:1; 12:1-11,28-31; 14:22-25; २कुरि 12:12; गल 3:5; फिल 4:9; १तित1:5-6; इब्रा2:3-4; 6:1-2; याकूब5:13-16।

## II.चंगाई के विषय परमेश्वर की सामान्य और विशेष इच्छा को अपनाना

धर्मशास्त्र सफाई से यह बताता है कत सामान्य न्याय के अनुसार बिमारी से चंगाई देना परमेश्वर की इच्छा है। याकूब ५:१५ कहता है, "विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा" यह नही की "विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच सकता है या बच नहीं सकता है।" और अगर पूर्णरूप से नए नियम की साक्षी देखें तो परमेस्वर का ढंग चंगाई की ओर यह है की परमेश्वर चंगाई देना चाहता है, जिसने भी इंजील पढी है वह यह जानता है की परमेश्वर के पुत्र ने बिमारों को चंगा किया था। प्रेरितो के काम और पत्रीयाँ यह बताती है की चेलों ने और शुरू के गिरजाघर के जन सामान्य ने, बिमारों को चंगा किया। (स्टीफन, फिलीप, अनानिआस, कुरींतियों, गलतीयों, यहूदी मसीही गिरजाघरों आदि; उदाहरणः प्रेरित3:6,12; 4:29-30; 5:12-16,20-21,28,42; 6:8,10; 8:4-7,12; 9:17-18,34-35; 14:3,8-

10,15; 15:12,36; 18:5,11; 19:8-12; रोमि 15:18-19; १कुरि2:4-5; 11:1; 12:1-11, 28-31; २कुरि12:12; गल 3:5; फिल 4:9; १तित1:5-6; इब्रा 2:3-4; 6:1-2; याकूब 5:13-16) परमेश्वर ने मसीही समाज को चंगाई करने का उपहार दिया है(१ कुरि १२:९) और यह भी की वह मसीही समाज को आज्ञा देता है की वे बिमारों के लिए प्रार्थना करें (याकूब ५:१४-१६) में। तो हमें इन सब सबूतों से यह पता चलता है की परमेश्वर बिमारों को चंगा करना चाहता है। पवित्र शास्त्र इस बात को भी साफ करता है की अल्प संख्या स्थिति में कई कारणवश, शुरूआत के गिरजाघरों ने, सब बिमारों को चंगा होते नहीं देखा (२ तिमो ४:२०, फिलि २:२६-२७, १तिमो ५:२३, गल ४:१३-१४)। यदि  हम याकूब ५:१-१८ में विश्वास की प्रार्थना के बारे में पढें जो बिमारो को चंगा करती है, हम देखते है की १ राजा १८ में, एलिशा, परमेश्वर के तुरन्त शब्दो को सुनता था और तब प्रार्थना करता था, यह उदाहरण है विश्वास की प्रार्थना के जो बिमारों को चंगा करेंगी। १ राजा १८:१ में, एलिशा ने पहले परमेश्वर के भविष्यवाणी के शब्द सुने कि परमेश्वर वर्षा भेजना चाहता था, और फिर १ राजा १८:४१-४५, में एलिशा ने उस वर्षा को, परमेश्वर के लिए भेजना चाहता था, वस्तुतः में प्रार्थना की। सो, वह विश्वास जो बिमारों को चंगा करता है, वह इस बात को भी ग्रस्त करता है की परमेश्वर प्रार्थना में बिमार के लिए क्या करना चाहता है और उस बात को मध्य नजर रख प्रार्थना करना, उस बिमार पर, जब तक हम चंगाई को पूर्ण रूप से उस मनुष्य के अंदर समाते न देखें, जैसे की एलीशा ने तब तक प्रार्थना की जब तक उस ने आखिर कार वर्षा को आते नहीं देखा।

## III. विश्वास का चित्रांकण-आत्मिक क्षेत्र से देखा

बाईबली विश्वास का मतलब यह भी है की जो परमेश्वर हमें विश्वास करने के लिए कहता है, उस का चित्रांकण करना। बाईबल में से एक महत्वपूर्ण विश्वास के पाठ उत्पत्ती १५ में परमेस्वर अब्राहम को (जो "उन सब का पिता ठहरा जो विश्वास करते है "रोनियो ४:११) अविश्वास से वापस विश्वास की ओर ले गया और परमेश्वर पर विश्वास किया की वह उसे वादे के अनुसार पुत्र देगा जो उस के खुद के शरीर का हिस्सा होगा और परमेश्वर ने अब्राहम को, उस के पुत्र के भविष्य के वंश का चित्रांकण कर दिखाया। उत्पत्ती १५:५ में परमेश्वर अब्राहम को, सितारों भरी रात तले, पहाड़ी देश कनान में ले जाता है और कहता है, "आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उन को गिन सकता है?" फिर उसने उस से कहा, "तेरा वंश ऐसा ही होगा?"(उत्पत्ति १५:६) और अब्राहम ने यहोवा पर विश्वास किया, और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना।" लाखों तारे परमेश्वर की ओर से चित्र था की उस के वादा किये हुए पुत्र जो अब्राहम के शरीर से पैदा होने वाला था, उस का वंश कितना बड़ा होगा - एक चित्र जो परमेश्वर चाह रहा था की अब्राहम उस पर विश्वास करे।

इब्रानियों ११, एक पाठ है जो परमेश्वर के लोगों में से विश्वास के अभीनेताओं पर रौशनी डालता है। इब्रानियों ११:१३ कहता है की विश्वास के अभीनेताओं ने उन चिज़ों को देखा, जिस के लिए परमेश्वर चाहता था की वे उस पर विश्वास करें, और उनको उन्होने

प्रार्थना में आमंत्रित किया: "ये सब विश्वास की ही दशा में मरे, और उन्होनें प्रतिज्ञा की हुई वस्तुए नहीं पाई; पर उन्हें दूर से देख कर आनंदित हुए।" यकीनन उन्होनें इन चीजों को जिनका वादा परमेश्वर ने किया था अपनी प्राकृतिक आँखों से नहीं देखा क्योंकि जब तक वे जीवित थे उन्होनें "प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ नहीं पाई (इब्रा ११:१३) परन्तु उन्होने अपनी आत्मिक आँखों से देखा-या अपने मस्तिष्क की आँख से-और उन्होने इन के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया और "उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए।" पौलुस इफि १:१८ में मस्तिष्क की आँखों को "मन की आँखें" कहता है। दानियल ७:१-२ में मस्तिष्क की आँख को वह जगह बताई है जहाँ, भविष्यवक्ता दानियल परमेस्वर की ओर से आए हुए स्वपनों को पाता था: "उस के सर से स्वप्न निकलते थे" हम जानते है कि "मन की आखें" (मस्तिष्क की आँख) को हम कल्पना भी कहते है, क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों को आज्ञा देता है, यहोशु १:८ और भजन १:२ में की कल्पना को, विचारो और चित्र बनाओ की पवित्रशास्त्र हमें परमेश्वर के विषय में और उस के कार्यो के विषय में और उस के रास्तों के विषय में क्या कहता है।

यहोशु १:८ और भजन १:२ आज्ञा देता है की हम ध्यान लगाए या कल्पना करे या चित्र बनाए की पवित्र शास्त्र क्या कहता है। जो इब्रानी शब्द 'हगाह' का इस्तेमाल हुआ उसके एक तरफ अर्थ है, "बड़ बड़ करना, कहना", और दूसरी ओर उसका अर्थ है, "ध्यान लगाना, सोचना (विचार करना, दूर तक सोचना) कल्पना करना, उपाय करना (चित्र को दिमाग में) १ जो खास इब्रारी शब्दों का प्रयोग यहोशु १:८ और भजन १:२ में रह "हगाह बी" है, जो इब्रानी बाईबल में किसी दूसरी जगह उसका प्रयोग सोचने के लिए इस्तेमाल किया गया है जिस का मतलब है। दार्शनिक सोच, कल्पना, या चित्रांकण करना। दक्षिण इलीनाईस विश्व विद्यालय के प्रध्यापक एल लैंगस्फोर्ड के मुताबिक, "यह विचार की कल्पना के साथ साथ विचार भी आता है बिलकुल भी विवाद योग्य नहीं है।" एक तरफ सोच और स्मरणशक्ति बनाई गई है काल्पनिक सोच और काल्पनिक स्मरण शक्ति से, और मौखिक स्मरण शक्ति से "हम समझ सकते है कि नेत्रिय विचार' वह विचार, वह विचार का स्तर है जहाँ कल्पनाएँ बनती है और मस्तिष्क द्वारा वापस बुलाई जाती है।

१. एक ब्राउन,एस.आर.ड्राईवर, और सी.ए ब्रिगस, ए हिब्रू एण्ड इंगलिश लैक्सिकन ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट(ऑक्सफोर्ड:द क्लैटण्डन प्रैस, १९५१) पृशा।

२. एल लाँगस्डोर्फ, आरगुमेन्टेशन और ऐडवोकैसी ३३(१९९६) पृ ४६

३. टी.जी. वैस्ट, इन द माईनड्स आई(न्यू यार्क:प्रोमैथियुस, १९९७)पृ श।

डा. अरनेस्ट जैनी, जो की बसेल विश्वविद्यालय, स्विट्जरलैंड में पुराने नियम के प्रद्यापक है उन्होने इब्रानी क्रियापद 'हगाह' को दूसरे इब्रानी क्रियापदों के साथ जिनका अर्थ देखना और मानसिक ज्ञान से संबंध रखते है उन को मिला कर उन का अर्थ सुचित किया, जो

है 'ध्यान,विचार':

देखना विचारना:.....यहाँ पर मानसिक का अंदरूनी उपलब्धी से मेल उत्पन्न होता है जिस के लिए चिरस्थायी, लम्बे समय की जरूरत पड़ती है जिस को उपसर्ग सही जचता है....वह ध्यान लगाने के क्रियापद के इर्द गिर्द केंद्रित रहता है, जिस में हगाह......ज्यादातर सीधे इन्द्रीय विषय पर निर्माणित है।"

डा. जीजस अरामबट्टी, जो की स्पेनी पुराने नियम के विद्वान है, उन्होने वाक्य रचना के नियमों के अनुसार इब्रानी शब्द 'हगाह' और वाक्य खण्ड हगाह बी का ध्यान पूर्वक अध्ययन किया जिस का इस्तेमाल यहोशु १:८ और भजन १:२ में किया गया है। उन्होने इस प्रकार अन्त किया की यदी वाक्य खण्ड का इस्तेमाल मन का ध्यान लगाने से सम्बन्धित है, तो वह यह बात बताता है की "यह केवल बात करने से कुछ ज्यादा है। इब्रानी शब्द खण्ड 'ज़खर' जो की भजन ६३:७, ७७:१३ और १४३:५ में पाया जाता है, उस के तुल्य, इब्रानी का 'हगाह बी' उस तरह के प्रतिबिम्ब को दर्शाता है जो परमेश्वर के कार्यो के दर्शन या चित्र हों। ("यह दर्शाता [वरजोजन वार्टीजेण्ड] याहवे की पापों से मुक्ति के कार्यो की याद्दाशत है)। वह आगे कहते है की इब्रानी का 'हगाह' का इसतेमाल ट्वुशलुमा और स्वैच्छिक पूर्व ग्रैहण से अतीत से है जो, याद करते हुए वर्तमान में आ गया... "प्रतिबिम्ब डालना, ध्यान लगाना, साधारण अनुवाद है....'हगाह बी' का अर्थ विचार करना, दौहराना, अपने आप को मौलिक दिमाग की स्थिति में रखना। जब कोई दर्शन देखता है या पवित्र शास्त्र को चित्रों के माध्यम से दर्शाता है और कोई अपने आप को मौलिक दिमाग की स्थिति में रखता है उन की तरह जिन्होनें परमेश्वर के मुक्ति के कार्यों को देखा है, "तो अतीत का मुक्ति का इतीहास उस व्यक्ति के लिए जो परमेश्वर के कार्यों को याद रखता है और जो 'तो यह' को अपने मन में रखता है, उस के लिए वह वर्तमान बन जाता है। यहोशु १:८ के बारे में आरगबरी इस प्रकार अन्त करते है, "परमेश्वर के कार्यो को दर्शाना यह यहोशु १:८ में बनाया है, लगातार इसे अपने चित से लगाए रहना, जो की न्याय की पुस्तक में लिखते है।

इन विद्वानो के कार्य इस बात की पूर्ती करते जो अन्दरूणी, मानसिक अनुमान को दर्शाता है, इब्रानी का हगाह इस बात को बताता है जो ध्यान लगाना, विचार करना और सोचना पर निर्धारित है, जिस में सफाई से कई जगहों पर दार्शनिक सोच और दार्शनिक याददाश्त भी शामिल है। नीतिवचन २४:२, दुष्ट के बारे में कहता है, "वे उपद्रव सोचते रहते है" (या 'योजना' या 'विचार' इब्रानी हगाह) इस वचन में स्पष्ट रूप से यह बताया गया है की दुष्ट लोग योजना बनाते है-जिस में दार्शनिक योजना भी शामिल है-ताकि वे अपने दुश्मन पर वार कर सके। यशायाह ३३:१८, परमेश्वर के लोगों के मन को दर्शाता है, उन के पिछले अत्याचारों को याद करते हुए: "तू भय के दिनों को स्मरण करेगा (या 'सोचेगा' या दार्शनिक्ता और शब्दों के द्वारा)' विचार' करेगा" हगाह): लेखा लेने वाला और कर तौल कर लेने वाला कहाँ रहा? गुम्मटों का गिननेवाला कहाँ रहा?" (यशायाह ३३:१८)" इस वचन में इब्रानी हगाह

सफाई से इस बात को बतलाता है। जैसे डॉ.जे.एन.औस्वैट बताते है, मानसिक्ता से "पीछे देखना", अतीत की आकृतियों को और अत्याचारों के कार्यकर्ताओं को एक यहूदी, जिसने असीरीएनों पर अत्याचार होते देखा था, जब वे उत्तरी राज्यों पर चड़ाव कर रहे थे और असीरीएन सेना यहूदा के दक्षीणी शहरों के विरूद्ध में युद्धकाल कर रही थी, तब उन्हें "पीछे मुड़ कर" नही देखा और न ही पिछले असीरीएन अधीकारीयों को स्मरण किया, जैसे की इस वचन में लिखा है, बिना किसी दार्शनिक आकृतियों या मानसिक चित्रों के जो उन के मस्तिष्क में नहीं आई। (आसीरीएन "लेखा" लेने वाले की और "गुम्मटों के गिननेवाले की।)

डॉ आरमबरी ने इब्रानी वाक्य खण्ड 'हगाह बी' को इस प्रकार बताया, "ध्यान लगाना", जिसका इस्तेमाल यहोशू १:८ में और भजन १:२, में इस्तेमाल किया है, दूसरे पुराने नियम के वचनों में से सफाई से, विचार करना, ध्यान लगाना या प्रतिबिम्ब डालना, को दर्शाता है जो परमेश्वर के कार्य का न केवल शब्दों के विचार परन्तु दार्शनिक विचारों और मानसिक दर्शनों को बतलाता है। भजन ७७:१२ "में तेरे सब कामों पर ध्यान करूँगा (या 'विचार' हगाह) और तेरे बडे कामो को सोचूँगा (इब्रानी सिख)।" डॉ यूजीन पीटरसन ने भजन ७७:१२ का अनुवाद किया तो उन्होने दार्शनिक विचार और मानसिक चित्रों के माध्यम से सही ढंग से परमेश्वर के पिछले कार्यों पर दबाव डाला जो इस वचन में इब्रानी वाक्य खण्ड में बताये गये है: मैं तेरे सब कामों पर जो तूने पूरे किए है ध्यान करूँगा, और तेरे कामो को बड़े प्यार से निहारूँगा" भजन लिखने वाला सफाई से यह कहता है की ध्यान लगाने से या परमेश्वर के कार्यो पर प्रतिबिम्ब करने से वह उस के मस्तीश्क के अंदर जाएगा और वहाँ वह चित्र बनाएगा या दार्शनिक्ता से विचार करेगा (साथ ही साथ शब्दों के विचार भी) परमेश्वर के अद्‌भुत कार्यों का, परमेस्वर के लोगों के इतीहास में परमेश्वर का अब्राहम को कनान देश ले जाना, परमेश्वर का मूसा को बुलाना, परमेश्वर का इस्त्राएलीयों को लाल समुद्र के बीच में से मिस्त्र से निकालना, सिओन पहाड़ पर अग्नी और महीमा के बादल में परमेश्वर की उपस्थीती। भजन १४३:५ में इब्रानी शब्द खण्ड 'हगाह बी' का उपयोग 'ध्यान लगाना या सोचना या 'विचार ' की तरह किया है जैसे के इस वाक्य खण्ड को भजन ७७:१२ में किया गया। जिस में परमेश्वर के लोगों के अतीत के मुक्ति के कार्यो को याद किया गया: भजन १४३:५"मुझे प्राचीन काल के दिन स्मरण आते हैं, मैं तेरे सब अदभुत कामों पर ध्यान करता हुँ, और तेरे कामों को सोचता हुँ।" भजन ६३:६" में, इब्रानी वाक्य खण्ड 'हगाह बी', "ध्यान लगाना", "सोचना", या "विचार करना", का उपयोग परमेश्वर को दार्शनिक्ता से विचार करने में किया गया है, जैसे की प्रकरण में संकेत किया गया है, भजन ६३:३, जो इब्रानी क्रिया 'खज़ाह' का उपयोग,"देखना, दर्शन पाना," एक क्रिया को भविष्य दर्शन देखने या आत्मिक क्षेत्र में देखने में प्रयोग किया गया है। भजन ६३:३ में इब्रानी क्रिया 'खज़ाह' प्रयोग, परमेश्वर की मंदिर में उपस्थीती को देखने से है: भजन ६३:३ "क्योंकी तेरी करूणा जीवन से भी उत्तम है, मैं तेरी प्रशंसा।" भजन ६३:६ " जब मैं बिछौने पर पडा तेरा स्मरण करूगा, तब रात के एक एक पहर में तुछ पर ध्यान करूँगा।" यह प्रकरण, जो देखने और परमेश्वर के बारे में दर्शन पाना है, यह उन वचनों से मेल खाता है जो दाऊद भजन संहिता में परमेश्वर की ओर काल्पनिक्ता से देखता है या परमेश्वर को दार्शनिक्ता में अपने आगे

रखता है। भजन १६:८ "मैंनें यहोवा को निरंतर अपने सम्मुख रखा है।" भजन १६:८ के तीसरे शतक बी.सी. में युनानी सेप्टुआजिंट में इस का अनुवाद किया जो की पतरस ने प्रेरितों के काम २:२५ में उद्धृत किया है एक दार्शनिक व्याख्या के साथः प्रेरित २:२५ में भजन ६३:८ का उद्धृत कर यूनानी में अनुवाद किया गया, "मैंनें यहोवा को निरंतर अपने सम्मुख रखा है।" भजन १७:१५"परंतु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूँगा, जब मैं जागूँगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हुँगा।" भजन २५:१५,"मेरी आँखें सदैव यहोवा पर टकटकी लगाए रहती है, क्योंकी वही मेरे पाँवों को जाल में से छुडाएगा।" भजन १०५:४ "यहोवा और उसकी सामर्थ को खोजो उसके दर्शन के लगातार खोजी बनों।" भजन १४१:८ "परंतु हे यहोवा प्रभु, मेरी आँखें तेरी ही ओर लगी हैं, मैं तेरा शरणागत हुँ।"

इस कारण, वही इब्रानी 'हगाह बी' का उपयोग जो की भजन ६३:६, ७७:१२ और १४३:५ में इन अर्थ के साथ किया गया है, जैसे "ध्यान लगाना" या "(दार्शनिक्ता या शब्दों) का विचार" या (दार्शनिक्ता या शब्दों) पर सोचना", इस बात का निर्देश देता है जैसे किसी के मस्तिष्क में चित्रों या विचारों का आना। और, जैसे डॉ आरामबर्री ने अपने अध्ययन में बताया की यह वही अर्थ है जो इब्रानी वाक्य खण्ड 'हगाह बी' का प्रयोग यहोशु १:८ और भजन १:२, में किया गया है: यहोशु १:८ "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना।" भजन १:२-३ "परंतु वह तो यहोवा की व्यवस्ता से प्रसन्न रहता, और उसकी व्यवस्ता पर रात दिन ध्यान करता रहता है। वह उस वृक्ष के समैन है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है, और अपनी त्रृतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।" जो विचारों का दर्शन, ध्यान लगाने से सम्बन्धीत है, जो की यहोशु १:८ और भजन १:२ में इब्रानी 'हगाह बी' को बतलाता है, वह नए नियम के वचन याकूब १:२५ से प्रकरणतापूर्वक सदृश का पुष्टिकरण है। दूसरा वचन इस बात की पूर्ति करता है की जो प्रकरण यहोशु १:८ और भजन १:२ में है की जो परमेश्वर के वचन पर ध्यान लगाते है और वह जो कहता है करते है वे उन्नती करेंगे। पुराने नियम का प्रचलन की परमेश्वर के न्याय पर ध्यान लगाओ, वह याकूब १:२५ में इस तरह बताया गया है जो परमेश्वर के न्याय को दार्शनिक्ता से देखना और साथ में उसे अंदर सोक लेना। यूनानी शब्द 'पाराकुपस' जो याकूब १:२५ में उपयोग किया गया है "वह जो झुक जाता है" या "वह जो अंदर झाँकता है" को दर्शाता है: याकूब १:२५, "जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिध्द व्यवस्ता पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिए आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं पर वैसा ही काम करता है।"

## IV.विश्वास-यीशु को चित्रांकण करते हुए'

विश्वास को चित्रांकण करना एक तरीका है परमेश्वर की उपस्थिती को दोहराने का और उसकी उपस्थिती और उस की शक्ति में जीवन बिताना और उस के नाम का उपदेश देना। यह समझना की पवित्रशास्त्र हमें इब्रानीयों १२:१-२ में यह सिखाती है की हमें अपनी

आँखे यीशु पर रखनी है, तो यह गुण दोष विवेचक होगा इब्रानियों १२:१-२, "इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बडा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड जिसमें हमें दौडना है धीरज से दौडें, और विश्वास के कर्ता और सिध्द करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसनें उस आनंद के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुःख सहा, और परमेश्वर के सिहांसन की दाहिनी ओर जा बैठा।" पवित्र शास्त्र हमें यह भी आदेश देता है की हम अपने विचारों को यीशु पर रखें। इब्रानीयों ३:१ "इसलिये हे पवित्र भाइयो, तुम जो स्वर्गीय बुलावट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं, ध्यान करो।" इस कारण, इब्रानीयों ३:१ और १२:२ हमें आदेश देता है की, हम अपने दार्शनिक विचारों और शब्दों, या अदार्शनिक विचारों को यीशु पर रखें। हमने ऊपर वाद विवाद किया की कैसे पौलुस इफि १:१८ में मस्तिश्क की आँखो को "मन की आँखे" बताता है और कैसे इसी बात को दानियल ७:१-२ में भी बताया गया है की वह स्थान जहाँ पर भविष्यवक्ता दानियल परमेश्वर की ओर से दर्शन पाता था (दानियल ७:१,"स्वप्न देखे") हम ने ऊपर यह भी देखा की "मन की आँखें" (मस्तिश्क की आँख) को हम "भावना" भी कहते है, क्योंकि यहोशु १:८ और भजन १:२ में, परमेश्वर हमें आदेश देता है की हम विचार करें, सोचें और जो पवित्र वचन हमें परमेस्वर के बारे में, उस के कार्यो के बारे में और उस के रास्तों के बारे में, जो बताता है, उसे चित्रांकण करे।

हम ने ऊपर से यह भी देखा की दाऊद भजनों में कैसे परमेश्वर को अपने सामने रखता है। भजन १६:८ "मैंने यहोवा को निरंतर अपने सम्मुख रखा है।" यहाँ यह साफ है की दाऊद ने यह नही किया की वह परमेस्वर के दर्शन का उत्सुक्ता से इंतझार करे की वह कहीं से भी उस के पास आ जाए। यह बात की उसने हमेशा "परमेश्वर को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है" इस बात को बताता है की उस ने स्वयं "पम्प को शुरू किया है," इच्छापूर्वक अपने मन को परमेश्वर पर लगा कर। सच्चाई यही है की यह इच्छापूर्वक कार्य, परमेश्वर को दार्शनिक रूप में अपने से आगे रखना है या परमेश्वर को अपने से आगे रखने का चित्रांकण करना इस बात को बताता है की भजन १६:८ में अनुवाद में इस को बतलाया गया है और कई और भजनों में भी जहाँ दाऊद बताता है की परमेश्वर की ओर देखता है और अपनी आँखो को परमेश्वर पर लगाए रखता है। भजन १६:८, "मैने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है" का तीसरी शताब्दी बी.सी. से यूनानी भाषा में इंजील का अनुवाद किया गया और फिर पतरस द्वारा प्रेरित २:२५ में दार्शनिक अर्थ को दर्शाया गया है। प्रेरित २:२५ में भजन १६:८ को दोहराया गया है, जिस का यूनानी अनुवाद इस प्रकार है," मैं देख रहा था, परमेश्वर को हमेशा अपने सामने।" स्विस के नए नियम के विद्वान,डब्ल्यू निखालिस, ने यूनानी क्रियापद के बारे में बताया की "मध्यम(आकार) का इस्तेमाल विस्तृत ढंग से, परन्तु आलंकारिक्ता से भजन १५:८(१६:८): मोटोमेन (इब्रानी) शावाह पाईल "रखना") अपनी आँखो के सामने रखना"। यह बात साफ है की यूनानी इंजील के अनुवाद और बाद में पतरस ने, इस बात को माना की दाऊद ने "पम्प को चलाया" कुछ इस तरह से की उन्होने दार्शनिक्ता से परमेश्वर को सर्वदा

अपने सामने रखा ताकी परमेश्वर उस में समायें और उन्हें मार्ग दर्शन दें, सम्मती दें और उस तरह से उन्हें शक्ति दे जैसे की भजन १६ में बताया गया है,"मैं यहोवा को धन्य कहता हुँ, क्योंकी उसने मुझे सम्मती दी है, वरन् मेरा मन भी रात में मुझे शिक्षा देता है। मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है, इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है मैं कभी न डगमगाऊँगा। यह सच्चाई की पतरस को यह वचन याद था, इस बात को बताता है की उन्होने अपने उपदेश में प्रेरित २:२५ में इस का उपयोग किया, यह इस बात को भी बताता है की पतरस ने भी खुद "पम्प को चलाया" जैसे दाऊद ने किया और दार्शनिक्ता और चित्रांकण से परमेश्वर को अपने से आगे रखा ताकी उन्हे परमेश्वर से मार्गदर्शन और शक्ति मिल सके।

जैसे की ऊपर बताया गया है, कई और वचन है भजनों में जो यह बताते है की दाऊद ने स्पष्ट रूप से ढूँढा और परमेश्वर पर अपनी आँखो को लगाए रखा। भजन १७:१५, "परन्तु मैं तो धर्मी होकर केरे मुख का दर्शन करूगा जब मैं जागूँगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूँगा।" भजन २५:१५, "मेरी आँखें सदैव यहोवा पर टकटकी लगाए रहती हैं, क्योंकी वही मेरे पाँवों को जाल में से छुडाएगा।" भजन १०५:४, "यहोवा और उसकी सामर्थ्य को खोजो, उसके दर्शन के लगातार खोजी बने रहो।" भजन १४१:८, "परन्तु हे यहोवा प्रभु, मेरी औंखें तेरी ही ओर लगी हैं, मैं तेरा शरणागत हूँ, तू मेरे प्राण जाने न दे।" कुछ वचन जो भविष्यवक्ताओं के द्वारा लिखे गए है वह इस बात को बताते है की भविष्यवक्ता भी परमेश्वर को ढूँढते थे और इसी तरह चित्रांकित विश्वास को भी रखते थे। हब्बकूक २:१,"मैं अपने पहरे पर खडा रहुँगा, और गुम्मट पर चढकर ठहरा रहूँगा, और ताकता रहूँगा कि मुझ से वह क्या कहेगा? मैं अपने दिए हुए उलाहने के विषय क्या उत्तर दूँ?" अमोस ९:१ "मैं ने प्रभु को वेदी के ऊपर खडा देखा, और उसने कहा.....।" यशायाह ६:१, "---मैंने प्रभु को बहुत ही ऊँचे सिहांसन पर विराजमान देखा --।" दानि ४:१, "जो गर्शन मैंने पलंग पर पाया वह यह है: मैंने देखा ----।" दानि ४:१३, "मैं ने पलंग पर दर्शन पाते समय क्या देखा,---।" दानि ७:२, दानिय्येल ने यह कहा, "मैं ने रात को यह स्वपन देखा कि महासागर पर चारों ओर आँधी चलने लगी।" भजन १७:१५, ""परन्तु मैं तो धर्मी होकर केरे मुख का दर्शन करूगा जब मैं जागूँगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूँगा।" प्रकाशित ४:१, "इन बातों के बाद जो मैंने दृष्टि की तो क्या देखता हूँ कि स्वर्ग में एक व्दार खुला हुआ है, और जिसको मैंने पहले तुरही के से शब्द से अपने साथ बातें करते सुना था, वही कहता है, "यहाँ ऊपर आ जा----।"

यीशु स्वयं भी आत्मिक दर्शन के लगातार बहाव में रहते थे। यूहन्ना ५:१९ यह बताता है की यीशु हर समय अपने पिता परमेश्वर को देखते और सुनते रहते थे, यह देखने के लिए की उनके पिता क्या कर रहे है और उन के लिए उन के पिता का क्या आदेश है। यूहन्ना ५:१९-२०, "इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हुँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है; क्योंकी जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है। क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है, वह उसे दिखाता है।" यूहन्ना ८:३८, "मैं वही कहता हूँ, जो अपने पिता के यहाँ

देखा है।" यूहन्ना८:२८-२९, "मैं अपने आप से कुछ नहीं करता परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया वैसे ही ये बातें कहता हूँ। मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है, उसने मुझे अकेला नहीं छोडा क्योंकी मैं सर्वदा वही काम करता हूँ दिससे वह प्रसन्न होता है।" यूहन्ना १२:४९, "क्योंकि मैंने अपनी ओर से बातें नहीं कीं, परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या क्या कहूँ और क्या क्या बोलूँ।" फिर यूहन्ना १४:१६-२० में, यीशु अपने चेलों से कहते है की वे उस के जी उठने के बाद उसे आत्मा के द्वारा देखेंगे। यूहन्ना १४:१६-२०, "मैं पिता से विनती करूगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे----।" (14:17) सच्चाई की आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है, तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा। मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूँगा, मैं तुम्हारे पास आता हूँ। (१४:१८) और थोडी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे, इसलिये कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे। (१४:१९) उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझ में, और मैं तुम में।(१४:२०)"

इस कारण हमें अपनी आँखो को यीशु पर रखना है, और अपने मस्तिष्क की आँख और आत्मिक कानों से हमें पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु को देखना और सुनना है और हर स्थिती में हमें उस का साथ देना है, उस कार्य को करने के लिए जो वह अपनी इच्छानुसार करना चाहता है (देखीए यूहन्ना ५:१९ और १५:५)

## ५.विश्वास-उस देह का चित्रांकण करना जीसने चंगाई पाई हो।

बाईबली विश्वास का मतलब है की हम उस बात का चित्रांकन करे जो परमेश्वर हमें दिखाता है की हम करें (इब्रानी ११:१३; उत्पत्ती १५:५-६) जब हम प्रार्थना करे तो हमें यह चित्रंकण करना चाहिए की उस व्यक्ति की देह चंगाई पा रही है, क्योंकि हमें यह पता है की न्याय के अनुसार परमेश्वर की इच्छा है की बिमार चंगाई पाए। याकूब ५:१५ कहता है,"विश्वास की प्रार्थना के व्दारा रोगी बच जाएगा" यह नही की "विश्वास की प्रार्थना से बिमार चंगाई पा सकता है या नहीं पा सकता है।" और यदि हम पूरे नए नियम में परमेश्वर की चंगाई की स्थिति की साक्षी को देखें तो हमे पता चलता है की परमेश्वर चंगा करना चाहता है। जो भी इंजील का पढने वाला है वह यह जानता है की परमेश्वर के पुत्र ने बिमारों को चंगा किया। प्रेरितों के काम और पौलुस की पत्रीयाँ यह बताती है की चेले और पूर्व में जो गिरजाघर के चलाने वालों ने बिमारों को चंगा किया (स्टीफन, फिलिप, अनानिआस, कुरंथियो गलतीयों, यहूदी मसीही गिरजाघरों वगैरह। उदाहरण प्रेरित ३:६,१२; ४:२९-३०, ५:१२-१६,२०-२१,२८,४२, ६:८,१०, ८:४-७,१२, ९:१७-१८, ३४-३५, १४:३,८-१०,१५, १५:१२,३६, १८:५,११, १९:८-१२। रोमियो१५:१८-१९; १कुरि २:४-५; ११:१; १२:१-११,२८-३१; २ कुरि१२:१२; गल ३:५; फिल ४:९; १तित१:५-६; इब्रा२:३-४; ६:१-२; याकूब ५:१३-१६)। परमेश्वर ने गिरजा घरों को चंगाई देने का उपहार दिया (१ कुरि १२:९)। वह याकूब ५:१४-१६ में वह गिरजाघर को आदेश देता है की

वह बिमारों के लिए प्रार्थना करे। इस तरह इन सबूतों से हमें पता चलता है की परमेश्वर बिमारों को चंगा करना चाहता है। पवित्रशास्त्र यह भी बताता है की कुछ परिस्थितियो के कारणवश, पूर्व के गिरजाघर बिमारों को चंगा नहीं कर सकते थे (२ तिमो ४:२०; फिल २:२६-२७ १ तिमो ५:२३; गल ४:१३-१४)। इस कारण हमें निराश नही होना है यदि कुछ स्थितीयों में चंगाई नहीं मिलती है या थोडी चंगाई मिलती है, तो हमे कोशीश करते रहना है, यह जान कर की सामान्य न्याय के कारण, परमेश्वर चंगाई देगा।

## VI.परमेश्वर की शक्ति या ताकत ही वह बल है जो चंगाई देता है।

कुछ स्थितीयों में यीशु ने यह कहा की "उन में से ताकत निकल गई है" ताकी लोग चंगाई पाए(मरकुस ५:३०; लूका ५:१७; ६:१९; ८:४६)? ऐसी "शक्ति" ने जो उन में से निकलकर एक औरत को चंगा किया (मर ५:३०; लूक८:४६); एक झोले के मारे हुए को चंगाई मिली और वह चलने लगा (लूका ५:१७) और हर बिमार को चंगा किया और उन लोगों को पिशाचों से छुटकारा दिया जो उन को छूते थे (लूका ६:१९) यूनानी 'एवर्जीया' का मतलब है,"काम करना, तीव्रता" या "शक्ती,चमत्कार" इन शब्दों का प्रयोग,यीशु की चंगाई की ताकत को इन वचनों और सारी इंजील और प्रेरीतों के काम में बतलाया है (मत्ती ७:२२; ११:२०-२१,२३;१३:५४;,५८;१४:२, मरकुस ५:३०; ६:२,५,१४; ९:३९; लूका ५:१७; ६:१९; ८:४६; ९:१; १०:१३; १९:३७; प्रेरित २:२२; ३:१२; ४:७; ६:८; ८:१३; १०:३८; १९:११;)

यहाँ यह ध्यान देने लायक है की यूनानी शब्द 'ऐवर्जिया, का मतलब है यूनानी शब्द 'डुनामिस' याने "शक्ति" दोनो शब्दों का एक ही अर्थ निकलता है, जब वह परमेश्वर की ताकत को बताता है और इस कारण दोनो, परमेस्वर की चंगाई और चमत्कारी ताकत को बताते है, जिस का वर्णन इंजील और प्रेरीतों के काम में बताया गया है। डॉ एफ एफ ब्रूस के मुताबिक, "पौलुस ने 'ऐनर्जीया' का प्रयोग अलौकिक ताकत के लिए किया।" कुल१:२९ और फिल३:२१ में पौलुस परमेश्वर की "ताकत (डुनामिस)" को परमेश्वर की श त्ती(एवर्जीया) से मिलाता है।" कुल १:२९,"इसी के लिये मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती है, तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।" फिल ३:२१, "वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके व्दारा वह सब वस्तुओं को अपने वश बदलकर, अपनी महीमा की देह के अनुकूल बना देगा।" कई नए नियम के विद्वानो ने यह बताया है की ऊपर्युक्त संदर्भ जो यह बताता है की यीशु का यह महसूस करना की शक्ति उन्हें छोड़ कर जा रही है की बीमार को चंगाई दे, यह बिलकुल उस तरह है जैसे की आधुनिक अंग्रेजी में जो बिजली या चुम्बकीय शक्ति का विवरण है। अंग्रेज नए नियम विद्वान, डॉ सिरिल एच.पौवेल के शब्दों में "लूका के चंगाई की 'डुनामिस' (शक्ति) के कुछ संदर्भ यह बताते है की कुछ करीबी जाँच की जाए। वे विचित्रता से शारीरिक लगते हैं.....जो चित्र लूका ५:१७ में बताया गया है वह भाष्यकारों के हिसाब से, वह किसी बिजली की सम्भावना से भरा हुआ है......।" डॉ. पॉवल ने

बताया की कई नए नियम के विद्वानों 'डुनामिस'(शक्ति), जो बताई गई है, वह कुछ स्वयं होने वाला और अर्थात-शारीरिक, किसी बिजली के स्त्रोत के बहाव की तरह कार्य करते हुए," दर्शाया है।

## VII.परमेश्वर की चंगाई की शक्ति को, पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर की रौशनी से मिलाया गया है,

हम जानते है की यह परमेश्वर की "शक्ति" जिसका वर्णन यूनानी कुल १:२९ और फिल ३:२१ में किया गया है वह परमेश्वर की रौशनी की स्पष्टता हो सकती है।

यशायाह ३०:२७-२८ में पवित्र आत्मा को नदी के रूप में चित्राया गया है और उस को परमेश्वर की आग से जोड़ा गया है। यशायाह ३०:२७-२८, "देखो, यहोवा दूर से चला आता है, उसका प्रकोप भडक उठा है, और धूँए का बादल उठ रहा है, उसके होंठ क्रोध से भरे हुए और उसकी जीभ करनेवाली आग के समान है। उसकी साँस ऐसी उमण्डनेवाली नदी के समान है जो गले तक पहुँचती है।" इसी तरह यूहन्ना ७:३८ में पवित्र आत्मा को "जीवित पानी की नदी" बताया गया है। यूहन्ना ७:३७-३९,"पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खडा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदीयाँ बह निकलेंगी। उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे...।"

दानियल ७ में परमेश्वर के सिंहासन से आग की नदी बहती है। दानियल ७:९-१० "मैंने देखा......उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी...।" यशायाह ३०: २७-२८ और यूहन्ना ७:३८-३९, यह बताता है की वह आग की नदी जो परमेश्वर के सिंहासन से बह रही है वह पवित्र आत्मा है। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने भी 'मसीहा' का जो वर्णन किया उस में पवित्र आत्मा को परमेश्वर की आग बताया। मत्ती ३:११,"मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है, मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।" प्रेरित २:२-४ में इस वादा का पूरा होना इस बात को साफ करता है की "पवित्र आत्मा और आग" केवल एक दो शब्दों का एक मेल है, जो एक ही बात को बताता है। परमेश्वर की आग, पवित्र आत्मा की स्पष्टता है, जैसे प्रेरित २:२-४ बताता है,"एकाएक आकाश से बडी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया। और उन्हें आग की सी दीभें फटती हुई दिखाई दीं और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गये और जिस प्रकार आत्मा ने उनेहें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अनेय अन्य भाषा बोलने लगे।" निर्गमन ३३ और ३४ और २ कुरिंथियों ३ में यह साफ है की परमेश्वर की आत्मा को स्पष्ट कर परमेश्वर की महीमा से होता है और यह महीमा रौशनी की तरह दिखती है।

परमेश्वर की चमक और रौशनी जो मूसा के चेहरे पर दिख रही थी जब वह दूसरी बार सीओन पहाड़ी पर हो आया था जो निर्गमन ३४ में बताया गया है और जब उस ने परमेश्वर की महीमा को देखा था (निर्ग ३३:१८-१९, ३४:५-७) यह चमक इस्त्राएलीयों के लीए इतनी भयानक थी की मूसा को अपना चेहरा एक कपड़े से ढाँकना पड़ा, यह परमेश्वर की महीमा की स्पष्टता से था। निर्गमन ३४:५ में भी परमेश्वर की आत्मा की रौशनी और महीमा को एक बादल के रूप में देखते है। इस कारण हमें इन वचनों से पता चलता है की पवित्र आत्मा, मध्यस्त होता है और न सिर्फ, ऊपर बताई गयी परमेश्वर की आग को, परन्तु परमेश्वर की रौशनी, परमेश्वर की महीमा और परमेश्वर के जीवन को भी स्पष्ट करता है (२ कुरि ३:६-७)।

**निर्गमन ३३:१८-१९,** मूसा ने कहा, "मुझे अपना तेज दिखा दे। उसने कहा, "मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊँगा और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूँगा।

**निर्गमन ३४:५-८,** तब यहोवा ने बादल में उतर कर उस के संग वहाँ खडा हो कर यहोवा नाम का प्रचार किया। यहोवा उसके सामने होकर यूँ प्रचार करता हुआ चला, यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालू और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवंत, और अती करूणामय और सत्य, हजारों पीडीयों तक निरंतर करूणा करनेवाला, अधर्म और अपराध्द और पाप का क्षमा करनेवाला है, परंतु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहरायेगा; वह पित्रों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है। तब मूसा ने तुरन्त पृथ्वी की ओर झुककर दण्डवत् किया।

**निर्गमन ३४:२९-३३,** जब मूसा साक्षी की दोनों तख्तियाँ ..............जब तक मूसा उनसे बात न कर चुका, तबतक अपने मूँह पर ओढना डाले रहा।

**२ कुरि ३:६-८** "जिसने हमें नई वाचा के सेवक होने के योगय भी किया ..............तो आत्मा की वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी?

**२ कुरि ३:१३** और मूसा के समान नहीं, जिसने अपने मूँह पर परदा डाला था ताकी इस्राएली उस घटने वाले तेज के अंत को न देखें।

**२ कुरि ३:१७-१८** "प्रभु तो आत्मा है.............. अंश करके बदलते जाते हैं।

यह सच्चाई की पवित्र आत्मा मध्यस्त करती और परमेश्वर की आग, परमेश्वर की रौशनी और परमेश्वर की महिमा को स्पष्ट करती है, इस बात की झलक इस्त्राएली व्रितान्त निर्गमन में, विरान में भटकते हुए और यीशु के रूपान्तर में दिखती है। निर्गमन १३ हमें बताता है की,"और यहोवा उन्हें दिन को मार्ग दिखाने के लिए मेघ के खम्बे में और रात को उजियाला देने के लिये आग के खम्बे में होकर उन के आगे आगे चला करता था, जिससे वे रात और दिन दोनों में चल सकें (निर्ग १३:२१)।

यशायाह ६३:११-१४, इस बात को साफ करता है की मेघ का खम्भा और आग का खम्भा पवित्र आत्मा की स्पष्टता थे: "तब उसके लोगों को उनके प्राचीन काल अर्थात मूसा के दिन स्मर्ण आये..........इसी प्रकार से तूने अपनी प्रजा की अगुवाई की ताकी अपना नाम महीमायुक्त बनाए" (यशा ६३:११-१४)। तो फिर से, हम निर्गमन में और विरानें में भटकने के वृतान्तों मे, पवित्र आत्मा को परमेश्वर की उपस्थिती को मेघ के रूप में और परमेस्वर की आग जो रात में रौशनी देती है, के रूप में देखते है। यीशु के रूपान्तर में हम परमेश्वर की रौशनी को यीशु के मुख और कपडो को इस हद तक भरते देखते है की वे परमेस्वर की रौशनी में सूरज की तरह चमकते दिखते है और फिर पवित्र आत्मा परमेश्वर की उपस्थिती को स्पष्ट करती है एक "चमकीले बादल" के रूप में जो परमेश्वर की रौशनी फैला रहा है।

मत्ती १७:१-५, "छः दिन के बाद यीशु ने..........."यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हुँ: इसकी सुनों।"

इन सब सबूतों से यह बात साफ है की पवित्र आत्मा मध्यस्त करता और स्पष्ट करता है परमेश्वर की आग, परमेश्वर की रौशनी, परमेश्वर की महीमा और यह की आत्मा अपनी उपस्थिती को स्पष्ट करता है एक उज्जवल चमकीले बादल के रूप में। हम ने यह बात को देखा की कुछ वचनों में यीशु ने अनुभव किया की "शक्ति (यूनानी डुनामिस) उन में से निकल कर गई है" लोगों को चंगा करने के लिए (मरकुस ५:३०, लूका ५:१७;६:१९;८:४६;)? ऐसी "शक्ति", यूनानी में 'डुनामिस', उस में से निकल कर एक औरत को तुरन्त चंगाई दी (मरकुस ५:३०; लूका ८:४६;), एक झोले के मारे आदमी ने चलना शुरू कर दिया। (लूका ५:१७) और सब बिमारी और दुष्टात्माओं से भरे लोगो को चंगाई मिली जब उन्होने उस को छुआ (लूका ६:१९)। हम ने भी देखा की कई नए नियम के विद्वानों ने इस बात को पहचाना की नए नियम की पत्रीयों में, विशेष रूप से कुल:१:२९ और फिल ३:२१; में यूनानी शब्द एनर्जीया, जिस का अर्थ "शक्ति, कार्यशील" यह यथार्थ है, यूनानी शब्द 'डुनामिस' "ताकत के लिए, इंजील और प्रेरीतों के काम में, इस्तेमाल किया गया है। और हम ने ऊपर्युक्त इस तरह अन्त किया की, परमेश्वर की "ताकत" जिसे यूनानी में 'दनामिस' कहा जाता है, उस परमेश्वर की ताकत से चंगाई को बताता है जो परमेश्वर की शक्ति, कार्यशील" यूनानी में "एनर्जिया' जो पत्रियों में बनाया गया है।

लूका ४:१४ और प्रेरित १०:३८ वचनो में यह साफ है की परमेश्वर की चंगाई की ताकत जिसे यूनानी शब्द 'दुनामिस' से बतलाया गया है, वह मध्यस्थ और स्पष्ट किया गया है, पवित्र आत्मा से। लूका ४:१४,"फिर यीशु आत्मा की सामर्थ्य से भरा हुआ गलील को लौटा और उसकी चर्चा आस पास के सारे देश में फैल गई।" प्रेरित १०:३८,"परमेश्वर ने किसी रीती से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई करता और सब को

जो शैतान के सताये हुए थे अच्छा करता फिरा, क्योकी परमेश्वर उसके साथ था।" इस कारण, उपर्युक्त बाईबली सबूत से यह बात साफ है की पवित्र आत्मा, परमेश्वर की आग, परमेश्वर की रौशनी, परमेश्वर की महीमा और परमेश्वर की चंगाई की ताकत जिसे पत्रियों में परमेश्वर की शक्ति भी कहा गया है, और स्पष्ट करता है।

बाईबल हमें यह सिखाती है की परमेश्वर के प्यार के गुण और आत्मा का उनका स्वभाव के साथ साथ, रौशनी, परमेश्वर के विशिष्ट गुण स्वभाव अंतर्भाग है। १ यूहन्ना १:५ कहता है की 'परमेश्वर के स्वभाव का मध्य गुण है। यूहन्ना १:५ परमेश्वर के स्वभाव के गुण का वर्णन है। इस में कमी है एक यथा की जैसे की यूनानी के कई करता कारक विशेषण संद्या में (और इब्रानी और अधी प्राचीन और आधुनिक भाषाएं जो यथा का इस्तेमाल संद्या को बताने के लिए करते है। परन्तु इस का यह मतलब नहीं की यह परमेश्वर के स्वभाव का मध्य गुण नहीं। यूहन्ना १:५ दोनों यूनानी और अंग्रेजी में सफाई से बताना है की: "परमेश्वर ज्योती है", बिलकुल जैसे "परमेश्वर प्रेम है" (यूहन्ना ४:८) और "परमेश्वर आत्मा है" (यूहन्ना ४:२४)। यह सारी परमेश्वर की विशेषताएं, उस के कई स्वभावों को बतलाते है-आत्मा, प्रेम, ज्योती। यह परमेश्वर के निष्कर्श, गुण ही परमेश्वर के अस्तित्व का अंतर्भाग है।

आगे यह की, परमेस्वर की उपस्थिती की ज्योती, प्रेरित ९:३-४ में प्रत्यक्ष ताकतवर प्रभाव पौलुस अंधा हो भूमी पर गिर जाता है, जब वह यीशु ने परमेश्वर की ज्योती की स्पष्टता देखता है और प्रकाशितवाक्य १:१७ में जहाँ यूहन्ना ऐसे गिरा जैसे वह मर गया हो, जब उसने यीशु की स्वर्गीय चमक देखी। यह वचन सफाई से यह बताते है की परमेश्वर की ज्योती का स्वभाव, परमेश्वर की ताकत उपस्थिती और महीमा चमकती शक्ती को स्पष्ट करती है। और यह इस बात को भी बताते है की परमेश्वर की ज्योती में शारीरिक गुण, हो सकते है जैसे वास्तविक रौशनी, चमक, शक्ति, जैसे की कई पुराने नियम और नए नियम के वचन बताते है। निर्गमन १९:१८ ("परमेश्वर सीयोन पर्वत पर आग के रूप में उतरा था)" निर्गमन २४:१७, "इस्राएलियों की दृष्टि में यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर प्रचण्ड आग के समान दिखाई पडता था।" निर्गमन ३४:२९ "जब मूसा साक्षी की दोनों तख्तियाँ हाथ में लिये हुए सीनै पर्वत से उतर रहा था.......उसके चहरे से किरणें निकल रही हैं।" निर्गमन ४०:३८ ".....बादल में आग उन सभों को दिखाई दिया करती थी।" मत्ती १७:२ "वहाँ उनके सामने उसका रूपान्तर हुआ और उसका मुँह सूर्य के समान चमका......।" प्रेरित १२:७, "तो देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत आ खडा हुआ और उस कोठरी में ज्योती चमकी, और उसने पतरस की पसली पर हाथ मार के उसे जगाया......।" प्रेरित २२:११ "जब उस ज्योति के तेज के मारे मुझे कुछ दिखाइ न दिया,......।" प्रेरित २६:१३ "मार्ग में दोपहर के समय मैंनें आकाश से सूर्य के तेज से भी बढकर एक ज्योति, अपने और अपने साथ चलनेवालों के चारों ओर चमकती हुई देखी।" प्रकाशित २२:५ "फिर रात न होगी, और उन्हें गीपक और सूर्य के उजियाले की अवश्यकता न होगी, क्योंकी प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा और वे युगानुयुग राज्य करेंगे।"

बाइबल परमेश्वर को "ज्योतीयों के पिता" कहा गया है (याकूब १:१७) और व्यवस्था विवरण ४:२४, इब्रानियों १२:२९ कहता है,"हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है।" बाईबल कहती है की हम सब परमेश्वर के बच्चे होने का मतलब है की हम "ज्योती के बच्चे है" जिन में परमेश्वर की ज्योती के फल द्वारा अच्छाई, धार्मिक्ता और सच्चाई, पैदा होती है। इफी ५:८,"क्योंकी तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, अतः ज्योति की सन्तान के समान चलो।" १ थिसलो ५:५ "क्योकि तुम सब ज्योति की सन्तान और दिन की सन्तान हो, हम न रात के हैं, न अंधकार के हैं।"

ज्योति, जो स्वाभाविक दुनिया या सृष्टी में, सृष्टी कर्ता को बताती है, उसको वैद्यविद्या न केवल एक चुंम्बकीय बहाव की शक्ति माना जाता है, जिस को सामान्य आँख देख नहीं सकती की वह कब होती है। परमेश्वर की ज्योती रौशनी से यकीनन उच्च स्तर पर चलती है, जैसा की ऊपर देखा गया, बाईबल, परमेश्वर की ज्योती को, प्राकृतिक रौशनी से तुलना करता है।

## VIII.हमें परमेस्वर की शक्ति और ज्योति से परीपूर्ण होना है।

क्या किसी निश्चित समय पर हम उसे स्पर्शनीय शक्ति समझते है या नही। परमेश्वर की ज्योती - उसकी ताकत, उसका जीवन, और उस की शक्ती- इन सब को हमारे शरीर में चमकना है। हमे अपनी आँखो को परमेस्वर पर लगा कर, उस पर लगाना है जो अच्छा है। (लूका ११:३४) "तेरे शरीर का दीया तेरी आँख है, इसलिये जब तेरी आँख निर्मल है तो तेरा सारा शरीर भी उजीयाला है।" हमारी देह को, हमारी आत्मा और हमारे प्राणों को पूर्णता से भरना है, परमेस्वर की ज्योती, उसकी महीमा और उसकी शक्ति से, जैसे की २ कुटि ३:१८ और ४:६ में बताया गया है।

२ कुरि ३:१८, "परन्तु जब हम सब के उघाडे चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के व्दारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।"
२ कुरि ४:६ "इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, "अंधकार में ज्योति चमके," और वही हमारे ह्दयो मे चमका कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो।"

हमें किसी हवाई बान विज्ञान शास्त्र की उपाधी की जरूरत नहीं है। यह जानने के लिए की परमेश्वर की चंगाई की शक्ति प्रत्यक्ष हुई है पवित्र आत्मा के द्वारा, परमेश्वर की आग या परमेश्वर की शक्ति या परमेस्वर की ज्योती के रूप में, के इसे, गर्मी, शक्ति, चुलबुलाहट या बिजली की तरह समझा जाता है, जैसे की कई मसीह हो जो की चंगाई संस्था में है।

## IX मसीही और आत्मिक लडाई की भेnता

कुछ प्रचारक इस बात से इनकार कर देते है की किसी के मसीही जीवन के कुछ क्षेत्रों पर शैतान का नियंत्रण होता है, लालच और पाप द्वारा। उन का दावा है की क्योंकी एक मसीही पवित्र आत्मा का मंदिर है (१ कुरि ६:१९) और क्योंकी मसीह जो हम में है वह शैतान से जो की इस दुनिया में है उस से बढकर है (१ यूहन्ना ४:४), तो मसीही शैतानी आत्माओं से प्रभावित नहीं हो सकते। इस तरह के दावे इस बात को समझाने में मुश्किल कर देते है की मसीहों में जो शैतानी कार्य हो रहे है, वह क्या है। और जब उस की तर्कशास्त्र की छोर तक पीछा करो तो, हमें और कोई तर्क नहीं सूझता सिवाय इस के की शैतान या उस की शक्ति, किसी भी मसीह को ललचा नहीं सकती। यदि नए नीयम को पढ़े तो यह बात स्पष्ट होती है की यह बाईबल की दृष्टि नहीं है की शैतान की शक्तियाँ मसीही पर क्या कर सकती है।

उत्पत्ती से लेकर प्रकाशित वाक्य तक बाईबल हमें यह बताती है की परमेश्वर के लोग हर दिशा से परमेस्वर और शैतान के बीच पाप की लडाई है। परमेस्वर की रचना ही उस के विरूद्ध हो गई। शैतान से शुरू हो कर हम तक, जो परमेस्वर के लोग है, लड़ाई में घिरे हुए है (इफी ६:१२-१८)। नया नियम यह बताता है की यह लड़ाई एक तनाव उत्पन्न करती है परमेश्वर अपनी प्रभुत्व, अपनी रचना और अपने लोगो के ऊपर और शैतान का दुनिया पर नियंत्रण मनुष्य पाप के द्वारा ( यूहन्ना ५:१९; इफी २:१-५)। इस तनाव को, नए नियम में, कई स्तरो पर देखा जा सकता है। मसीह सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणी है," (कुल २:१० और इफी १:२०-३०) "और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पडा हुआ है।" (यूहन्ना ५:१९) मसीह तो हम में है वह शैतान से बडा है (१ यूह ४:४) जब की शैतान हमारे जीवन पर अपना पंजा कस सकता है, पाप के द्वारा जैसे क्रोध (इफी ४:२६-२७)। पतरस, जिसे पिता परमेश्वर ने खुद यीशु की सच्चाई बताई की वह मसीहा है, मत्ती १६:१६-१७ में, उसी ने एक दम मूँह मोड़ कर उन शब्दों को बोला जो शैतान से प्रभावित थे (मत्ती १६:२१-२३)।

हनन्याह और सफीरा वस्तुतः विश्वासी थे-कोई और तरीका नहीं था की वे विश्वासीयों की संगती में रहें, क्योंकी प्रेरित ५:१३-१४ में, विश्वासी और अविश्वासी के बीच एक कड़ी सीमा है (औरों में से किसी को यह हियाव न होता था की उन में जा मिलें) परन्तु हनन्याह और सफीरा के मन शैतान से भरे हुए थे जीस कारण वे लालच और धोका देने लगे (शैतान ने तेरा मन क्यों भर दिया (प्रेरित ५:३) शैतान एक विश्वासी पर ही हावी होता है, १ पतरस ५:८-९ के मुताबिक चाहे यीशु जो उस विश्वासी में है वह बडा है (१ यूहन्ना ४ :४)। क्षमा न करने के द्वारा शैतान उस विश्वासी का जिस में मसीह बड़ा है, फायदा उठा सकता है (२ कुरि २:१०-११) (२ तिमो २:-२६) के मुताबिक, एक विश्वासी जिस में यीशु बड़कर है, उसे शैतान अपने वश में कर सकता है की वह उस की इच्छा को पूरा करे (पतरस ने, प्रेरित ८:२३ में जैसे शमौन टोना करने वाले के लिए कहा जो बपतिस्मा ले चुका था और विश्वासी था, परन्तु फिर

भी "अधर्म के बन्धन में पड़ा था)। याकूब बताता है की एक विश्वासी जिस में मसीह है, वह उसी समय, उन स्थितीयों से भी रहता है जो शैतानी है। (याकूब ३:१४-१५)। पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासीयों को जिन में मसीह रहता था चेतावनी दी की हो सकता है की वे एक "दूसरी आत्मा" पाए-यकीनन शैतानी आत्मा जो पवित्र आत्मा के विपरित है-दूसरे वचन को पाए जिसका वर्णन २ कुरि ११:४, में (१ तिम ४:१ और १ यूहन्ना ४:१ को याद करते हुए)

यह वचन हमें यह नहीं बताते की यदी मसीह की उपस्थिती, पवित्र आत्मा के माध्यम से, हम में है, तो हम शैतान के चुंगल से नहीं बच सकते। यहाँ पर यह भी साफ है की केवल मसीही बनने से और अपना विश्वास मसीह में रखने से, हम पाप और शैतानी प्रभाव से बच जाएंगे। बल्की पूरे नियम में हमें चेतावनी दी गई है की हम शैतान की योजनाओं से पेरभावित होने से बचे।

## X.बाईबल की सच्चाई के दृश्य का सामना करना

डॉ कलिनटन आर्नल्ड, जो की नए नियम के विद्वान है, उन का औपचारिक वार्तालाप (केम्ब्रीज विश्व वदियालय, १९८६) में उन्होने पौलुस के इफीसियों में शैतानी शक्ति के उस के व्यवहार की उन्होने सुक्ष्म परिक्षा की, वे पौलुस के जो आदेश है उन आत्मिक टकराव और विश्वासी की सच्चाई की लडाई, शैतान से जो इफीसियों ६:१०-१८ में दीया गया है।

विश्वासी का विरोधी है "शैतान" (व११) अनेक "शक्तियां" (व१२) और 'उस दुष्ट" (व१६) विश्वासी को आत्मिक शक्ति की जरूरत है ताकी वह उस शैतान को दूर कर सके, न सिर्फ उस के अलौकिक स्वभाव और ताकत के कारण, पर क्योंकी वह कई "कपटी छल" का इस्तेमाल करता है। इन शब्दों का प्रयोग बुरे मतलब से इस्तेमाल किया है और उस के साथ कई काल्पनिक आक्रमण भी कई बार दोहराए गए है जिनमें अलेखनीय मित्रता है। यह इस बात को जोड़ लेगा की शैतान, विश्वासीयों को लालच देता है की वे बुरे काम करें और यह इस बात के लिए भी हो सकता है की इंजील के फैलाने और मसीह के कार्यो में रूकावट लाए।

६:१६ में, शैतानी आक्रमण एक फर्क तौर से बताया गया है, जहाँ झगडे में अगुवा करने वाला पदवी पाता है "उस दुष्ट के" और "जलते हुए तीर" दागता है, संतो पर। यह अंदरूणी बुराई के लालच से कुछ ज्यादा है और यह वहाँ तक पहुँचता है जहाँ उस शैतान के हर आक्रमण और बुराई है।
"शैतान" एक और जगह बताया गया है इफीसियों २७ में, जहाँ वह तैयार खड़ा है आप के जीवन पर कब्जा करने के लिए, जीसे आप पाप कर के उसे सोंप देते है। सीधा उद्धारण कानून न पाने वाले क्रोध से है (व-२६), परन्तु यह जरूरी नहीं है की आप इसे केवल क्रोध पर केंद्रित करें। झूठ बोलना (व२५) चोरी करना (व २८) और किसी भी प्रकार का व्यवहार जो पुराने मनुष्यत्व" (व२२) से तालुक रखता है, इसे लेखक शैतान को सौंपने की सीमा और पवित्र

आत्मा का शोख (व३०) बताता है।

लेखक यह भी  कहता है की शैतान विरोदी है: कई तरह की आत्मिक "शक्तियाँ" विश्वासीयों के विरुद्ध में खड़ी है (६:१२)

नया नियम यह भी सिखाता है की शैतान और उस की सेना मसीही के सच में स्पर्शनीय दुष्मन है। वह यह भी सिखाती है की हम परमेश्वर के आधीन रहें (याकूब ४:७-८), उस की आत्मा से भरे रहें (इफी ५:१८) और पाप से मुख मोड़ लें ताकी हम शैतान के प्रभाव में या कठोरता में न आएं (इफी ४:२६-२७, ६:१०-१८)।

## XI. शैतान का बाईबली दृष्य

(राज्य और शक्ति नामक पुस्तक जो डॉ गैरी एस.ग्रेग और केविन एन.स्प्रींगर ने लिखी है, से लिया गया (टीगल १९९३) पी पी ४१३-४१५)

कुछ प्रचारकों को यह विश्वास करना मुश्किल होता है की शैतानों के कुछ निश्चित कार्य है और ऐसी बातो पर वे ध्यान नहीं देते हैं।

वे शैतानिक्ता और टूना टोटके की बातों पर से फिसल जाते है एक फर्क तरीके से वे शैतान को दर्शाते है जैसे शैतान का बंधी, डर, दर्द  और शारीरिक बिमारीयाँ भी जैसे खुजली........। परन्तु यह आत्मिकता की लड़ाई  को  तुच्छि  और सस्ता बना  देता है। यह हमारी आस्मानी राजाओं से जो लड़ाई की गंम्भीरता है, उसे बेकार बान देता है।

वागनर ने तो शिक्षालय में एक सभा का ही आयोजन कर लिया था, जिस मे उन्हों ने मसीही अगुओं को एकत्रित किया की वे विभिन्न शैतानों को बाँध सकें (जिन में बैघर करने वाले शैतान, बिमारी का शैतान, और बर्मुदा तीकोन का शैतान भी शामिल है।)

यह सब विचार इस बात को बताने है की यह जान कारी की कभी के कारण है की पवित्र शास्त्र बुरी आत्माओंके बारे मे क्या कहता है। हम यह भी पूध सकते हैं की लूका १३:११ मे जा उस औरत की अवस्था भी क्या उसे "बिमारी की आत्मा" कह सकते है या वह भी 'मामूली' और  बेकार था? परन्तु पवित्रशास्त्र यह बनाता है की शौतानों के कुछ निश्चीत कार्य है जो उन्हें दिये गये है:

l तिम १:७......" डर की आत्मा"
l तिम ४:१......"धोखे की आत्मा"
l यूह ४:६......"गलती की आत्मा"
रोमि ११:८......"व्यामोह की आत्मा"

रोमि ८:१५......"दास्तव के भय की आत्मा"
प्रेरित १६:१६......"भावी कहने की आत्मा"
लूका १३:११......"बिमारी की आत्मा"
लूका ११:१४......"गूँगी दुष्टात्मा"
मरकुस ९:१७,२५......"गूँगी और बहीरी आत्मा"
मत्ती १२:२२......"गूँगे और अंधेपन का कारण शैतान"
मत्ती ९:३३......"गूँगेपन का कारण शैतान"
जकर १३:८...."अशुद्धता की आत्मा, झूठ बोलने बाली आत्मा जो झूठी गवाही देती है। "
होश ४:१२......"वैश्यवृती की आत्मा" जो इस्राएलीयों को भटकाती है; यह मूर्ती से संम्बंध रखती है (४:१२,१७) और वैश्यवृती और व्यभीचार की ओर ले जाती है।"
अय्यूब ४:१५......"वह आत्मा जो एलीपज, अय्यूब ४:१२-१७ में उत्तेजित किया, सामना करता है और जो एलीपज के उपदेश को जो वह अय्यूब को देता है, जो अय्यूब के मुताबिक झूठी आत्मा थी (४२:७-८)।"
१ राजा २२:२२ (२ इती १८:२१)......"घोखे की आत्मा"। एक कार्मीक बूरी आत्मा जो भविष्यवम्ताओं को झूठ बालने के लिए उत्तेजित करती है ( १ रेजा २२:२१-२३).

डेड सी स्क्रोलों और कई अन्य पूर्वी यहूदी और मसीही संदेहजनक साहित्यों में बुरी आत्माओं के खास बुराईयों के संकेत है। प्राध्यापक ऐडूआर्ड स्वीज़र ने कुछ संदर्भ दिये है "लालासा की आत्मा, व्यभीचार की आत्मा और गुस्से की आत्मा के। प्रध्यापक फोरर्स्टर आगे जोड़ते है अंधेपन की आत्मा बिमारी की आत्मा "बहकाने बाली आत्मा" इन के साथ "टूना टोटका", "लड़ाई", "कलहा" और "खून खराबा की आत्माऐं" भी हैं।

नए नियम में शैतानों का विचार, सामान्य तौर सें, उन विचारो से मिलते जुलते हैं, जो संदेहजनक और झूठे शीलालेख साहित्य, डेड सी स्क्रोल, और पूर्वी तालमुड के तहदार जट्टानों की परत सें पाए गए लेखों से लिए गए हैं। यह सामन्य तौर से मान जाता है की शैतान बूराई का दूत है। उन्हें शैतान के प्रचारक मान लिया गाया है।

## परमेश्वर की चंगाई कि शक्ति को मुक्त करने के लिए आभ्यासिक क्रम और सद्धान्त.

परमेश्वर की चंगाई के आभीषेक के ५ तरीके

### मूल कथन

१) यीशु पर केंद्रित हों, बाकी सब भूल जाईए, उस की आराधना करीए।

२) पवित्र आत्मा की ताकत को मुक्त होने के लिए कहीए, उसे देखीए, और उस के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करीए।

३) उस तरह की प्रार्थना करीये जो आप की आत्मा करने को कहती है।

४) नाप की डंडी (अपनी आत्मा के तेल को नापीए) और रूकावटों को निकालीए।

५) अपने मस्तिश्क में, उस व्यक्ति को जो चंगाई पा चुका है, उसको चित्रांकित करीए, और परमेश्वर को उस के लिए धन्यवाद करीए।

### विस्त्रित कथन

१) यीशु को परमेश्वर की रौशनी में रूपान्तरित होते देखिए(मत्ती १७:१-८) स्वयं को भूल जाईए, और अपनी आतमा में उसकी आराधना कीजिए (बाई बुनियाद खण्ड III-IV)

२) मांगीये और देखीए, उस व्यक्ति पर और उस के अंदर, यीशु की चंगाई की रौशनी और ताकत किस तरह विस्तीर्ण होती है । उसे दुर्बलता पर केंद्रित होते देखीए, और परमेश्वर को धन्यवाद दीजीए की चंगाई का राजतिलक मुक्त हो रहा है और चंगाई मिल रही है। (बाई बुनियाद खण्ड III,VI-VII)

३) उस तरह की प्रार्थना करीये, जो आत्मा आप का नेतृत्व करती कि आप अनुरोध करें, आज्ञा या आधीकारिक घोषणा। यदि आत्मा द्वारा, आज्ञा की प्रार्थना दर्शित हो, तो पहले आज्ञा दीजीए दर्द को की वह यीशु के नाम में दूर हो, फिर अंदरूणी बीमारी को आज्ञा दीजीए की वह दूर हो(देखिये चंगाई की प्रार्थना का संक्षिप्त वर्णन)

४) उस व्यक्ति से पूछीए की उसे कैसा लग रहा है(पहले से अच्छा, उसी तरह या और खराब) और जैसे जैसे आप का नेतृत्व परमेश्वर करते हैं आप अंदर की रूकावटों को और शैतानी प्रभावों को निकालीये।(देखिए चंगाई की प्रार्थना का संक्षिप्त वर्णन और बाई बुनियाद खण्ड IX-XI).

५) अपने मस्तीश्क में उस व्यक्ती की जो चंगाई पा चुका है, एक विस्तारपूर्वक विश्वास का चित्र बनाईए और कहीए, "धन्यवाद है, परमेश्वर, की वही तरीके से यह होएंगा, क्योंकि आपकी ताकत इस व्यक्ति को चंगा कर रही है।"(बाई बुनि.III,V)

**अंश १ :** हर दिन अपनी प्रार्थना में परमेश्वर की अपस्थिनी को देखें और अपने आपको अभिषित्त होते देखो। परमेश्वर से कहीए की इस अभीषेक को आपके जिस्म के उस भाग पर ले जाए जिस को चंगाई पानी है, अभीषेक को उस जगाह पर जाते हुए देखीए। परमेश्वर की उपस्थिती को महसूस करना सीखीए जब तक आप उस अभीषेक को शरिर के उस हिस्से तक इच्छापूर्वक ले जा सको, जिसे अभीषित्त होना है। (१ कुरि १४:३२)

**अंश २:** जब चंगाई प्रर्थना कर रहे हो और परमेश्वर पर ध्यान लगाए हुए हो, उस से कहीए की वह आप के हाथों को अभिशित्त करे, उसे होता देखीए, और उसे दर्द में, बिमारी मे या रोग में बहते हुए देखीए।

**अंश ३:** अभीषेक को पढीए (परमेश्वर से कहीए की वह आप को प्रभेद दे की आप पहचान सकें की अभीषेक मिल रहा हे या रूक गया है) और परमेश्वर से यह पूछीए की अगला कार्य अगर होन है, तो वह क्या होगा।

**अंश ४:** सरवदा परमेश्वर का धन्यवाद दें, ताकी वह आप के विश्वास को और खोले ताकी आप परमेश्वर से और पा सकें।

## हम विश्वास करते है की लोग चंगाई पाते है, क्योंकी,

१. एक विश्वास की एक दिव्या वाचा, मसीह और उस की सलीब के द्वारा मनुष्यों के बीच में रहती है, (मरकुस १६:१६-१८) मती १०:७-८, लूक ९:१-२, मत्ती २८:१९-२०)

२. वाचा के द्वारा (निर्ग १५:२६, याकूब ५:१६)। गैर मीसीही चंगाई पाते हैं उस वाचा के प्रमाण के द्वारा जो परमेश्वर अपने विश्वासीयों से करता है -- नए नियम मे प्रचार की शक्ति का कार्य। मसीही द्विव्य सेहत से चलते हैं जब वे वाचा के न्यायों को मानते हैं। एक मसीहे के लिए, यदी वह वाचा के न्यायों को तोड़ता है या अपने जीवन में पाप करता है, तो वह बिमार होता है। यह चाद रखीए की चंगाई की वाचा में कुछ शर्तें है (निर्ग १५:२६; याकूब ५:१६ "एक दूसरे के सामने अपने अपने पापों को मान लों; और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिस से चंगा हो जाओ") इस मे हमें पवित्र आत्मा की अवश्यक्ता पडेगी की वह हमें बता सके की यह नियमभंग क्या है और इसे कैसे

ठीक किया जाऐ। हमें परमेश्वर से पूछना है, किन आवश्यक्तओ के द्वारा उस व्यक्ति को चंगाई मिल सकती है?"

उदहारण के लिए, उन्हें शैतान से छूटकारे की अवश्यक्ता है या पापों से पश्चताप, यीशु शरीर के खराब भाग को चंगा करना। अकसर यहसारी चीजे एक साथ बहती हैं जब हम चंगाई के लिए प्रार्थना करते हैं, और सही समय पर सही कदम से परमेश्वर की चंगाई का बहाव शुरू होता है ताकी उस व्यक्ति के जीवन मे प्रवेश करे। इस कारण हमें परमेश्वर की विशेष इच्छा को दूढँना है की हर व्यात्ति को किस तरहा चंगा करे और हर एक व्यक्तिगत किस्से में, आत्मा की इच्छो को मानना है।

## क्षमताशाली यंत्र कला से, वाचा मे दरार की चंगाई

उस बिमार व्यक्ति से कहीए की वह अपने मन की आँखों से देखे की, यीशु चंगाई की शक्ति और ज्योती डाल रहा है और वे यीशु से पूछें की क्या चंगाई के अभिषेक के बहाव मे उन तक पहुँचने में कुछ रूकावट है। उन से कहीए की वे स्वेच्छानूसार विचारो और चित्रों पर ध्यान लगाऐं और देखे की उन की ओर क्या लौट आता है। यदी जवाबे हाँ है और यीशु उन्हें रूकावट को दिखाता है तो, उन्हें यीशु से पूछना है की वे क्या करें की उस रूकावट को दूर कर सकें। उन से वह करने को कहीए (स्विकार करना, पश्चताप करना, वगैराह) फिर उन से कहीए की वे यीशु से पूछें की क्या कुछ और चीजें हैं जो वाचा में रूकावट बन रही है। उपर्युक्त तरीकों को तब तक दोहराईए जब एक परमेश्वर यह न कह दे की वाचा में रूकावट डालने वाली और कोई चीज़ नहीं है। फिर अगले क्रम मे जाईए।

## बिमारी को खोजने और जड़ से निकालने के लिए क्षमतशील यंत्र कला

बिमार व्यक्ति से कहीए की वह अपना ध्यान यीशु पर लगाऐ और उस से पूछे की इस बिमारी की जड़ क्या है। उन को निर्देश दीजीए की वे विचारो और चित्रों के बहाव पर ध्यान लगऐं और जो वो पा रहे है उस के बारे में बताऐं। फिर इस जड़ की वजाह को निकालने के लिए आवश्यक प्रार्थना कीजीए, दूसरी प्रार्थनाओं के साथ जो पवित्र आत्मा आप को करने के लिए कहती है।

उदहारण के लिए मैं और मेरी पत्नी एक विद्यार्थी प्रार्थना के अगुवा जिस का नाम फ्रेड़ है, प्रार्थना कर रहै थै। फ्रेड के बायीं कुल्हा मे एक दर्दनाक फोड़ा बढ़ रहा था। पहले मैंने फ्रेड़ से कहा की वह यीशु का चित्र बनाए की वह चंगाई की ज्योती फैला रहा है और यीशु से पूछें की क्या कोई रूकावट इस अभीषेक को रोक रहा था। फ्रेड़ ने कड़वाहट और स्वय दया को स्वीकार किया और कुछ लोगों को क्षमा किया जिन्हें यीशु उस के दिमाग में ला रहा था। फिर मैंने उस से कहा की वह यीशु से उसकी बिमारी की जड की वजाह पूछे। यीशु ने उसे बताया की उस ने अपने आप को शाप दिया, स्वय को समालोचन किया था, जब प्रचार के बाद उतने पापों की मुक्ती के परिणाम नहीं मिले जितनो की उम्मीद थी और प्रार्थना करी थी। मैंने

उसे समझाया की अपने आप को समालोचन करने का मतलब है की अपने आप को शाप देना। उस ने स्वंय को समालोचन करने की शक्ति को तोड़ा। फिर मैंने उस के कुल्हे पर उस के हाथ के ऊपर अपना हाथ रखा और हमने पवित्र आत्मा से कहा की वह अपना चंगाई का अभीषेक को और यीशु की चमक को उस के कुल्हे पर छोड़े। मैने अभीषेक को अपने हाथों पर अनुभव किया जो कुल्हे मे प्रवेश कर रहा था और परमेश्वर का धन्यवाद दिया की अभीषेक अंदर जा रहा था। मैंने उस फोड़े को आदेश दिया की वह उसे छोड़ दे। फिर २ मिनट कि प्रार्थना के बाद, मैंने प्रेड़ से पूछा की क्या उसे कोई फर्क पता चला। उस ने कहा "नही"।

फिर मैने उस से पूछा की क्या मैं अपना हाथ उस के कुल्हे पर रख सकता हुँ, जहाँ वह फोड़ा था। फिर मैने उसी तरहा प्रर्थाना की, परमेश्वर को उस अभीषेक के लीए धन्यवाद देते हुए, उस फोड़े को डाँटते हुए आदेश दिया की वह टूट कर छोड़ दे और दर्द को भी यीशु के नाम मे छोड़ देने के लिए कहा। इस समय मैनें शक्ति का धड़ाका अनुभव किया (सनसनाहट और गर्मी को बड़ते देखा) जो उस के कुल्हे तक जा पहुचा। तब प्रेड़ ने कहा की दर्द ने उसे छोड़ दिया और अनुभव किया की फोड़ा छोटा हो गाया है। हम प्रार्थना करते रहे और उस के कुलहे को अभीषेक में भीगोते रहे। यकीनन, मेरे हाथ का, प्रेड़ के कुल्हे से सीधे संम्पर्क ने, यीशु की चंगाई के अभीषेक को अधिक तीब्रता से छोड़ा।

## चंगाई के अभिषेक को मुक्त करने के अभ्यासिक सिद्धान्त

क्षमताशाली चंगाई प्रार्थना के तत्व है, देखना और यीशु के चलने के साथ बहना और परमेश्वर की ताकत का अनुभव करना। हम देखने और सुनने के द्वारा यीशु की चाल को अनुभव करते है। (यूहन्ना १४:१६-९; इब्रा १२:२; यूहन्ना १०:२७-२८) जैसा की उस ने अपने पिता के साथ किया (यूहन्ना ५:१९,२०,३०; यूहन्ना १५:५)। परमेश्वर की चंगाई की शाक्ति का बहाव जो आम्तिक दुनिया में ताकत का अनूभव करते हैं। हम ताकत को ज्योती के रूप मे देखते है। ताकत को हम कभी गर्मी सा अनुभव करते है और कभी झनझनाहट सा।

गयोंकी स्वाभाविक क्षेत्र में, ज्योती, गर्मी और झनझनाहट, बिजली के प्रत्यक्ष रूप हैं और क्योंकी हम दैवी बिजली की शाक्ति से वास्ता रख रहे है, दर्शन में देखना, यीशु से ज्योती की चमक का निकलना और शरीर में प्रवेश करना अकसर यह झनझनाहट और गर्मी का अनुभव करवाता है, और परमेश्वर की चंगाई की शक्ति से सचेत हो जाता है। आप परमेश्वर की चंगाई की ताकत को दूर्बल शरीर में ज्योती के रूप मे प्रवेश करते हूए देखने का अभ्यास कर सकते है। क्योंकी एक चित्र हजार शब्दो के बराबर है, परमेश्वर की चंगाई की ताकत (ज्योती) शरीर मे प्रवेश करते हुए का चित्र, एक हज़ार शब्दों के बराबर है जो यह कहना चाहगां है की परमेश्वर की चंगाई की ताकत शरीर मे प्रवेश कर रही है। बाईबल यह सिखाती है की बडा हुआ विश्वास (उप्तत्ती १५:६) एक सीधा नतीजा है एक दैवी चित्र को देखने का (उप्तत्ती १५:५)। मानसशास्त्र जानने वाले भी यह मानते है की एक चित्र, शब्दो के निसबत, लगभग ७ बार प्रभावित होता है (८३% हमारा सीखने का अनुभव देखने से आता है और ११% सुनने से)। तो हम ताकत और तीव्रता को बढ़ाते है परमेश्वर की ताकत को देखने से की

परमेश्वर की चंगाई की ज्योती सिंहासन के कमरे से चमकती हुई या यीशु से, या अपनी आत्मा से भी जो यीशु से जुड़े हूए हैं (१ कुरि ६:२०), हमें परमेश्वर की चंगाई की ताकत को देखते हुए आराम अनुभव करना है और इन सब तरीकों से अभीषेक का बहाव अनूभव करना है।

जब आप प्रार्थना करें, आप चंगाई के आदेश देंगे जैसे आप को आत्मा राह दिखायेगा, तो आत्मिक दुनिया की आत्मिक सच्चाईयों को देखीए और शरीर मे अनुभव करीए, गर्मि, झनझनाहट या बिजली को जो परमेश्वर की चंगाई के कार्यों के तत्व है। कई बार कई कारणों से आप न तो गर्मी, न झनझनाहट, न बिजली का अनुभव करेंगे परन्तु देखते रहीए परमेश्वर की चंगाई की ज्योती और शक्ति को उस व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करते हुए क्योंकी वह शरीर को चंगा करने का कार्य करता रहेगा। सब से महत्वपूर्ण काम है की आप अपना ध्यान यीशु पर रखें, जो की सब चंगाई का केंन्द्र है। आराम से इन सब को खोजीए और अनुभव करीए। इसे एक विधि न बनाएं, परन्तु इसे मन की आँखों से देखो और देखो की यीशु उन के साथ उपस्थित है, चंगाई की ताकत और ज्योती से चमकते हुए। पवित्र आत्मा जब आप को प्रार्थना में ले चलता है तो आप देखना, सुनना और स्पर्श करना जारी रखीए।

## इन को करने का अभ्यास करीए

देखीए की यीशु आप के साथ उपस्थित है और ज्योती उसमें से चमकते हुए निकलती और आप पर बहती है। अपनी सचेतता यीशु पर रखीए, जैसे आप उस की चंगाई की ज्योती को अपने अंदर प्रवेश करते देखते हैं, उस का चित्र अपने अंदर बना लीजीए और अपना मानसिक ध्यान उस पर केंद्रित करें जब आप निम्न अनुभव करें। उस की चंगाई की ताकत और ज्योती का बड़ा भाग दुर्बलता पर केंद्रित करें और वहाँ कुछ समय तक रखें - एक दैवी प्रकाश व गर्मी की चिकित्सा के रूप में। हो सकता है आप इस ज्योती के परिणाम स्वरूप उस जगह पर गर्मी या झनझनाहट अनुभव करें। इन आत्मिक सच्चाईयों को होता देख, चंगाई की तीव्रता बढ़ जानी चाहिए।

## जब आप इस अभीषेक को अनुभव करें तो अपनी दुर्बलता (जैसे कैंसर) से यह कहना मत भूलीए की वह आप के शरीर या जिस व्यक्ति के लिए प्रार्थना की जा रही है उस के शरीर को छोड़ कर जाए।

उदाहरण के लिए जब आप यीशु की चंगाई की ज्योती को उस कैंसर पर केंद्रित होते देखें (खास कर के उस वक्त जब आप गर्मी और ज्योती या झनझनाहट को शरीर से अभीषेक होते देखें) तो उस कैंसर से कहीए, इस प्रकार से की वह कोई घुस पैठी हो (वह अक्सर शैतान होता है)। या तो खामोशी से या शब्दों मे इस तरह से कहीए - "कैनसर यीशु की देह और खून की बात सुनो। मेरी देह को इसी वक्त छोड़ कर जाओ। उसके कोड़े के घावों के कारण मैने चंगाई पाई है (यशायाह ५३:५, पतरस २:२४) इस कारण यहाँ पर तुम्हारे लिए कोई जगह नही है। छोड़ दो, इसी वक्त यीशु के नाम में छोड़ दो।"

परमेश्वर का धन्यवाद देना शुरू करें की "अब परमेश्वर की चंगाई की ताकत चलने लगी है और कैन्सर को चंगा कर रही है। कुछ क्षणों तक एक चित्र बनाईए की यह सब हो रहा है (जैसे की ज्योती यीशु में से निकल रही है, उस क्षेत्र में प्रवेश कर रही है और उस दुर्बलता को कम कर रही है)। अपनी आँखों और अपने ध्यान को, यीशु पर और उस की ज्योती को आप के अन्दर प्रवेश करते हुए, केंद्रित कीजीए। यदी आप ध्यान यीशु पर से हटा कर अभीषेक पर और उस से उत्पन्न हुई गर्मी या झनझनाहट पर केंद्रित करेंगे तो चंगाई का अभीषेक कम हो जाएगा। अपनी आँखों को यीशु पर रखो। चंगाई यीशु से मिलती है। अपनी आँखें सोत्र पर रखीए।

फिर प्यार से अपने शरीर से वह कहीए जो आप चाहते हैं की वह करे (यीशु ने शरीर के भागों को बोल कर चंगाई दी जैसे: उदाहरण बैहरे कान मरकुस ७:३४; अंधी आँखें लूका १८:४२ में) उदाहरणके लिए शरीर तू अभी इसी वक्त यीशु के नाम में चंगा होजा। सामान्यता तुझ में वापस आ जाए। अच्छा अनुभव करो और यीशु के नाम में उस कार्य को करो जिस के लिए तुम बनाए गए थे। धन्यवाद हो परेश्वर। ऐसा ही हो। आमीन।"

अब शरीर के उस हिस्से का जो केंसर से चंगाई पाया है उस का एक चित्र बना कर कुछ क्षणों तक रखीए और देखीए की वह हिस्सा काम कर पा रहा है या अभी नही (कैन्सर के कारण)। प्रार्थना करीए: "मैं तेरा धन्यवाद देता हुँ प्रभु की इसी प्रकार से अब यह रहेगा क्योंकि यह तेरी इच्छा है।"

जब आप बिमारी या रोग को सम्बोधित करें तो अधीकार से करे, जैसे की आप किसी घुस पैठी से बात कर रहे हो और जैसे की यीशु की देह और खून ने आप को अधिकार दिया है की आप उस घुसपैठी को निकाल बाहर करें, आत्मा की ताकत से।

जब शरीर से बात करें तो चंगाई से प्यार से बात करें। शरीर से प्यार से बात करें, जब आप परमेश्वर के प्रेम से अपने शरीर को भरें। जितनी बारीकी से हो सके, अपने शरीर को प्यार से कहीए की वह उस तरह से काम करे। उदाहरण: "ह्रदय अब तुम आगे बढो और चंगा महसूस करो। सामान्य बन जाओ और खून को ७९ धड़कन हर मिनट के हिसाब से खून को शरीर में भेजो। तुम बस आगे बढ़ो और यीशु के नाम में अभी इसी वक्त चंगाई पाओ। मै तुम्हे पवित्र आत्मा की चंगाई की ताकत से अशीषित करता हुँ, यीशु की देह और खून के कारण 'धन्यवाद हो प्रभु आप की चंगाई की ताकत के लिए यीशु के नाम में। जैसा की लिखा है, वैसा ही होगा, आमीन।

दैवी अधिकार से, जो आप देख रहे है परमेस्वर की उपस्थिती में और उसे कहते हैं और आत्मा की ताकत से जो आप ज्योति के रूप में देखते हैं और अक्सर एक कंपकंपी सी गर्मी या झनझनाहट महसूस होती है, तो आप उस बिमारी और रोग की आत्मिक शक्ति से छुटकारा पा रहे है। परन्तु प्यार के साथ परमेश्वर की उपस्थिती में और आत्मा की ताकत के द्वारा आप शरीर को ठीक कर रहे हैं। हर चीज़ को होते देखीए, जब आप बोलना शुरू करें।

## चंगाई की प्रार्थना में नाटकीय उपलब्धी परमाणु हथियार संख्या एक (दुर्बलता की ज़ड को सम्बोधित करना) अभ्यास कीजिए

चंगाई की विधि में, आप नाटकीय उपलब्धी का अनुभव करेंगे, जब परमेश्वर शब्दों की समझ से बताएगा की दुर्बलता की जड़ क्या है और जड़ से उखाड़ देगा, इन ज्ञान के शब्दों और जानकारी के शब्दों को पाने के कई तरीके है। एक एकदम आसान सा यह है की बिमार को कहीए की वह प्रार्थना करे और बोले "हे पवित्र आत्मा मेरे शरीर में इस बिमारी की जड़ को बता" (उन का शरीर, उनकी याददाश्त और पवित्र आत्मा जो उन के अंदर है, वह जानते है की बिमारी की जड़ क्या है।) फिर उन से कहीए की वे शान्त हो जाएँ और परमेश्वर की आवाज़ और दर्शन की ओर ध्यान लगाएं (यानी स्वैच्छिक विचार और स्वैच्छिक चित्र)। एक विचार या एक चित्र उनको प्राप्त होगा। उन्हे उन विचारों और चित्रों के बारे में बोलना है। तब उन के साथ सारे लोग प्रार्थना करेंगे। निम्न दी गयी सूची में से जो भी प्रार्थना ठीक लगे उसे करीए:

१. उस व्यक्ति को माफ करना जो परमेश्वर दिखाता है।

२. उस पाप का पश्चाताप करना जो परमेश्वर ध्यान में लाता है।

३. पीढ़ी दर पीढ़ी के पापों और श्रापों को तोड़ना।

४. अधर्मी आत्मिक संबंधो को छोड़ना।

५. उल्टे विचारों को बदलना।

६. अनंदरूणी वादों को त्यागना।

७. शब्दों के शापो को छोडना।

८. यीशु के दर्शन को मस्तिश्क में पाकर अंदरूणी चंगाई पाना।

९. शैतानों को निकाल बाहर करना।

**तर्कशास्त्र:** याकूब ५:१४-१८, में कई कार्य है जिन को पूरा करना है, ताकी तुम चंगाई पाओ": याकूब ५:१६, "इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ।" यह बहुत

आवश्यक है की रूकावटें, जैसे की अस्वीकार किये गए पाप, को निकाल दिया जाऐ। वचन यह नही कहता की हम एक सूची बनाते जाऐ, परन्तु बिभिन्न सम्भावनाओं पर ध्यान दें जो आत्मा हमें दिखलाऐगी यदि हम कई तरीकों पर द्यान लगाऐं चंगाई पाने के लिए, तो खुलासे की कमी हो सकती है जो परमेश्वर चाहता है की किसी व्यक्ति को चंगाई देने से पहले करे। यह सच है की, आखिरकार, परमेश्वर चाहता है की हम चंगाई पाऐं और सेहतमद हो कर चलें फिरे। परन्तु परमेश्वर चाहता है की वह व्यक्ति को पूरी तरहा से चंगा करे - शरीर, प्राण और आत्मा - ना सिर्फ शारिरिक देह। इस परिणाम तक पहुँचने के लिए कई क्रम होंगो और इन में से किसी एक को छोड़ देने का नतीजा निराशा और पराजय होगा।

## परमाणु हथियार संख्या दो (एक के बजाए कई तरीकों से बताना)

**अश्यास :** जिस के लिए प्रार्थता हो रही है और जो प्रार्थना कर रहा है, दोनो को पवित्र आत्मा के उपहारों के प्रती शुल्ला होना होगा, खास तौर से ज्ञान के शब्दों, विद्या के शब्दों, आत्मओं के प्रभेद, विश्वास, चंगाई और चमत्कार जो आप मे स्वैच्धिक विचारों, स्वैच्छिक चित्रों और स्वौच्धिक स्पर्श के द्वारा आते हैं। इन चित्रो को पाना है और उन पर कार्य करना है। दो या तीन प्रार्थना अगुवों के साथ जो परमेश्वर की ओर खुले है, मिलकर, उन्हें उपर्थुक्त कोई भी क्रम बता कर, माध्यम से जिस से रूकावट निकाला जा सकता है और वे जो पा रहे है, इन सब को बाँटने से दैवी दर्शन पाने का क्षेत्र सामान्य रूप से बडे खुले पन से पा सकते है और बड़ी जल्दी दुर्बलता का चोगा फाढ़ कर उस व्यक्ति की सेहत को वापस लौटाया जा सकता है।

**तर्कशास्त्र:** याकूब ५:१४-१८ भी समूह सेवा के वारे मे कहता है (प्राचीनो) ताकी जो एक को पता न चले तो दूसरे को पता चल जाए। इस क्रम को करने मे कई दिन या हफते नही लगते या घंटे भी नही। परन्तु हमारी पारम्पारिक 'चंगाई की धारा' हमा पर यह बोज डालती है की यह जल्दी हो, ताकी हम दूसरी ओर मुड़ सकें। चंगाई की धारा में कुछ पवित्रता नही है। ४०वे और ५०वे दशक से पहले इन के बारें में सुना भी नहीं था और यह उस युग के प्रचारको का एक तत्व था। और उन में से भी हर किसी ने इस का प्रयोग नही किया। चंगाई के कमरों का इस्तेमाल करना और २-५ व्यक्तियों का चंगाई का समूह बनाना ज्यादा फायोदेमन्द होता है, क्योंकी यह ज्यादा आराम देह है और धीमी गती से चलता है, जिस के कारण हर क्षेत्र पर पूरा ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। अकसर चंगाई के कमरे में उस व्यक्ति को करीबन एक घण्टें के अवकाश में उपदेश दिया जाता है जिस से चंगाई के अभीषेक के सिध्दान्तों को प्राप्त करने में अच्छा समय मिल जाता है। जैसे जैसे किसी को अनुभव होते जाता है, वैसे वैसे वह चंगाई के अभिषेक को जल्दी प्राप्त कर लेता है।

## परमाणु हथियार संख्या तीन (अभीषेक को, कईयों के द्वारा छोड़ना, बजाये एक के।)

**अभ्यास:** आप बिमार व्यक्ति को आलौकिक गर्मी की चिकित्सा इस तरहा से दे सकते है। २-५ लोगों को कहीए की वे अपने हाथा (दोने हाथ - जिस से एक बिजली का स्रोत पूरा हो जाए) उस बिमार व्यक्ति पर १०-२० मिनट तक रखिए ताकी परमेश्वर की शक्ति उस बिमार व्यक्ति तक पहुँचे। हर किसी ने परमेश्वर से यह पूछना है की वह अपना हाथ कहाँ रखें सामान्य रूप से दुर्बलात के ऊपर और फिर उस दुर्बलता के ठीक दूसरी तरफ। उदहारण के लिए, अगर मैं (मार्क) प्रार्थना कर रहा था कमजोंर हदय के लिए, में अपना दाहिना हाथ, दिल पर रखूँगा और बायाँ हाथ ऊपरी पीठ पर, और मैं महसूस करूँगा की अलौकिक स्रोत मेरे दाहिने हाथसे होकर उस शरीर मे प्रवेश करता है और फिर मेरे बाये हाथ के द्वारा वापस आ जाता है। यदि मैं किसी औरत के लिए प्रार्थना कर रहा हुँ तो मैं उस से कहुँगा की पहुले वह अपना हाथ अपने दिल पर रखे और फिर मैं अपना हाथ उस के हाथ पर रखूँगा इस तरहा से चंगाई का क्रम जल्द हो जाता है। जब भी मैंने समूह के साथ २० मिनट हाथ रख कर चंगाई का क्रम किया, हम ने लाजवाब नतीजे देखे, दोनों में जिस के लिए प्रार्थना हो रही है और जो लोग प्रार्थना कर रहे है।

**तर्कशास्त्र:** यीशु ने भी अपने चलों को दो दो कर के प्रचार के लिए भेजा (लुका १०:१)। दो या तीन प्रार्थना अगुवों का बिमार व्यक्ति पर हाथ रख कर प्रार्थना करने से यह लाभ होता है की, मिलकर वे परमेश्वर की ताकत पाने का बड़ा क्षेत्र बन जाते हैं जिस से वह उस बिमार व्यक्ति के अंदर प्रवेस करता है। वे चंगाई की शक्ति के प्रवेश को बढ़ा सकते हैं और यीशु मसीह का एक खास वादा है की जहाँ दो या तीन मेरे नाम से एकत्रित होते हैं, वहाँ मैं उन के बीच में होता हुँ (मत्ती १८:२०)।

## परमाणु हथियार संख्या चार ( यीशु को सुनना जो चंगाई की ज्योति फैला रहा है)

**अभ्यास:** जब आप यीशु को देखते है, देखीये की वह अपनी चंगाई की ताकत और ज्योती उस व्यक्ति पर उडेंल रहा है, आप उस से पूछ सकते है की वह आप को बताए की असल में चंगाई किस चीज़ की होनी है और वह उसे कैसे चंगा करना चाहता है। बहते हुए विचारों व चित्रो पर ध्यान दीजीए और उस तरहा कार्य करीए जैसा की वह आप को करने के लिए कह रहा है।

**तर्कशास्त्र :** जो सिद्धान्त आप इस्तेमाल कर रहे हैं उस के द्वारा आप आत्मिक दुनिया में, दोनो देख व सुन रहे है। देखने और सुनने से विश्वास बढ़ता है और बडी उपलब्दीयाँ प्राप्त होती है। अब्राहम, जो की विश्वास का पिता है, परमेश्वर के आदेशों को सुना (उत्पती १२:१,२) और उस के लिए जो परमेश्वर का दर्शन था

उसे देखा (उत्पती १५:५) और नतीजा विश्वास था (उत्पती १५:६)। बड़ा विश्वास बड़ी चीज़ो को पूरा कराता है।

**आखिर में:** यदी कोई चंगाई नहीं पाता है तो उस का कारण इस पूरे क्रम को ठीक से पूरा न करना हो सकता है, खास तौर से जब विश्वासीयों के लिए प्रार्थना कर रहें हों, तब। परमेश्वर पापी को इस तरहा फँसा हुआ देखता है की वे अपने आप को चंगाई के लिए पूर्ण रूप से नहीं तैयार कर पाते है, तो वह उन को किसी भी तरीके से चंगाई देता है उन्हें अपना प्यार व ताकत बताने के लिए। दूसरी ओर परमेश्वर कभी कबार हर कीसी को जो उस घर मे हैं, चाहे विश्वासी हो या नहीं, वह चंगा करता है, जब वह अपनी आलौकिक ताकत और महिमा में आता है। पक्के विश्वास के सिद्धात हैं, परन्तु परमेश्वर फिर भी परमेश्वर है अनेक भिन्नता का, उस के पास अंगिनत बूद्धि है हर स्थिती की और पता है की उसे क्या करना चाहीए।

## इस्तेमाल करने के अभ्यास

१. अपने शब्दो में, पवित्र शास्त्र की मदद से बताईए, क्यों परमेश्वर की शक्ति को ज्योती के रुप मे देखा जा सकता है और आग की तरहा महसुस होता है और शक्ति (झनझनाहट) क्यों लगती है। देखने और स्पर्श करने की बहुमूल्यता, केवल जानकारी बिना देखे और स्पर्श करने के विरुध में कितनी है?

२. परमेश्वर की शक्ति को देखने का अभ्यास करो, जो उस में चमक रहा है और मसीह पर से तुम पर और उन सब पर जिन को आप उपदेश सुनाते है। पहली २०-३० बारो के अपने अनुभवों को लिखिए। इन का अभयास आप अपने प्रर्थना समय पर कर सकते हैं जब आप उस के करीब आते हैं और उस से कहीए की वह आप को इन वचनों पर ध्यान लगवाए। निर्गमन २४:१७, ४०:३८, यहेजकेल १:२६-२७, दानियल ७:९-१०, जकर्याह २:५, लूका ११:३४, प्रेरित १२:७, २ कुरि ३:१८, कुल १:२९, याकूब १:१७, प्रकाशित १:१२-१६। आप जो देखते हैं उसे लिखीए। इस को उस समय तक करते रहीए, जब ता आप इस में आराम न महसूस करें।

३. जब आप परमेश्वर को उस की चमकती महीमा, शक्ति की ज्योती में देखने का अभयास करते हैं, आप पवित्र आत्मा से कहीए की वह अपनी चंगाई की शक्ति आप के शरीर में प्रवश करे, खास तौर से किसी दूर्बल क्षेत्र में। परमेश्वर की ज्योती को उस क्षेत्र में घुस्ते देखीए। उस की ज्योती और शक्ति को उस जगाह पर थोड़ी देर रोकीऐ, ताकी दैवी गर्मी चिकित्साह मिल सके। ध्यान दीजीए की क्या आप कुछ गर्मी या झनझनाहट महसूस कर रहे हैं जब उस कीशक्ति आप में प्रवेश कर रही हो। जो हो रहा है उस

को लिख लीजीए और किसी भी प्रकार की चंगाई को या दर्द की कमी जो बाद में अनुभव होती है उसे भी लिख लीजीए। इसे तब तक करते जाईए जब तक आप आराम का अनुभव न कर लो और इसे आसानी से और जल्दी से कर सको।

४. अभ्यास करते समय परमेश्वर से ज्ञान का शब्द, बुद्धि का शब्द और प्रर्थना में आत्मा की पहचान करवाने को कहीए चाहे चंगाई आप के लिए हो या किसी और के लिए। तब, विश्वास करीए की वह आप से बात करेगा, ध्यान लगाईए स्वैच्छिक विचारों, चित्रों और अनुभवो पर और जो आप पा रहे हैं उसे बाँटीए और उस पर कार्य करीए। जो हो रहा है उस को लिखीए। यदी कोई साक्षीयाँ हों की इन क्रमो के द्वारा कैसे रूकावटें दूर हुईं और परमेश्वर की चंगाई की शक्ति मुक्त होती है, उसे लिखीए।

५. ५-१० प्रार्थना सभाऐं पूरी करीए जहाँ दो या तीन लोग बिमार व्यक्ति को चंगाई की प्रार्थना में भिगो दें, जब आप एक समय मे १५-२० मिनट तक अपने हाथ उस पर रखें समूह का हर व्यक्ति अपना ध्यान परमेश्वर पर रखें और उस की चंगाई की शक्ति को उन के द्वारा बिमार व्यक्ति में जाते देखें। हर व्यक्ति को अपने आप को खुल्ला रखना है ताकी परमेश्वर का दैवी दर्शन पा सकें और रूकावटों को निकाल सकें और एक बड़े चंगाई के बहाव के लिए अपने दर्वाजों को खोल दें। इन चीजो को आपस में बाँटना है और प्रर्थना करना है और उन पर कार्य करना है। इन प्रार्थना के अनुभवों को लिखीए।

६. दैवी चंगाई के बारे में दैवी प्रेरणा पाईए निम्न दीये गये वचनों को जो पवित्र शास्त्र से लिए गए है, उन के सही अनुवाद कर लिख लीजीए और परमेश्वर से कहीए की उन के माध्यम से चंगाई के बारे में वह जो भी दिखाना चाहता है उसे दिखए। वह जो कहता है उसे लिख लिजीए। कमसे कम इन में से १० वचनों को याद कर लीजीए, हो सके तो २०-३०।

परमेश्वर के वचन को चिकित्सा के रूप में लीचीए, इन वचनों को बोल कर और इन वचनों को अपने ऊपर मान कर, एक नियमानुसार (नीतिवचन ४:२०-२२)। इसे दिन मे तीन बार करीए, यदी आप बिमार हों तो, और यदी ठीक हों तो दिन में एक बार ताकी आप सेहतमन्द रह सकें। २-३ वचनों को एक बार में कहीए। क्योंकी एक खुशनुमा मन, चिकित्सा के बराबर है, इन शब्दो को अपने आप पर खुशी से बोलीए (नीती १७:२२)। पवित्र आत्मा आप को अपने पाप स्वीकार करने में अगुवाई करे।

उत्पति २०:१७, निर्गमन १५:२६, २इतिहास ७:१४, भजन संहिता १०३:२-३, १०७:२०, १४७:३, नीतिवचन ३:७-८, ४:२०-२२; १६:२४, यशायाह 53:5; 58:6,8; यिर्मयाह 17:14; मलाकी 4:2; मत्ती 4:23-24; 8:7-8,13; 8:16; 9:28-29; 9:35; 10:1; 10:8; 12:15; 12:22; 14:14; 15:28; 15:30; 18:18-20; 19:2; 21:14; 21:22; मरकुस 1:34; 3:10; 5:29,34; 6:13; 9:23; 11:22-25; 16:17-18; लूका 1:37; 4:40; 5:15; 5:17; 6:17-19; 7:7,10; 8:43-44; 9:1-2,6; 9:11;

9:42; 10:9; 17:15-16; 22:15-51; प्रेरित 3:16; 4:10; 4:30; 5:14-16; 8:7; 9:34; 10:38; 28:8-9; १कुरि 12:7,9; 12:28; याकूब 5:14-16; १ पतरस 2:24; १ यूहन्ना 5:14-15; ३ यूहन्ना २; प्रकाशित 22:1-2।

७. निम्न दी गयी साक्षी की कार्य परची को पूर्ण रूप से भरीए जब आप ३० लोगों के लिए प्रार्थना कर चुके हों। नतीजों का सूचीपत्र बनाईए और परमेश्वर से पूछीए की वह आप पर क्या जाहिर करना चाहता है अपनी चंगाई की ताकत के बारे में और वे तरीके जिन से आप के द्वारा उस की तीवर्ता को बढ़ा सके। इन पूरे कीए गए प्रश्नों को और परमेश्वर ने जो आप को दर्शाया है उस के सारांश के साथ, डॉ गौरी ग्रेग को या डा. मार्क विर्कलर को भेजीए ताकी वे इस का सूचीपत्र बना कर इस पत्रिका के बड़े अनुवाद में छापें।

## दैवी चंगाई का औज़ार का बक्सा (याकूब ५:१४-१८)

१. रूकावगें को हटाने के लिए, एक दूसरे के सामने अपने पापों को स्वीकार करो (याकूब ५:१४-१८): समूह का हर व्यक्ति (प्रार्थना करने वाले अगुवे और व्यक्ति जिस के लिए प्रार्थना हो रही है), अपने मन की आँखों को यीशु पर केंद्रित करें। अपनी आँखों को यीशु पर रखीए और उस से पूछीए की क्या कोई रूकावट है जो उस के चंगाई की शक्ति के बहाव को आप तक आने से रोक रही है। उस के जवाब को पाने के लिए अपना ध्यान रहे की आप एक स्वस्थ जीवन चर्या व्यतीत कर रहे हैं, जिस में पौशटिक आहार, व्यायाम, उपवास/ सफाई और तनाव रहित जीवन भी शामिल है। जो आप पा रहे है उस के अनुसार अपने पापो की क्षमा माँगीए। अपने पापों की क्षमा पल दर पल माँगना सीखीए ताकी आप परमेश्वर के सामने शुद्दता से खड़े रहें। यह समूह की नम्रता और पवित्रता परमेश्वर की ताकत को छोड़ती है।

२. चंगाई की बुनियाद, परमेश्वर की उपस्थिती में जाना है। डॉ.विर्कलर के एक साथी से परमेश्वर ने कहा "पहले तुम मेरी उपस्थिती का अभ्यास करो, तब हम बात करेंगे। मेरी उपस्थिती मेरे वचन से ज्यादा मूख्य है। चंगाई मेरी उपस्थिती से मिलती है।" अपनी आत्मा में मसीह की आराधना करते हुए मसीह-सचेत हो जाईए। यीशु को परमेश्वर की रौशनी में रूपान्तर होते देखीए (मत्ती १७:१-८)। माँगीए। देखीए और उस की चंगाई की शक्ति को छोडीए। जिसे ज्योती के रूप में देखा जा सकता है और गर्मी और झनझनाहट को महसूस किया जा सकता है। इस की उपस्थिती से उस की चंगाई की शक्ति छोडी जाती है।

## ३. दुर्बलग की जड़ को ढूँढीए और उस के कारण से व्यवहरा करीए:

बिमार व्यक्ति से कहीए की वह प्रार्थना करे,"पवित्र आत्मा, कृप्या मुझे उस बिमारी का मूल कारण दिखाईए"। (उस का शरीर, उस की यादाश्त और पवित्र आत्मा जो उसे के अंदर है वह जानते हैं की बिमारी का मूल कारण क्या है)। फिर उसे आदेश दीजीए की वह अपने आप को शान्त करे और परमेश्वर की आवाज़ और दर्शन की ओर ध्यान लगाए (यानी स्वैच्छिक विचार और चित्र) और आप के साथ वह सब बाते जो उस तक पहुँचती हैं, उचित प्रार्थता करें।

## ४. मानीए की चंगाई की प्रार्थना के तीन भाग हैं (दर्द दूर करना, शैतानो को निकाल बाहर करना, शरीर के अंगों को चंगा करना)

दर्द से कहीए की वह हट जाए। यह आसान है, और विश्वस को मज़बूत करता है यदि वह व्यक्ति जिस के लिए प्रार्थना की जा रही है वह यह कहे की कुछ दर्द कम हुआ है और उस व्यक्ति से इस रूकावट को दूर करता है।

मज़बूती से आदेश दीजीए की दर्द के शैतान दूर हों। यह मानीए की हर स्थिती में शैतान है। उन स्थितीयों में जहाँ यीशु ने चंगाई दी थी वहाँ शैतान की उपस्थिती थी, जैसे की यदी मरकुस १:३९ का सारांश, मत्ती ४:२३ के सारांश के बीच कीया जाए।

मरकुस १:३९, "अतः वह सारे गलील में उनके आराधनालयों में जा जाकर प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता रहा।"

मत्ती ४:२३, "जब वह नाव पर चढा, तो उसके चेले उसके पीछे हो लिए।"

दुर्बल शरीर के भागों से प्यार से बात करीए और खास तोर से उस दुर्बल भाग से जिसे ठीक करना है।

५ दैवी दर्शन को प्राप्त करीए जब आप यीशु को देखें और उस की चंगाई की शक्ति और ज्योति को उस व्यक्ति के अंदर जाते देखें तो उस से कहीए की वह आप को वह हिस्सा बताए जिसे चंगा करना है और वह किस तरहा से उसे चंगा करना चाहता है। उस का जवाब स्वैच्छिक विचारों और चित्रों पर ध्यान लगा कर पाईए और वह जो आप को बता रहा है उस के अनुसार चलीए। उस प्रार्थना को अपनाईए जो पवित्र आत्मा आप को बताता है - निवेदन, आदेश, या घोषणा।

६. बडे दैवी दर्शन के लीए समूह को तैयार कर लीजीए: दो या तिन प्रार्थना अगुवे जो परमेश्वर की ओर खुले हुए है और परमेश्वर ने उन्हें रूकावट को हटाने का रास्ता बताया है और वे जो भी वे पा रहे हैं, उसे समूह के साथ बाँट रहे हैं और जो फिर उस पर कार्य करते है, यह दैवी दर्शन की प्राप्ती का क्षेत्र बडा देगा और बहुत जल्दी

दूर्बलता के चोगे को फाड़ कर, उस व्यक्ति की सेहत को वापस लौटाऐगा।

७. शक्तिशालि प्रार्थनाऐं जो शैतान को दूर करती है: व्यक्ति जिस के लिए प्रार्थना की जा रही है और प्रार्थना करने वाले, बहाव की ओर ध्यान लगाए रखते हैं कार्य उसी प्रकार करते हैं जैसा उन्हें बताया जाता है। वे उन तरीकों से प्रार्थना करते हैं।

१. उस व्यक्ति को माफ करना जो परमेश्वर दिखाता है।

२. उस पाप का पश्चाताप करना जो परमेश्वर ध्यान में लाता है।

३. पीढ़ी दर पीढ़ी के पापों और श्रापों को तोड़ना।

४. अधर्मी आत्मिक संबंधो को छोड़ना।

५ उल्टे विचारों को बदलना।

६ अनंदरूणी वादों को त्यागना।

७ शब्दों के शापो को छोडना।

८ यीशु के दर्शन को मस्तिश्क में पाकर अंदरूणी चंगाई पाना।

९ शैतानों को निकाल बाहर करना।

८. तेल से अभिषेक कीजीए: उस तेल का इस्तेमाल कीजीए जीस पर प्रार्थन की गई हो, ताकी दैवी चंगाई की शक्ति प्रगट हो।

९. देखने से चंगाई की शक्ति का बहाव तीव्र होना: पूछीए और देखीए यीशु की दैवी चंगाई ज्योती और शक्ति जो चमकती हुई प्रवेश करती है उस व्यक्ति पर और उस के अन्दर। देखीए की वह उस दुर्बलता की ओर जाए और परमेश्वर का धन्यवाद दीजीए की अभीषेक छोड़ा जा रहा है और शरीर में प्रवेश कर रहा है।

१०. दैवी गर्माई चिकित्सा दीजीए: २-५ जन के समूह से कहीए की वे अपने दोनों हाथ (ताकी बिजली का स्रोत पूरा हो) उस बिमार व्यक्ति पर रखे १०-२० मिनट के लिए ताकी परमेश्वर की ज्योती/ ताकत उस मे प्रवेश करे।

११. नतीजा बराबर से मिलता रहे: उस व्यक्ति से पूछीए की उसे कैसे लग रहा है (अच्छा, बैसा ही, और खराब) और जैसा आवश्यक हो उस तरहा करें।

१२. देखीए की वह पूरा हो: अपने मस्तिशक में उस व्यक्ति का विश्वस चित्र रखीए जो पूरी रीती से चंगाई पा चुक हो और कहीए: "धन्यवाद हो प्रभु। यही तरीके से यह होने वाला है क्योंकी तेरी शक्ति इस व्यक्ति को चंगा कर रही है।"

## हाथों को खास तरीके से रखने के तरीके

चार्लस और फांस हनटर निम्न दीए गए तरीके बताते है दूर्बलता को छूने के और परमेश्वर के चंगाई की ताकत और ज्योती को उस क्षेत्र में पाने के। यह ऐसे लगेगा जैसे यह दैवी ढाँचा को ठीक करना है, पीठ को सीधा करना, गर्दन और कुलहे को भी और नसों को सामान्य रूप से काम करने देना। इस तरहा परमेश्वर की चंगाई तीव्रता से शरीर में प्रवेश करेगी।

## गर्दन ठीक करना

इस का इस्तेमाल ऊपरी क्षेत्र की दूर्बलता को ठीक करने के लिए किया जा सकता है।

१. उस व्यक्ति के सामने खड़े हो जाईए और अपने हाथों को नम्रता से उस की गर्दन पर रखीए, आपकी ऊँगलीया पीछे रीड की हड़ी के ऊपरी भाग पर हों, आप की हथेली गर्दन पर एक तरफ हो (धमनी पर) और आप का अंगठा जबड़े के जोड़ पर।

२. उस का चेहरा धीरे से पहले बायी और फिर दाहिनी ओर मोडीए, फिर पीछे और आगे, और साथ साथ आदेश देते जाईए, माँस पेशीयों को, अस्थि बन्धक तन्तु, पूट्ठा और रीढ़ की हड़डी को की वे अपनी सही जगाह पर लौट जाऐ।

३. परमेश्वर की चगाई की शक्ति/ज्योती को देखीए की वह कैसे गर्दन और रीढ़ मे जाती है और सारी हड़डीयों, माँस पशीयों, अस्थि- बन्धक तन्तु और पुट्ठे को कैसे सही जगाह पर लाती है।

## वस्ति प्रदेश के ठीक करना

नीचे की दूर्बलताओं के लिए इस तरीके का प्रयोग करें।

१. कुल्हे की ऊपर की हड्डी पर अपना हाथ रखें और आदेश दें की वस्ति प्रदेश सही जगाह पर लौट जाऐ और बाकी के सोर अग भी अपनी जगाह चले चाएं।

२. परमेश्वर की शक्ति/ज्योती को चंगा करते देखीए जब वह वस्ती प्रदेश के क्षेत्र में प्रवेश कर उसे ठीक करती है और हड्डीयों, माँस पेशीयों, पुट्ठों और अंगों को वापस ठीक करती है।

**टिप्पणी :** यदी किसी चीज़ की आवश्यक्ता नहीं है, तो कुछ नही होगा। कोई नुकसान भी नहीं होगा।

## पूर्णरूप से चंगाई पाना: ८०% प्रार्थनाओं में इस का इस्तेमाल होता है।

१. पूर्णरूप से का मतलब है की उस में गर्दन, वस्ति प्रदेश, दोनों के साथ हाथ और पैर ना बढन भी शामिल हैं।

२. हाथों को बढ़ाने के लिए, उस व्यक्ति से कहीए की वह अपने दोनों हाथों को अपनी दोनो तरफ फैला कर सीधा रखे और फिर उन्हे इस तरहा सामने की ओर झुकाए की दोनो हथेलीयाँ और ऊँगलीयाँ आपस में मिलें। देखीए की कौन सा हाथ लंम्बा है, फिर दूसरे हाथ के लिए प्रार्थना करीए की वह लंम्बा हो जाए और ऐसा करते में उस के दोनों हाथों को अपने हाथो पर रखीए (उस का बायाँ हाथ आप के दाहीने हाथ पर और उस का दाहिना हाथ आप के बायें हाथ पर)

३. पैरों को लंम्बा करने के लिए, इस व्यक्ति को एक सीधी टेके वाली कुर्सी पर बैठाईए। उस के पैरों को सीधे सामने करीए। देखीए की कौन सा पैर लंम्बा है, उस की ऐड़ीयों को अपनी हथेली पर रखीए और छोटे पैर के लिए प्रर्थना करीए की वह लंम्बा हो जाए।

४. परमेश्वर की शक्ति/ ज्योती को उस के हाथों, कंधों, पैरों और कुल्हों मे जाते देखीए हर माँस पेशी और हड्डी, जोड़ और आस्थि बन्घक तन्तु को बापस अपनी जगाह पर लौटते हुए देखीए।

५. आप वापस लौट कर गर्दन की चंगाई और वस्ती प्रदेश की चंगाई को हाथ और पैर की लंम्बाई को पूरा कर के दोहाराईए।

## समूह अभ्यास प्रयोग

गर्दन के लिए

* आप जितनी दूर हो सकता है अपनी गर्दन को दोनो तरफ धीरे से तीन (३) बार घुमाईए और फिर ऊपर नीचे तीन (३) बार करीए।

* आपने सर के पीछे अपने दोनो हाथ रख लीजीए और अपनी रीढ की हड्डी पर ऊँगलीयाँ उस वक्त तक फेरीए जब तक खोपडी के तले वे आराम नहीं पाती। यह वही जगाह है जहाँ आप गर्दन की चंगाई पाने के लिए अपनी ऊँगलीयाँ रखना चाहते हैं।

* जो करना चाहते हैं वे खडे हो जाऐं। दूसरे स्वंय सेवक जो खड़ा हुआ है उसके सामने खड़े हो जाऐं, और अपना हाथ उस पर नर्मी से रखीए गर्दन को चंगा करने के क्रम से.

* हर व्यक्ति अपने आप को शान्त करे, परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करे, और पवित्र आत्मा की चंगाई की शक्ति को निमंत्रित करे की वह उपस्थित हो। परमेश्वर की ज्योती को देखीए की वह आप के हाथ को छोड़ कर गर्दन के क्षेत्र में प्रवेश करती है। जब आप इस शक्ति को देखते और महसूस करते हैं तो, धीरे से उन के गालों पर अपनी हथेली से दवाव डालीए।

* स्वंय सेवक फिर नम्रंता से और धीरे से अपने सर को एक तरफ से दूसरे तरफ तीन बार मोड़ीए, और फिर ऊपर नीचे तीन बार, यह करते में आप माँस पेशीयों, अस्ती बन्धक तन्तु, पुट्ठों और रीढ की हड्डी से कहीए की वे सही स्थान पर लौट जाऐं और आप दोनों, परमेश्वर की शक्ति व ज्योती व गर्मी को देखीए की वह गर्दन, कंधों और सर में प्रवेश करती हैं।

* अपने हाथों को उसी स्थिती में तब तक रखीए जब तक परमेश्वर की शक्ति/ज्योती/गर्मी बहना बंद न हो जाए।

## वस्ति प्रदेश के लिए

* किसी स्वंय सेवक के कुल्हे की हड्डी पर अपना हाथ रखीए (उस के सामने खड़े हो कर)।

* दोनों को अपने आप को शान्त करना है, परमेश्वर पर ध्यान लगाईए, और पवित्र आत्मा की चंगाई की शक्ति को निमंत्रित करीए की वह उपस्थित हो। परमेश्वर की ज्योती को देखीए की वह आप के हाथों को छोड़ कर, हड्डीं में अस्ति बन्धक तन्तु में, और अंगों

में और निचले क्षेत्र में प्रवेश करती है।

* आदेश दीजीए की वस्ति प्रदेश ठीक स्थिती पर आ जाए और बाकी सरे अंग भी अपनी जगाहों पर आ जाऐं।

* आप दोनों ने परमेश्वर की चंगाई की शक्ति/ज्योति/गर्मी को वास्ति प्रदेश के पूरे क्षेत्र में प्रवेश करते देख है, वह कैसे हड्डीयो को, माँसपेशीयों को, पूट्ठो और आंगों को उन की स्थिती पर पहुँचाती है।

* अपने हाथों को कुल्हों पर तब तक रहने दें जब तक आप परमेश्वर की शक्ति का बहना बन्द न हो।

## पूर्ण रूप से चंगाई के लिए

एक स्वंय सेवक की मद्द से, हाथों और पैरों को लंम्बा करीए, फिर गर्दन को, फिर वस्ति प्रदेश को चंगा करीए। फिर दोबारा लौट कर हाथों और पैरों को लंम्बा करने का अभ्यास कीजीए। देखीए और स्पर्श करीए परमेश्वर की शक्ति/ज्योति/गर्मी को (हर प्रर्थाना में) आपके शरीर में प्रवेश करते हुए।

## दैवी चंगाई साक्षी कार्य पत्री

**उपलब्द है डब्लयू, सीडब्लयू जीमिनिस्ट्रीज़, ओ आर जी/ हीलिग, कार्य पत्री।**

**भरे हुए फार्मा को भेजीए: हीलिंग @सी डब्लयू जी मिनिस्ट्रीज़, ओ आर जी।**

रीपोर्ट.........................................व्दारा तैयार की गई।
ई मेल का पता छापीए.........................
चंगाई पाने वाले का नाम...........................
शैहर/ प्रदेश.......................................
उसका इ.मेल पत्ता.....................
उस का फोन नं.......................................
दुर्बलता जिस के लिए प्रार्थना की गई...............
दिनांक.......................
किन लोगों ने प्रार्थना की...................................
.......................................................
प्रार्थना में कितना समय बिताया...................................
इस से पहले कितनी बार प्रार्थना कर चुके थे.....................
दर्द में कमी.......%;
समय लिया गया........................................;
दर्द में और कमी........................%;
समय लिया गया...................
दुर्बलता चंगा हुई...........%;
समय लिया गया....................
दूर्बलता और चंगा की गई........%;
समय लिया गया..........
जाँचने के औज़ार उपयोग किये गए:
......बार पापों को स्वीकारा
......बार परमेश्वर के समक्ष गए
......मूल कारण के दैवी दर्शन प्राप्त हुए
......दर्द को दूर होने का आदेश दिया
......शैतानों को दूर होने को कहा।
......खास शरीर के भागों से बात कर उन्हें चंगा होने को कहा
......बड़े दैवीदर्शन को पाने के लिए समूह बनाया।
......तेल का इस्तेमाल
......उन को माँफ किया जो मेरे मास्तिशक में आए
......खानदानी पापों और शापों को तोड़ा
......अधर्मी बंधनों को तोड़ा
......उल्टे विश्वासों को बदला
......अंदरूणी वादों को ना किया

......शब्दों के शापों को तोड़ा
......अंदरूणी चंगाई
......पापों से मुक्ति
......ज्योती को खास शरीर के भागों मे प्रवेश होते देखा
......गर्मी महसुस की
......शक्ति/झन झना हट मेहसूस किया
......२-५ व्यक्तियों ने १५ मिनट तक गर्मी की चिकित्सा दी
......चंगाई पाने वाले व्यक्ति से लगातार जवाब मिलता रहा
......मन की आँखों से चेगाई को पूरा होते देखा
...... चंगाई पूरा करने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद दें।

शैतानों के नाम जो निकाले गए:___________

लिखित सारांशः जो दैवी दर्शन प्रार्थना में पाया उस का सारांश लिखीए और उस पर कार्य करने का नतीजा। यदी दैवी दर्शन बिमार व्यक्ति ने पाया तो दैवी दर्शन के सामने उस का नाम लिखीए। चंगाई की सेवा के बारे में लिखीए और चिकित्साई जाँच ने उसे माना। चिकित्साई जाँच करवाने के लिए हमें वह दिन और समय और दूर्बलता सूचित कीजीए जिस वक्त चंगाई पाई। धन्यावाद।

**चंगाई के उद्धहारण और साक्षीयाँ**

**गैरी, स्परिंग २००३ :** मैने जाँन विम्बलर और द वाईनयार्ड और फादर माईक फलिन और डाँ.चार्लस क्राफट से यीशु को देखना और दूसरों की चंगाई के लिए प्रार्थना करना और रूकावटों के बारे में बताना (क्षमा न करना, खानदानी पाप, शैतान, परेशानी, अन्दरूणी वाद वगैराह) इस तरहा मैंने सीखा की बिमारों को चंगाई कैसे मिलती है। १० साल तक यह हमारे लिए ऐसे ही काम करते रहा। मुझे, हालाँकी यह ऐसा लगता है जैसे यह मेरी भावना है की मै यीशु का चित्र बना रहा हुँ की यीशु वहाँ है, जब मैं बिमार के लिए प्रार्थना करता हुँ, वह अकसर ऐसी बाते बताता है जिन्हें मैं खुद न जान पाता और मुझे पता चलता है की यह मेरी भावना नहीं परन्तु सच में वही है। मैं उस व्यक्ति के कंधे के ऊपर से उस का चेहरा देखात हुँ और फिर उस से पूछता हुँ। "परमेश्वर, इस व्यक्ति के लिए आप के मन में क्या है? क्या हो रहा है? आप किस तरहा उसे चंगाई देना चाहते है?" और फिर मैं यीशु के चेहर को देखता हुँ और फिर उस की आवाज को अपने मन में सुनता हुँ। यह १०० % कार्य करता है जब मैं चंगाई की प्रार्थना इस तरहा करता हुँ की बिमार व्यक्ति से उस विषय पर कार्य करने को कहता हुँ जो यीशु बताते हैं ( क्षमा न करना, परेशानी, वगैराह) और उस तरहा प्रार्थना करे, जैसा वह चाहता है.

यीशु को प्रार्थना में इस तरहा देखना बिलकुल वैसा है जैसा उन्होंने अपने चेलों को

और हमें बताया  था की हम उसे पवित्र आत्मा के द्वारा देखेंगे: यूहन्ना १४:१६-१९ "मैं पिता से प्रार्थना करूँगा..........तुम भी जीवित रहोगे।"

**मारा वी, अगस्त २००३:** हम ने मारा को, जो एक कालेज ग्रैड्जुण्टे है और एक दूलहिन की सहेली बनी थी, शुक्रवार को एक शादी के पूर्व प्रयोग में, उस के दाहीने पैर में दर्द के कारण वह बैठ गई थी उस पैर पर उस के गर्मीयों में शल्यशास्त्र हूआ था। दूसरी दुलहिन की सहेलीयों के साथ पूर्व प्रयोग में ६० मिनट से भी ज्यादा  समय तक खड़े रहने के कारण उस का पैर दुखने लगा था। कैथरीन ने उसके पैर पर हाथ रखा और मैंने अपना हाथ उस के कधे पर रखा और प्रार्थना की। हम ने यीशु से कहा की वह अपनी आत्मा की चंगाई की ज्योती और शक्ति को उस के पैर पर छोड़े। इस बार हमने और ना ही मारा रे किसी प्रकार की गर्मी या झनझनाहट महसूस हुई, परन्तु हम यीशु का धन्यवाद करते  रहे की उस की शक्ति उस के पैर को ठीक करने के लिए प्रवेश कर रही थी और परमेश्वर की ज्योती का चित्र बनाते रहे की वह पैर में प्रवेश कर रही है। मैंने अपने मन की आँखों से यीशु के चेहरे को देखा और उसे मेरे मन में कहते हुए सुना, "मैं उस का दर्द ठीक करूँगा"। फिर उस ने हमें यह कहने की अगुवाई की दर्द उस के पैर को छोड़ कर जाऐ।  "दर्द तू इस के पैर को छोड़ कर जा। यीशु के शरीर और खून की बात को मान - उस के घावों के कारण यह चंगा हुई है (१ पतरस २:२४, यशायाह ३५:५)। यीशु के नाम से अभी इसी वक्त दूर हो।" जब हम न मारा से पूछा की कैसा ला रहा है। तो उस ने कहा की दर्द जा चुका था और पैर "सुन" हो गया था।  अगली रात शादी के बाद खाने पर हम ने देखा की मारा, दूल्हे, दुलहन और अन्य लोगों के साथ नाच रही थी। कैथरीन ने उस से पूछा की अब कैसा है तो उस ने कहा की "यह एक चमत्कार है"।

**क्रिस्टीएन एल; अगस्त २००३:** क्रिस्टीएन जो एक विद्यार्थी है विल्लीयम और मेरी कालेज में, एक स्मती मिनिस्ट्रीज़ बैकबैकिंग कैंम्प जो कोलोरोडो रॉकी माऊँवटेंस में हो रहा था, वह वहाँ गए हुए थे कुछ  और नव युवकों के साथ जो विद्यार्थी थे देश भर के कालोजों और विश्व विद्यालयों के। एक युवक जो पहाड़ी चढ़ने में अगुवाई करता था, एक दिन उस के पैर में भयानक झनझनाहट हुई और वह वह गिर पड़ा  जिस के कारण उस के पैर की माँसपेशीयाँ एक बडी गिठान में बन्द गई, जो सब को नज़र आ रही थी और वह उसे खोल नही पा रहा था। वह एक तंदरूस्त नव जवान था परन्तु दर्द के कारण वह रोने लगा था। परमेश्वर ने क्रीस्टेन के मन से बात की वह उस व्यक्ति के पैर के दर्द के लिए प्रार्थना करे।

क्रिस्टैन ने वहाँ उपस्थित हर मसीही व्यक्ति से कहा की वे उस के साथ प्रर्थना करें। हर कोई उस व्यक्ति से कुछ दूरी पर खड़ा हो गया और अपने सरों को झुका लिया। क्रिस्टेन ने उन से कहा की हे लड़को, आगे आईए और अपना हाथ उस पर रखीए और हम परमेश्वर से प्रार्थना करेंगे की उस को चंगाई दे। क्रिस्टैन ने प्रार्थना में आगुवाई की और उस चोट खाऐ व्यक्ति के पैर पर हाथ रखा।  उस ने पवित्र आत्मा से कहा की वह

दउस व्यक्ति के पैर में प्रवेश करे और चंगाई की शक्ति को उस ऐठन वाली माँसपेशी पर केंद्रित करें और फिर परमेश्वर का आदेश पा कर क्रिस्टेन ने कहा, मैं आदेश देता हुँ की यह ऐठंती माँसपेशी ठीक हो जाऐ और यीशु के नाम में दर्द दूर हो जाए"। तुरन्त उस व्यक्ति की ऐठन वाली माँसपेशी गिठान में से अपने आप खुल गई, उस ने आराम महसुस किया। दर्द दूर हो गाया और वह चोट खाया व्यक्ति बड़ा आराम अनुभव करने लगा। सारे जावन जो उस के लिए प्रार्थना कर रहे थे, हैरानी में आँखे खोल दीं। एक एक कर के वे क्रिस्टेन के पास आए और कहने लगे "वहाँ क्या हुआ?" हमें पता है की परमेश्वर चंगाई देता है, परन्तु हमारी प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर ने कैसे किया"? क्रिस्टेन ने उन्हें बाताया की हमें बिमारों के चंगाई के लिए प्रर्थना करनी है जैसे यीशु ने और प्राचीन गिरजाधरों ने की थी जिन के बारे में बाईबल में बताया गाया है। फिर दो विद्यार्थीयों ने बताया की वे भी अपनी प्रार्थना सभाओं में मसीह की शक्ति और पवित्र आत्मा के द्वारा, बिमारों को चंगा करना सीख रहे है। क्रिस्टेन ने कहा की यह एक ऐसी छाप छोड़ता है की परमेश्वर उद्धार और चंगाई चिन्हों में चलना चाहता है और कई विश्व विद्यालयों और कालेज कैंम्पसों पर मण्डराना चाहता है।

**बिल एफ. जुलाई २००३ :** कल एक औरत मेरे प्रार्थना के कमरे में आई और कहने लगी की उस के पास कुछ है जिस से वह मुक्ति पाना चाहती है। हम ने यीशु से कहा की वह हमें बताए की वह क्या है जिस से वह मुक्ति पाना चाहती है, परन्तु हमें कोई साफ चित्र नहीं मिला और न ही कोई संकेत, सो मैंने यूँही आदेश दिया की वह जो भी है उस से इसे छुटकारा मिले और दो या तीन मिनट में वह जो भी था गायब हो गया।

कल की प्रार्थना सभा के बाद हम ने शारीरिक चंगाई देखना ज़ारी रखा। एक औरत छुटने की परेशानी के साथ मेरे पास आई, उस का सीधा धुटना और पैर इतन दर्द कर रहे थे की उसे उठा नहीं पा रही थी। वह अपने मोज़ो के ऊपर ख़डी होती और उन्हे ऊपर खेंचती। वह प्रार्थता के कमरे में आई और एक अगुवे ने उस के लिए प्रर्थन की। उस ने तुरन्त चंगाई पाई और वह उसी वक्त अपना पैर उठाने लगई।

एक जवान औरत आई जिस के दोनों हाथों की कलाई में दर्द था। वह अपनी कलाईयों को घुमा नहीं पाती थी। उन में बहुत दर्द होता था। जब मैंन उस के हाथों को अपने हाथों में लिया तो मुझे ऐसे लगा जैसे परमेश्वर कह रहा हो की इस के खाने पीन में बदलाव की ज़रुरत है। वह जो खा रही थी उस में खटाई की मात्रा अधिक थी जिस कारण वह उस के अंदर समा गया था। परन्तु मैं उस से सफाई से न बता सका और उस से कहा की वह प्रर्थना करे और यीशु से पूछे की वह क्या है जो उस में से निकाल बाहर करना है। फिर मैंन उस की कलाईयों के लिए प्रार्थना करी और दर्द को आदेश दिया की वह दूर हो जाए। जब मैं प्रार्थना कर रहा था तों मैंने महसूस किया की परमेश्वर का अभीषेक उसे छू रहा था और वह उसे एक दो मिनट तक पाती रही। जब अभीषेक खतम हुआ, मैने उस की कलाईयों को छोड़ दिया और उस से वह करने को कहा, जिसे करने से उस की कलाई दर्द करती थी।

वह कलाई मरोड़ने लगी और आप उस की आँखों में देख सकते थे की दर्द जो चुका था। वह फूट फूट कर रोने लगी और मैंने यह महसूस किया की यीशु ने यह कहने को कहा की यीशु उस से प्रेम करता था और यह प्रेम को जवान का एक छोटा नमूना था।

एक बहरी औरत आई जिस के पैर में, कलाई में, और हाथों मे दर्द था। जब वह सुबाह सो कर उठती थी तो यह दर्द होते थे। जब वह वहाँ खड़ी थी तो उसे दर्द नहीं था। परन्तु वह सुबह उठने पर उन से धुटकारा पाना चाहती थी। हमें एक ऐसे व्यक्ति से मदद लेनी पड़ी जो उसे इशारों से समझा सकता था। जब हम यह करते रहे, तो मुझे पीड़ा का संकेत मिलता रहा की वह पीड़ा में थी। उसे यह समझाना मुश्किल था, की मैं क्या कहना चाहता हुँ, परन्तु आखिकार वह मेरी बात समझ गई। मुझे पता चला की एक व्यक्ति था जो कैनेड़ा मे रहता था, जो उसे परेशान कर रहा था- और उस ने इस व्यक्ति को माफ नहीं किया था। पवित्र शास्त्र में से मत्ती १८:३४ मेरे ध्यान में आया की वह व्यक्ति जिस ने माफ नहीं कीय था उसे पीडा देने के लिए पीड़ा देने वालों के हाथों सौंप दिया गया। हम उस के लिए प्रार्थना करते रहे और उस ने उस व्यक्ति को माफ कर दिया। मुझे अगले रवीवार को पता चलेगा की इस प्रार्थना का नतीजा क्या था।

एक युवक जिस ने मुक्ति के संदेश को सुन कर मसीह को अपनाया था, वह हमारे पास आया, जिससे हम आशीषित हुए। हम ने एक दम्पंती को भी प्रार्थना में साथ लिया जो यह तै नहीं कर पा रहे थे की उन्हें कौन से गिरजाघर जाना है। जब हम प्रार्थना करने लगे तो उस पती ने परमेश्वर की उपस्थिती को अनुभव किय और वह रोने लगा और अपने परीवार के लिए परमेश्वर के सामने चिल्लाने लगा। में थोड़ा चकित हो गया, क्योकी मैंने यह नहीं सोचा था की एक दिशा दिखाने वाली प्रार्थना मे इतना कुछ हो सकता है। यह अच्चंमबित करने वाली बात थी क्योकी, क्योकी वह इतना गर्म हो गया था की इस कराण पती की शर्ट पूरी भीग गयी थी। ऐसे लग रहा था जैसे कियी ने पानी के पाईप को उस पर झोड़ दिया गाय हो और वह भीग गाय हो। आखिर कार जब उस ने कुछ होश पाया, तो उस ने हम से यह कहा की वह ऐसा गिरजाघर ढूँढना चाहता है जहाँ वे बढ़ सके और अपनी सेवा करने के लिए जगाह पा सके। मैं उम्मीद करता हुँ की वे हम से आकर जुड़ जाऐं और हमारे परीवार का एक भाग बन जाऐं.।

सो - यह कारनरस्तोन में एक दिलचस्प रवीवार की सुबह थी। आप की सेवा के लिए धन्यवाद।

**सैम, जूलाई २००३:** मेरी पन्ती और मैं (गैरी) एक विद्यार्थी अगुवे पर प्रार्थना कर रहे थे जिस का नाम सैम था। जो विलीयम और मेरी कालेज में वर्ग बी ए में पढ़ता था। सैम के बायीं कुल्हा मे एक दर्दनाक फोड़ा बढ़ रहा था। पहले मैंने सैम से कहा की वह यीशु का चित्र बनाए की वह चंगाई की ज्योती फैला रहा है और यीशु से पूछें की क्या कोई रूकावट इस अभीषेक को रोक रहा था। सैम ने कड़वाहट और स्वय दया को स्वीकार किया और कुछ लोगों को क्षमा किया जिन्हें यीशु उस के दिमाग में ला रहा

था। फिर मैंने उस से कहा की वह यीशु से उसकी बिमारी की जड की वजाह पूछे। यीशु ने उसे बताया की उस ने अपने आप को शाप दिया, स्वय को समालोचन किया था, जब प्रचार के बाद उतने पापों की मुक्ती के परिणाम नहीं मिले जितनो की उम्मीद थी और प्रार्थना करी थी। मैंने उसे समझाया की अपने आप को समालोचन करने का मतलब है की अपने आप को शाप देना। उस ने स्वंय को समालोचन करने की शक्ति को तोड़ा। फिर मैंने उस के कुल्हे पर उस के हाथ के ऊपर अपना हाथ रखा और हमने पवित्र आत्मा से कहा की वह अपना चंगाई का अभीषेक को और यीशु की चमक को उस के कुल्हे पर छोड़े। मैने अभीषेक को अपने हाथों पर अनुभव किया जो कुल्हे मे प्रवेश कर रहा था और परमेश्वर का धन्यवाद दिया की अभीषेक अंदर जा रहा था। मैंने उस फोड़े को आदेश दिया की वह उसे छोड़ दे। फिर २ मिनट कि प्रार्थना के बाद, मैंने सैम से पूछा की क्या उसे कोई फर्क पता चला। उस ने कहा "नही"।

फिर मैने उस से पूछा की क्या मैं अपना हाथ उस के कुल्हे पर रख सकता हुँ, जहाँ वह फोड़ा था। फिर मैने उसी तरहा प्रर्थाना की, परमेश्वर को उस अभीषेक के लीए धन्यवाद देते हुए, उस फोड़े को डाँटते हुए आदेश दिया की वह टूट कर छोड़ दे और दर्द को भी यीशु के नाम मे छोड़ देने के लिए कहा। इस समय मैनें शक्ति का धड़ाका अनुभव किया (सनसनाहट और गर्मी को बड़ते देखा) जो उस के कुल्हे तक जा पहुचा। तब सैम ने कहा की दर्द ने उसे छोड़ दिया और अनुभव किया की फोड़ा छोटा हो गाया है। हम प्रार्थना करते रहे और उस के कुलहे को अभीषेक में भीगोते रहे। यकीनन, मेरे हाथ का, सैम के कुल्हे से सीधे संम्पर्क ने, यीशु की चंगाई के अभीषेक को अधिक तीब्रता से छोड़ा।

**गैरी, जुलाई २००३:** फ्रैक का जो पहला लेखा था उस का मुख्य कारण चंगाई का यह था की मसीह ही चंगाई देता है और उस के मुताबिक कार्य करना है। (जैसे की यशायाह ५३:१-५ और १ पतरस २:२४ और हाँ याकुब ५:१५ इस बात को स्पष्ट करता है की "विश्वास की प्रार्थना बिमार व्यक्ति को चंगा करती है।" इस का यह मतलब हुआ की सामान्य रूप से परमेश्वर बिमारों को चंगाई देता है।) हम ने यह ढूँढ निकाला है की यदि हम इस में उतना ही विश्वास रखें जितना की आकर्शण शक्ति के नियम पर - की यदी हम पहाडी के, बाहर आकर चलें तो हम गिर सकते है - और यदि लोगों से उसी विश्वास के साथ बात करें - "परमेश्वर तुम्हे चंगा करेगा जब हम प्रर्थना करेंगे" - तो चंगाई बहुत आसानी से प्राप्त होगी। हम उन लोगों से कहना सीख रहे हैं, जो हम समझते हैं (आत्मा मे देखते और सुनते है) की यीशु चाहता है की हम उन के लिए चंगाई की प्रार्थना करे, "हमारी प्रार्थना के बाद तुम अच्छा महसूस करोगे, क्योंकी परमेश्वर तुम्हें चंगा करेगा"। बजाये झिझकने के (मुझे नहीं पता की परमेश्वर क्या करेगा, परन्तु चलो फिर भी हम प्रार्थना करते है") हम यीशु से पता लगाते हैं और अकसर वह कहता है की " आगे बढो" और चंगाई पाओ, तब हम एक सच की तरहा बात करते हैं और हाँ बेफकूफ लगने का जोरिवम उठाते हैं यदी किसी वजह से चंगाई नहीं मिली है तो- परन्तु हमने कभी चंगाई पाना चाहाता हो लोगों के बीच मे और ऐसा

कभी नहीं हुआ की परमेश्वर ने चंगाई नहीं दी हो। हम प्रेकं के बारे में यह कहते है की यदी हम विश्वास करें की चंगाई उसी रीती से मिलती है जैसे आकर्शण शक्ति के नियम और उस तरह कार्य करें तो वह आसानी से प्राप्त होती है स्वंय के लीए और दूसरों के लिए भी। ऐगनस स्वैनफोर्ट ने भी अपनी किताब दृष्टि हीलिंग लाईट "में यही बात कही है।

यदि हमें विश्वास है की परमेश्वर चंगाई की प्रार्थना के द्वारा चंगाई देता है, तो हमें उम्मीद के साथ बात करना है की ऐसा होता है। उम्मीद से बात करना विश्वास का भाग बन जाता है जो चंगाई का रास्ता बन जाता है, उस व्यक्ति के लिए और हमारे लिए भी।

पिछले हफ्ते के आखिर में, जुलाई ४ की एक पार्टी में हम ने चंगाई महसूस की, जब मैने यीशु से पूछा और जान लिया की परमेश्वर चाहता है की वे चंगे हो, तब मैने उन से कहा,"जब हम प्रार्थना करेंगे तो काफी ठीक हो जाएगा।" एक पाँच साल की लड़की के हाथों, पैरों और मुख पर, लाल खुजली के धब्बे थे। तब हम ने प्रार्थना की और विश्वास का चित्र बनाया की यीशु चंगाई की ज्योती और चमक के द्वारा प्रवेश कर रहा है, तो मैने उसके अंदर एक डर और परेशानी के शैतान की मंडराते देखा। उसकी माँ ने डर और उत्सुक्ता को माना जो उस की बेटी के प्रति थी और तब हमने उस शैतान को डाँट बाहर किया और उस के साथ उस के साथीयों को भी, और उन धब्बों को भी छोड कर जाने को कहा उसके चमडी पर थे। तुरन्त उस की हालत ५०-६०% " ठीक हो गयी और जब एक घण्टे बाद हम ने उन का घर छोड़ा तो उसकी चमड़ी साफ हो गयी थी। हम ने उस की माँ से कहा की "जब हम प्रार्थना करेंगे तो वह बहुत अच्छा महसूस करेगी।" वह पारा के विष के कारण, दाहिनी गर्दन, कंधा और हाथ में दर्द महसूस करती थी। उस ने कुछ परेशानी और तनाव को परमेश्वर को सौंप दिया और कुछ लोगों को माफ किया ताकी परमेस्वर की चंगाई के अभिषेक को कोई रूकावट न रोक सके। हमने फिर उसके और उसके पती के साथ मिल कर प्रार्थना की और पवित्र आत्मा से कहा की वह यीशु की चंगाई की ज्योती को इन भागों पर छोड़े, हम आत्मा की ज्योती को चित्रांकित करते रहे और महसूस किया की अभीषेक का झनझनाहट उस के इन भागों में प्रवेश कर रही था (मेरी पत्नी और मेरे दो बच्चो ने भी इस गर्मी और अभीषेक के झनझनाहट को उन के हाथों द्वारा उस के शरीर में प्रवेश होते देखा)। तब हमने पारे को डाँटा और उसे शरीर को छोड कर जाने को कहा और दर्द को भी उस की गर्दन, कंधा और हाथ को छोड कर जाने को कहा। लगभग ५ मिनट के धन्यवाद के साथ की परमेश्वर उसे चंगा कर रहा है, हम ने उसे अभीषेक में भीगने दिया और देखा की दर्द पूर्ण रूप से गायब था। उस के पती को दाहिने हाथ की माँसपेशी में दर्द था, सो, जब उस की पत्नी की चंगाई पूर्ण हुई तो हमने अपना हाथ जो अभी भी अभीषेक से झनझना रहा था हटा कर उस पर रखा, उस के दाहिने हाथ पर और उसे ५०% चंगाई तुरंत मिल गई।

**गैरी, जून २००५:** एक हफ्ते पहले, मेरी पत्नी और मैं, हम दोनो ने एक मध्यररस्ता सभा में १५ विद्यार्थी प्रार्थना अगुवो के साथ जो विलियम और मेरी कॉलेज में, जो विलियमस्बर्ग, बी.ए. में पढते थे और कुछ संस्था के बड़े चमत्कारी बालिग भी थे।

बुरी बात यह थी की उन में से दो बालीग, यीशु को समर्पण करने के लिए तैयार नहीं थे। वे न तो कोलेज के क्षेत्र में और न ही विलियस्बर्ग शहर के अंदर प्रचार के लिए तैयार थे, जैसे की बाकी के विद्यार्थी और मैं तैयार थे। हम और विद्यार्थी मान रहे थे की परमेश्वर चाहता है की हम उसके समक्ष दीन बनकर आएं, अपने पापों का पश्चाताप करें और प्रार्थना करें की हर सभा में परमेश्वर की आत्मा की बारीश हो और महीमा हो, परन्तु कुछ बालिग लोग इस बात के विरोध में थे। वे किसी कारणवश यह मानना चाहते थे की उनमें कोई भी, किसी भी प्रकार की कमी नहीं है। और सब कुछ ठीक है और इस कारण विलियमस्बर्ग में किसी को भी मसीह के देह के कारण पश्चाताप करने की जरूरत नहीं है। इससे पहले की यह दो बालिग कुछ कहते, मैने अपने न्याय को एक तरफ रख, अपनी आत्मा से कहा, "यीशु तेरा वचन कहता है की किसी भी व्यक्ति को न परख," और फिर मैने महसूस किया की पवित्र आत्मा में मेरे विचारों, कल्पना और इच्छा में समा गया। उन दो बालीगों, जो विद्यार्थीयों के विरूद्ध बोल रहे थे, मैने उन में कड़वापन, मनुष्यद्वेशी सिद्धांत और डर देखा।

इन दो बालिगों में, एक बूढी औरत थी, जिस के विषय में परमेश्वर ने मुझ से बताया की उसकी कमर में दर्द है और वह उसे चंगा करना चाहता ह। जो इस प्रार्थना सभा के मुख्य थे उन्होने लोगो से कहा की सब मिल कर उस औरत के लिए और दूसरे बालिग के लिए उनको सामान्य आशीष के लिए प्रार्थना करें। उस औरत की कमर दर्द के बारे में कुछ नहीं कहा गया। मैं निजी तौर से इस प्रार्थना में शामिल होना नही चाहता था, परन्तु परमेश्वर ने मुझ से कहा की मैं इस की कमर पर हाथ रख कर उसके लिए प्रार्थना करुं। इस से पहले की मैं कमरे के उस पार जाता, उसके पती ने मेरा हाथ पकडा और उसकी पत्नी की कमर पर रखा और मझसे चंगाई के लिए प्रार्थना करने को कहा। मैने और दूसरों ने मिलकर उसकी कमर पर हाथ रखा और आत्मा से कहा की वह तेज़ी से चंगाई की ज्योती को इस की कमर और हड्डीयों तक पहुंचे और मित्रो मैने अभीषेक की गर्मी और झनझनाहट को अंदर जाते हुए अनुभव किया। फिर मुझे परमेश्वर ने उसके प्रती दया उत्पन्न की और मैने आत्मा के द्वारा यीशु के चेहरे को देखा और पूछा की आत्मा में कैसे प्रार्थना करूँ। उसके सर के ऊपर उन्होने मुझे एक दर्शन दिखाया। वह कुछ जवान आत्मिक बेटों और बेटीयों के साथ बैठी हुई थी। मुझे ऐसे लगा जैसे उस में कोई भावमय घाव होगा जो या तो उसके अपने बच्चों ने पहुँचाया होगा या बच्चे के न होने के कारण होगा। (मै यह नहीं जान पाया की कौन सा, क्योंकि मै इस सभा से पहले उससे नहीं मिला था।) परन्तु मैं भविष्यवक्ता की वाणी में कहने लगा की उसके मन के घाव को भरने क् लिए परमेश्वर उसे आत्मिक बेटे और बेटीयाँ देंगे। यह सुन कर वह रोने लगी और अभीषेक और ज्यादा मज़बूत होने लगा और कमर दर्द दूर हो गया।

मैने यह भी सीखा की यदि परमेश्वर उस व्यक्ति के बारे में दैवी दर्शन दे रहा हो तो भविष्यवक्ता की वाणी कहने से उस व्यक्ति को अभीषेक द्वारा चंगाई और भी बढ जाती है। परमेश्वर की दया के साथ चलने से, मेरे शरीर में जो उस औरत के प्रती क्रोध था, क्योंकी उसने इस से पूर्व विद्यार्थीयों का और हमारा विरोध किया था। सच में एकता करवाने वाला परमेश्वर है।

देर उस रात, बौन्नी नाम के एक विद्यार्थी ने उस के दाहीने पैर के लिए प्रार्थना करने को कहा, जिस के कारण वह लंगड़ा रही थी। हमने उसके पैर पर हाथ रखा और पवित्र आत्मा से कहा की वह यीशु की चंगाई की ज्योती और गर्मी उस के पैर तक पहुँचे। हमने विश्वास चित्र बनाया की यीशु की चंगाई की ज्योती उस के पैर के अंदर प्रवेश कर रही है, जिसके कारण हड्डीयाँ और पुट्ठा, को उनके सही जगह पर कर दिया, और दर्द को दूर कर दिया। जब हम ऊपर्युक्त हर चीज़ के लिए धन्यवाद करने लगे तो हम ने दर्शन में देखा की कैथरीन, जिसका हाथ उसके पैर पर था, उसने हड्डीयों और पुट्ठों को हिलते हुए अनुभव किया, जिस का अनुभव बौन्नी को नहीं था। बौनी ने कहा की जूते के अंदर उसका पैर गर्म हो गया था और उसके बाद उस का दर्द पूर्ण रूप से ठीक हो गया था।

**फ्रेंक १९७८-१९९४ :** मैं यह कहानी आप को, परमेश्वर की ओर देखते हुए और आत्मा के बहाव में लिखूंगा। जैसा की आपने पिछले हफ्ते बताया। मुझे इस तरह से लिखना आसान लगेगा जैसे मै आप को कहानी सुना रहा हुँ।

१९७८ से लेकर १९९४ तक मैने चंगाई विश्वास और केवल विश्वास में रह कर करी।यह ठीक कार्य कर रहा था और बहुत चंगाई हुई। इस लिए मुझे समझाने दीजीए की विश्वास की चंगाई क्या है और फिर मैं आप को कई कहानीयाँ बताऊँगा।

१९७६-१९७८ में जब मै बाईबल स्कूल में था तो मैंने सीखा की यीशु ने हमारी चंगाई के लिए दाम दिया है। उसके घावों के कारण हम चंगाई पाते है (यशायाह ५३:५;१ पतरस २:२४)। मैंने इस पर विश्वास किया। विश्वास का अर्थ यह था की मैं ये पूर्ण रूप से मानता हुँ की यीशु ने अपनी देह और खून से हमारी चंगाई का दाम भरा और मुझे चंगाई पाने का अधीकार है। मैंने विश्वास किया की यीशु की देह और खून बिलकुल संयुक्त राज के संविधान की तरह था। उसकी देह और खून ने मुझे परमेश्वर के राज्य में कुछ अधिकार दिये हैं और उनमें से एक अधीकार था चंगाई का अधीकार। यह विश्वास मेरा उतना ही ठोस था जितना की यह की मैं एक अमरीकी हुँ। मेरे मन में कोई शक नहीं की मैं अमरीकी हुँ, और मेरे मन में यह भी शक नहीं है की मैं उस के घावों से चंगाई पाता हुँ।

बाईबल स्कूल में यह भी सिखाया गया की याकूब ५:१४-१८ में जो विश्वास की प्रार्थना बताई गयी है जो बिमारों को चंगा करती है, वह आप के विश्वास पर कार्य करने जैसा

है। बाईबल स्कूल के अध्यापकों ने इब्रानियों पाठ में यह भी बताया की विश्वास असल में परमेश्लर के वचन व्दारा कार्य करता है। सो मेरे लिए विश्वास की प्रार्थना का अर्थ है की मैंने जो यीशु की देह और खून पर विश्वास किया उस पर कार्य करूँ।

जो पहली चंगाई मेरे जीवन में हुई वह मेरी नयी पत्नी की थी। मेरी शादी फरवरी १९७८ में हुई थी। शादी के दो दिन बाद मेरी पत्नी के पेट में भयानक दर्द उठा। मैंने उस के पेट पर हाथ रखा और सिर्फ यह कहा की यीशु के नाम में ठीक हो जाओ। परन्तु उसे कुछ ठीक लगा और २० मिनट में वह पूर्ण रूप से ठीक हो गई थी। उन दिनों मुझे परमेश्वर की उपस्थिति या अभिषेक के बारे में कुछ भी पता नहीं था। १९७८ - १९९४ के बीच, जब मैं प्रार्थना करता था तो, मुझे यह बिलकुल भी पता नहीं था की, प्रमेश्वर की उपस्थिती या अभिषेक क्या था, परन्तु कई चंगाईयाँ हुई। मैं केवल यह विश्वास करता था की हमें चंगगई उसके घाव से मिलती है और मैं चंगाई का ऐलान, अपने हाथों को उन पर रख कर, यीशु के नाम से करता था।

मेरी शादी के कुछ दिनों बाद मैंने स्मिथ विगिलस्वर्त की किताब "हमेशा बढता विश्वास" पढी। उस समय उस किताब के माध्यम से मैंने यह सीखा की सारी दुनिया में चंगाई यीशु की देह और खून के व्दारा मिलती है। इस किताब ने यह भी बताया की हिम्मत और अधीकार से प्रार्थना कर चंगाई पाना है क्योकि यह हमारा अधीकार था की हम यीशु के व्दारा चंगाई पाए। इस किताब से यह भी पता चला की विश्वास की प्रार्थना जो चंगाई देती है वह चंगाई के लिए अधीकार की प्रार्थना है क्योंकि हम यह विश्वास करते हैं की यीशु की देह और खून से ही चंगाई मिलती है। उस समय मुझे केवल यही पता था और मेरे लिए उसी की ज़रूरत थी। अगले पंद्राह सालों तक बिना परमेश्वर की उपस्थिती को अनूभव करें और बिना अभीषेक की भावना के मैं अधिकार की प्रार्थना से, यीशु के नाम में चंगाई के लिए प्रार्थना करते रहा और नतीजे भी देखे। उन दिनों में मैंने हर किसी में, जिन के लिए मैंने प्रार्थना की थी सौ प्रतीशात चंगाई देखी, परन्तु मेरी पत्नी, मेरे बच्चों और स्वंय मेंरे लिए ही मैं प्रार्थन करता था, किसी और के लिए नहीं।

शादी के दस साल बाद तक जिन बिमारीयों की चंगाई के लिए, मेंरे परीवार में, मैं प्रार्थना करता था वो थीं सर दर्द, पेट दर्दे, सर्दी, जुखाम और दुसरे अनेक छोटे दर्द उन दिनो मेंरे विश्वास की प्रार्थन बहुत आसान थी। मैं अपना हाथ उस परेशानी की जगाह पर रखता था और अधीकर से कहता था की यीशु के नाम मे चंगाई मिल जाए। जिन शब्दों का प्रयोग मैं करता था, वह बहूत आसान थे, मैं कहता था, "यीशु के नाम में चंगे हो जाओ"। और मैं सिर्फ विश्वास करता था की परमेश्वर ठीक करेगा। सर दर्द और पेट दर्द पचास प्रतिशत एक दम ठीक हो जाते और एक या दो, घंटे के अंदर सारा दर्द दूर हो जाता था। आसान विश्वास कि प्रार्थना से सर्दी जूखाम की तीवर्ता भी कम हो जाती थी। प्रार्थना के बाद सर्दी और जूखाम के आसार बन्द हो जाते थे और तीवर्ता से चंगाई मिलती थी। उन दिनों सर्दी जूखाम एक दिन में खत्म नहीं होते थे। मैने अपने जीवन में एक ही बार देखा की जुखाम के आसार एक दम गायब हो

गऐ। मेरी छोटी बेटी करीब चौदाह साल की होगी और वह जूखाम से पीड़ित थी। जब मैं काम पर से घर लौटा तो देखा की उसे तेज़ बूखार है, ठण्ड मैहसूस हो रही थी और गर्दन पीली पड़ गई थी। मैंने उस के सर पर हाथ रखा और अधीकार से कहा की यीशु के नाम से चंगी हो जाओ, फिर मैं वहाँ से चला गया। पाँच मिनट में उसका रंग वापस आ गया, बूखार दूर हो गया, ठण्ड दूर हो गई और उसे भूख लगने लगी। केवल यही समय था जब मैंने सर्दी जूखाम से तुरन्त चंगाई देखी है। बाकी की सर्दी और जुखाम थोड़ी देर में जाते हैं।

एक वक्त काम करते हुए मैं अपने मोवक्तील की डयोड़ी पर से गिर गया और कमर मे चोट लगी। दर्द इतना तेज़ था की मैं अगली सुबाह बिस्तर से नहीं उठ पा रहा था। हर कदम पर दर्द हो रहा था। मैं एक कालीन साफ करने वाली कम्पनी का माल्कि हुँ और मुझे मेरी कमर का इस्तेमाल सारा दिन करना पडता है। मेरी पत्नी चाहती थी की मैं कुछ दिन आराम करूँ परन्तु मुझे कुछ कर्ज चुकाना था इसलिए मैं काम पर गया।

कालीन सफाई की छडी को चोट खाई कमर से घुमाना मेरे जीवन का सब से दर्दनाक काम था। मैं पहाड़ी और किसी सकत जगाह के बीच था। मेरा काम करना ज़रूरी था क्योंकी मुझे कर्ज चुकान था और मुझे चंगाई की भी आवश्यक्ता थी। सो मैंने विश्वास की प्रार्थेना की और उम्मीद रखी की वह कार्य करेगी और उसने की। कार्य करते हुए दर्द में मैं कहने लगा "उस के घावों से मैं चंगा हुआ हुँ।" मैं ने मत्ती में उस औरत के विश्य मे पढ़ रखा था जिस को खून पहने की बिमारी थी। वह अपने मन में कह रही था की यदी मैं उस के चोगे के किनारे को छू लूँ तो मैं चंगी हो जाऊँगी। तो मैंने सोचा की यदी वह औरत खून की बिमारी के साथ, खामोशी से अपने विश्वास को मन में कह कर और उस पर कार्य करने से तुरन्त चंगाई पा सकती है, तो मैं भी उसी तरहा चंगाई पा सकता हुँ। मैं इतने दर्द में था की केवल यह बोलने से की "उस के घावो से मैं चंगाई पाता हुँ, मुझे मानसिक आराम मिलने लगा। मैं काम करते रहा और खामोशी से इस वचन को बार बार दौहराते रहा। जैसे जैसे मैं यह कह रहा था" उस के घावों से चंगाई मिलती है, " वैसे वैसे मैं अंदर ही अंदर दर्द के साथ विश्वास की लड़ाई लड़ रहा था। पहले तीन दिनो तक कुछ नही हुआ परन्तु मैं कार्य करता रहा और इस वचन के द्वारा अंदर ही अंदर दर्द को दूर करता रहा। तीसरे दिन मुझे दर्द से कुछ आरम महसुस हुआ। कमर का दर्द कई घंटो तक दूर हो जाता और फिर एक घंटे के लिए आता और फिर चला जाता। इस तरहा से अगले चौदाह दिनों तक होता रहा और फिर पंद्रहवे देन पूर्ण रूप से दर्द चला गया, प्रभु की महीमा हो। एक ढेड़ साल के बाद, एक दिन मैं काम कर रहा था और एक दम सें वही दर्द बिना किसी वजाह के लौट आया। वह उतना ही तीव्र था जैसे पेहले, सो मैंने विश्वास की प्रार्थना शुरू कर दी। मैं अंदर से उस दर्द को दूर करता रहा, इस वचन को दौहराते हुए "उस के घावों के कारण मैं चंगा हुआ हुँ।' इस बार सिर्फ दो दिन में मैं ठीक हो गया और वह फिर वापस नही आया, परमेश्वर का धन्यावाद हो।

१९८९ में मेरी दोनो कोहनीयाँ सूजने लगीं। डॉकटर ने कहा की मुझे टेनिस ऐलबो है और मुझे आराम करना चाहीए। मेरे ऊपर अभी भी कर्ज़ था और मुझे परीवार को भी संम्भालना था, सो मैं ने निश्चय किया की मैं विश्वास की प्रार्थन करूँगा, फिर से मैने परमेश्वर पर ध्यान लगाया और काम करते हुए दर्द को दूर करता रहा और कहता रहा। "उस के घावों से मैं चंगा हूआ हुँ।" दस दिन के अंदर, सूजना और दर्द दोनो गायब हो गए परमेश्वर का धन्यावाद हो। एक साल के बाद यह बिमारी, टेनिस ऐलबो लौट आई और मैंन वही किया परन्तु इस बार चंगाई पाने के लिए केवल तीन दिन लगे और फिर कभी भी यह बिमारी वापस नहीं लौटी।

१९९४ में सर्दीयों में मेरी बड़ी बेटी बर्फ पर खेलने के लिए गयी (स्कीइंग द्रिप)। क्योंकी उस ने अभी बस स्की करना शुरूही किया था, इस कारण हम लोगें ने उस को सलाह दी की छोटी ढलानों पर ही खेलना स्वभाविक था की उसे बडी ढलानों पर भी जाना पडा। जैसा होना था वह टकरा गई और उसे पहाड़ी से नीचे स्ट्रैचर पर लाया गया। उस के घुटने मे भयंकर चोट थी और डॉकटरों ने हमें बताया की उसे शस्त्र चिकित्तसा की जरुरता है। कुछ और परीक्षण के लिए हमे एक हफ्ते बाद डॉकटर से मिलना था। जब तक डॉकटर के पास जाने का दिन नहीं आया, मैं हर दिन उस के घुटने पर हाथ रख कर, यीशु के नाम में अधीकार से चंगाई देता। मैं केवल इतन कहता, "यीशु के नाम मे चंगे हो जाओ" और चंगाई के लिए परमेश्वर का धन्यवाद देने लगता। अगले हफ्ते डॉकटर ने कहा की वह अभी शस्त्र चिकित्सा को टाल देंगे क्यों की घुटना तीव्तार से ठिक हो रह था। मैंने कई महीनों तक उस के घुटने पर हाथ रख कर चंगाई की घोषणा करनी जारी रखी। मेरी बेटी को शस्त्र चिकित्सा की आवश्यक्ता नहीं पड़ी। परमेश्वर की शक्ति जो विश्वास की प्रार्थना द्वारा निकली थी उसी से उस का घुटना ठीक हो गया। एक दिन जब मैं काम पर से लौटा तो देखा की मेरी पत्नी को साँस लेने में परेशानी हो रही है जिस के कारण उस का चेहरा लाल पीला हो रहा था। वह डर गई थी और कहने लगी की मैं नहीं जानती की क्या करूँ।

एक दम से मुझे गुस्से के साथ हिम्मत आई और मैने कहा की मैं जानता हुँ की क्या करना है। इसी के साथ मैंने अपने हाथ को उस के सर पर रखा और चिल्लाया, "यीशु के नाम में अभी इसी वक्त ठीक हो जाओ।" तब मेरे पत्नी ने साँस छोडी और एक लंम्बी साँस ली। साँस की रुकावट का करण हम लोग नहीं जान पाऐ। तीन साल तक उसे इस तरहा से कभी कभी होने लगा। जब कभी ऐसा होता, मैं अधीकार पूर्ण, यीशु के नाम में, चंगाई की घोषणा करता और वह महीनों तक ठीक रहती। हम इस तरहा उस से तीन साल तक झूझते रहे, जब तक की उस को पूरी चंगाई नही मिली।

मेर पिता, जो की उस गिरजाघर जाते हैं जहाँ प्रधान पादरी गिरजा चलाते हैं। उन के कधे में दर्द होने लगा तो वे डाक्टरों के पास गाए। डाक्टरों ने उन्हें दवा दी परन्तु वह काम नहीं कर रही थी। मेरे पिता ने मेरी विश्वास की प्रार्थना के बारे में सुन रखा था, सो उन्हों ने उस को परखने का सोचा। उन्होंने अपने हाथों को अपने कंधे पर रख कर

कहा, " यीशु के नाम में यह दर्द मेरे शरीर को छोड़ कर चला जाए। उस के घावों के कारण मैं जगा हुआ हुँ"। उन्होंने महसूस किया की कुछ दर्द उन्हें छोड़ कर जा चुका है, और अगले दिन तक पूरा दर्द चल गया था, परमेश्वर का धन्यवाद हो।

सो, मेरे अनुभव के अनुसार, विश्वास की प्रार्थना जो बिमारों को चंगा करती है वह एक साधारण सा विश्वास है की यीशु हमारे शरीर मे चंगाई अपनी देह और खून के द्वारा देता है (यशायाह ५:५, १ पतरस २:२४)। विश्वास फिर अधीकार की प्रार्थना के द्वारा यकीन पर काम करता है, जैसे की यीशु की देह और खून से हमें अधीकार है की हम चंगे हो जाऐं। परमेश्वर की आत्मा ज्रब वीश्वास की प्रार्थना से मिलती है, तब, चंगाई पूरी होती है। यह साधारण प्रार्थना का तरीका, हर तरहा के दर्द व बिमारी दूर करने में चमत्कारी कार्य करता है। जितने भी साल मैंने इस तरहा से चंगाई की प्रार्थन की, मुझे एक बार भी ऐसा नहीं लगा की परमेश्वर की उपस्थिती अभीषेक हुआ हो।

**विश्वास की प्रार्थना प्रयोग # १**

केवल इस बात पर यकीन करीए की यीशु की देह और खून से शरीर को चंगाई मिलती है। केवल यह यकीन करीए की उस के घावों के कारण आप ने चंगाई पाई है ( यशायाह ५३:५, १ पतरस २:२४)। फिर इस यकीन पर कार्य करीए जो इस यकीन को विश्वास में बदल दे। अपने हाथों को उस दर्द, बिमारी या रोग के क्षेत्र पर रखीए और अधीकार के साथ, जैसे की आप का हक है की आप यीशु और सलीब के द्वारा चंगाई पाऐं, आप यीशु के नाम में चंगाई की घोषणा करें। दर्द, बिमारी और रोग से ऐसे बात करें जैसे की वह कोई व्यक्ति हो और उस से कहीए की वह यीशु की देह और खून का आदेश माने। उस से कहीए की यीशु के घावों के कारण आप ने चंगाई पाई है और उस दर्द या बिमारी से कहीए की वह यीशु के नाम में आप के शरीर को छोड़ कर जाऐं। परमेश्वर की आत्मा अपके विश्वास की प्रार्थना से मिलकर, दर्द, बिमारी और रोग को चंगा करेगी। इस तरहा की प्रार्थना में आप को परमेश्वर की उपस्थिती या अभीषेक के बारे में परेशान होने की अवश्यकता नहीं। आप ने केवल जानना है और यकीन करना है और परमेश्वर की वाचा पर काम करना है। सो, बस करीए और आप कई अच्छे परीणाम देखोंगे। मेरे मुताबीक यही विश्वास की प्रार्थना है। यह अच्छा कार्य करती है और यदी आप चंगाई देना सीखना चाहते हैं तो यह शुरूआत के लिए अच्छी है।

**फ्रैंक, जूलाई २००३:** चंगाई पर कुछ टिप्पणीयाँ आज रात आप के लिए लिखना चाहता हुँ। पहले कारण की में दर्द को शरीर धोड़ कर जाने की प्रार्थना करता हुँ। इस के दो कारण है;

**सेख्या एक :** दर्द से छुटकारा पाना बहुता आसान है। केवल उतना करीए की दर्द को यीशु

के नाम में इस तरहा आदेश दें जैसे की वह कोई व्यक्ति हो और छुसपैठी हो, आप के शरीर में और सामान्य रूप सें ३५ से ५० प्रतीशत दर्द तुरन्त चले जाता है। और कुछ घंटों में सारा दर्द ठीक हो जाता है।

**संख्या दो:** यदी आप किसी व्यक्ती के दर्द के लिए प्रार्थन कर रहे हों, वह यह अनुभव करें की कुछ दर्द उन के शरीर को छोड़ कर गया है, तो उन को चंगाई के लिए विश्वास एक दम बढ़ जाता है, वे जान जाते है की परमेश्वर काम कर रहा है, और बाकी कि चंगाई पाना आसान हो जाता है।

**दर्द रहित पर सामान्य चंगाई :** दर्द से छुटकारा पाना उतना आसान है की मैंने कई बार दर्द रहित पर सामान्य चंगाई की है। मैं बताता हुँ। पिछले साल मैं अपने पिताजी के साथ मछली पकड़ने गया। मेरे पिताजी कुछ पेड़ो के पास चल रहे थे जब वे फिसल कर गिर पड़े, उन का सर पेड़ की जड़ से टकराया जिस के कारण उन की नाक टूट गई।उन की नाक से भयकर रूप से खून निकलने लगा। मैंने उन को पेड़ के तने के साथ टेका दिला कर बैठाया, सर को पीछे कर तने से सटाया और नाक को अंगूठे और ऊँगली से दबाया। खून बहना कुछ कम हुआ फिर बन्द हो गया। मैंने अपने पिता से कहा की वे शांत रहें जब तक मैं अभीषेक को अपने हाथों द्वारा उन की नाक तक नहीं पहुँचाता। मैने यीशु पर ध्यान लगाया, अपनी ऊँगलीयों को उन की नाक पर १५ मिनट तक रखा ताकी, परमेश्वर के अभीषेक के कारण जो मेरे हाथों द्वारा उनकी नाक तक जा रहा था, खून का बहना बन्द हो जाए। मैं अपने पिताजी को लेकर घर गया और दोपैहर तक उन को उनके घर न भेज कर मैंन अपने पास रखा। उन की नाक सूज गयी थी और एक आँख काली नीली हो गई थी। उन की नाक को ठीक होने में पूरे दो महीने लग गए।

मैं कुछ महिनों तक अपने पिताजी को यह कह कर छेडता रहा की वे जहाँ जा रहे थे उस का उन को ध्यान नहीं था, बिलकुल उसी अंदाज में जैसे वे मुझे बचपन में छेडा करते थे। यह बहुत ही आनंदमय था। नाक के ठीक् होने में सब सेंअचम्भित करने वाली बात यह थी की यह क्रम बिलकुल दर्दहीन था, परमेश्वर का धन्यवाद हो। नाक तो निर्धारित समय अनुसार ही ठीक हुई, पर उन्हें तनिक भर भी दर्द नहीं हुआ। जब मैं खून के बहाव को रोकने के लिए दबाव डाल रहा था तो जो अभिषेक उन के नाक में जा रहा था उस के कारण नाक के निर्धारित समय अनुसार ठीक होने पर भी दर्द नहीं हुआ।

मेरा बेटा टायलर कल ऊपर नीचे कूद रहा था जब उस ने एक भयानक चीख निकाली। कूदते कूदते वह इतनी ऊँचे कूदा की उसकी नाक उसके घुटने से टकराई और उस में से खून निकलने लगा। वह थोडी सूज गई थी। मैंने अपना ध्यान यीशु पर लगाया, अपने हाथ को नाक से थोडी दूर रखा और उस दर्द को यीशु के नाम सें जाने को कहा। टायलर ने कहा, "पिताजी दर्द केवल दस प्रतिशत ठीक हुआ है।" वह चाहता था की ज्यादा दर्द ठीक हो, इसलिए मैंने इसे फिर किया।

उसने बेचैनी के साथ कहा, "पचास प्रतीशत, पिताजी," जैसे वह चाहता था की दर्द पूर्ण रूप से अभी इसी वक्त ठीक हो और यह की मैं दर्द से क्यों खिलवाड कर रहा था। टायलर जो सात साल का है वह सोचता है की यीशु, हाथ के रखने से चंगाई देता है, बुरे स्वपनों की चंगाई भी। वह चाहता है की सारा दर्द एक दम से ठीक हो जाये। तो मैंने दर्द को फिर आदेश दिया की वह उस के शरीर को छोड कर चला जाये। इस बार सारा दर्द चला गया और सात साल का टायलर खुश हो गया, परमेश्वर का धन्यवाद। अब टायलर की नाक सारी रात सूजी रही और दूसरे दिन भी, परन्तु उसे दर्द नहीं था। एक और दर्द विहीन चंगाई निर्धारित समय पर हुई, परमेश्वर का धन्यवाद।

एक औरत मेरी चंगाई सभा में आई जिस के जोडो में दर्द था और जोडों का दर्द इतना बुरा था की कलाई की हड्डीयाँ ढीली हो गई थीं क्योंकि कोमलास्थि नष्ट हो गई थी। उसे बहुत दर्द था और जब आप उस का हाथ हिलाते थे तो आप महसूस कर सकते थे की हड्डीयाँ एक पर एक चडी हुई थी। प्रार्थना के बाद दर्द ख्तम हो गया था परन्तु यह स्पष्ट था की कोमलास्थि नहीं बड पाई थी क्योकी आप हड्डीयाँ पर हड्डीयाँ महसूस कर सकते थे। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यह औरत उस रात दर्द से मुक्त हो कर गई।

मेरे मुताबिक, चंगाई की सेवा में यह अच्छा है की हम दर्द को और बिमारी को जो दर्द दे रही है उस को अलग रखें। मैं दर्द और उस बिमारी को जो दर्द दे रही दो अलग चीजें समझता हुँ। उदाहरण के लिए जोडों के दर्द की बिमारी और जोडों का दर्द। जब मैं जोडों के दर्द के व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता हुँ तो पहले दर्द से निबटता हुँ और हाद में बिमारी से। मैं अधिकार से जोडों के दर्द को यीशु के नाम से जाने को कहता हुँ और ९०प्रतिशत लोगों में ३५-५० प्रतिशत दर्द तुरन्त चला जाता है। दर्द से मुक्ति पाते ही उस व्यक्ति का परमेश्वर में विश्वास और भरोसा बढ जाता है। जब दर्द दूर हो जाता है तब में उस जोडों की बिमारी से अधिकार के साथ कहता हुँ की यीशु के नाम में उस की देह छोडने को कहता हुँ। जब मैंने अधिकार के साथ दर्द और बिमारी को दूर होने को कह देता हुँ तब आत्मा व्दारा अगुवाई पाकर अभिषेक में रहते हुए चंगाई से मिठी बातें करता हुँ। दूसरे शब्दों में अभिषेक के बहाव में कहते हुए मैं प्यार और दया के साथ शरीर के भागों से कहता हुँ की वे ठीक हो जायें और यीशु के नाम में सामान्य हो जाए। तो जब मैं बिमारी या उसके कारणों को आत्मिकता से अभिषेक के साथ व्यवाहर करता हुं, परन्तु जब शारिरिक देह से बात करता हुँ तब प्यार और दया के साथ बात करता हुँ। मैंने देखा की यह अच्छा कार्य करता है।

फ्रैंक, जुलाई २००३: हमारी एक धाय पालित बेटी है जो पिछले सप्ताह हमारे पास आई थी। उस का नाम दानियल्ला है। उसने मुझे कई बार घर पर दूसरों को चंगाई देते देखा है। उसे विश्वास नहीं है। उसे केवल यीशु का नाम पता है। दानियल्ला १३ वर्षीय, पुष्ट, दृढ इच्छुक और बुराई से भरी हुई है- वह उस तरहा की बिलकुल नहीं है जो आप सोचते हो की दैवी चंगाई के प्रती जिज्ञासुक हो। वह ऊपर नीचे कूद रही थी, और उस का पैर मुड गया और उसके घुटने में दर्द होने लगा। वह मेरे पास आकर कहने लघी की क्या किसी तरहा मैं उसका दर्द दूर कर सकता हुँ। मैं कुछ देर सोचता रहा और परमेश्वर से पूछने लगा की मैं क्या करूँ, क्या यह सही होगा की मैं अपना हाथ उसके घुटने पर रख कर प्रार्थना करूँ। सो मैंने उसे बैठने को कहा और जो

भी मैं कहुँ उसे वह करे। सो वह बैठ गई। दूसरे बच्चे भी बैठ कर देख कहे थे की क्या हो रहा है। क्योंकी दानियल्ला को परमेश्वर के बारे में कुछ भी नहीं पता था, सो मैंने सब कुछ बहुत आसान रखा।

मैंने दानियल्ला से कहा की यीशु की देह और खून से उसे चंगाई मिल सकती है (यशा ५३:५, १ पतरस २:२४) और फिर उससे पूछा की क्या वह इस पर विश्वास करती है। उसने कहा, "हाँ।" मैंने उससे कहा की क्योकी वह विश्वास करती है की यीशु की देह और खून से उसे चंगाई मिल सकती है, इस कारण वह चंगाई पा सकती है। उसने कहा, "ठीक है।" मैंने उससे कहा की यीशु की देह और खून से उसे चंगाई मिलना उसका हक है बिलकुल उसी तरहा जैसे की उसे संयुक्त राज्यों में उसके अमरीकी होने का खुछ अधीकार है। उसने कहा, "हाँ।" मैंने फिर दानियल्ला से कहा की वह अपना हाथ घुटने पर रखे। उसने वैसा ही किया। मैंने उससे कहा की मैं प्रार्थना में उसकी अगुवाई करूँगा और हम दोनों मिलकर दर्द को दूर करेंगे। मैंने उससे कहा की मैं जो भी बोलूँ उसे वह धीरे से दोहराये। उसने कहा, "ठीक है।" मैंने उसे बताया की वह धीरे पर उतने ही अधीकार से बोले दितने की मैं बोल रहा हुँ क्योकी उसे अधिकार है की वह यीशु की देह और खून से उसे चंगाई पाए और उसने कहा, "ठीक है।" सो, दानियल्ला ने अपना हाथ घुटने पररखा और जो मैं कह रहा था उसे दोहराने लगी। मैंने उससे अधीकार से कहाने को कहा, "दर्द, तू अब यीशु के नाम में मेरे शरीर को छोड कर जायेगा। दर्द अभी इसी वक्त यीशु की देह और

खून का आदेश सुन और मेरे शरीर को छोड़ कर चाल जा। उस के घावों के कारण मैं चंगा हो गई। "फिर थोड़ी देर के लिए मैं खामोश हो गया। फिर दानियल्ला की आँखें अचंम्बे से बडी हो गईं और वह खुशी से चिल्लाने लगी, "दर्द चला गया। दर्द चला गाया।" वह उठ कर किचन तक दैड़ी, मेरी पत्नी को पकड़ कर कहने लगी दर्द चला गया। दर्द चला गाया। "मैं हँसा और परमेश्वर का धन्यवाद किया।

**फ्रैंक, जुलाई २००३:** मैं यह चंगाई की कहानी आप के साथ बाँटना चाहता हुँ क्योंकी यह बिलकुल जो मैं करता हुँ उस का आदर्शभूत है। यह कहानी प्रतीरोज़ की सामान्य चंगाई की है मैं अपने एक ग्राहक के घर गया और वह एक बगल को पकड़े हुए थी, मैं ने पूछा की क्या हुआ। उस ने कहा की छः महीने से उस के बगल में दर्द था और डॉकटर ने उसे गोलीयाँ दी उस से कुछ फायदा नहीं हो रहा था। मैं उस के घर कई बार जा चुका था, इसलिए मैंने कहा मुझे तुम्हारे लिए प्रार्थना करने दो। उस ने कहा "ठीक है।" मैंने उसे बताया की चंगाई जब मिलती है तो ऐसे लगता है जैसे दर्द के क्षेत्र में गर्मायी जा रही हो और अकसर उस व्यक्ति को तुरन्त अच्छा लगने लगता है और कुछ घंटों बाद दर्द पूरी तरहा से चला जाता है। उस ने कहा ठीक है। मैने उस के बगल में जहाँ दर्द था, उस से अपने हाथ को दो इंच की दूरी पर रखा। इस बात का पूरा विश्वास पाकर की यीशु की देह और खून के आधीकार से ( यशायाह ५३:५; १ पतरस २: २४) और इस बात का पूरा विश्वास की पवित्र आत्मा की शक्ति मेरे लिए उपयोग के लिए उपस्थित था (प्रेरित १:८; १ कुरि १४:३२;१२:७) मैने प्रार्थना

करनी शुरू कर दी और जान बूझ कर अभीषेक को मेरे हाथों पर आने दिया जो उस के दर्द से दो इंच की दूरी पर था। मैंने उस अभीषेक को अपने हाथों के द्वारा उस औरत के बगल तक जाते हुए अनुभव किया। तब मैं ने अधीकार के साथ कहा, "दर्द तू यीशु के नाम से अभी और इसी वक्त इस औरत की बगल से निकल जा। तू यीशु की देह और खून का आदेश सुनेगा। उस के घावों के कारण यह शरीर तंदरूस्त हुआ है। इसी वक्त इस औरत के शरीर को छोड़ दे। है पिता धन्यवाद है तेरी उपस्थिती के लिए और शक्ति और चंगाई के अभीषेक के लिए भी और तेरा धन्यवाद हो यीशु की देह और खून के लिए"।

फिर मैने बहुत ही नम्र आवाज़ मे कहा, अब हे प्रभु हम इस शरीर की पूर्ण चंगाई को यीशु के नाम से धोषित करते है। अब इस शरीर को पूर्ण रूप से ठीक कर। जैसा लिखा गया है, वैसा ही हो, धन्यवाद हो परमेश्वर।" जब मैं यह प्रार्थना कर रहा था, अभीषेक उस औरत की बगल में जा रहा था। यह सारी प्रार्थना मानों १५ सेकंड़ भी नहीं लगे। उस औरत ने बताया की ५० प्रतिशत दर्द जा चुका था उस ने यह भी कहा की वह गर्मी को अपने शरीर में महयूस कर रही है ऐसे जैसे की मैंने कोई गर्म तरव्ता उस के चर्म पर रख दिया हो। मैरा हाथ तो उस से २ इच की दूरी पर था। जब एक घंटे बाद मैं उस के घर से निकला, तब तक उस के शरीर का पूरा दर्द जा चुका था और उस ने परमेश्वर की ताकत और प्यार को देखा। मेरे लिए तो यह हर दिन का अनुभव है और सामान्य रूप से चंगाई का तरीका। इस किताब के लिखने का मुख्य कारण यह है की हम विश्वासीयों को बता सकें की तुरन्त अभीषेक करके चंगाई कैसे पा सकते है।पवित्र आत्मा की ताकत को किसी कारण के लिए और अपनी इच्छा अनुसार कैसे प्रयोग कर सकते है। (१ कुरि १४:३२)।पवीत्र आत्मा की ताकत को जान बूझ कर अपनी इच्छा अनुसार पाप, बिमारी और रोग काम करने के लिए इसे प्रयोग किया जा सकता है। क्योंकी पवित्र आत्मा की ताकत हमोर लिए परमेश्वर से उपहार है जो हमें यीशु की देह और खून के द्वारा मिला है ताकी हम शैतान के कार्यों को नष्ट कर सकें (१ यूहन्ना ३:८; यूहन्ना १४:१२,१६:७; प्रेरिता १:८)। इस कारण हमें परमेश्वर से पाने में और उसकी चंगाई के अभीषेक के प्रयोग मे परीपूर्ण होना है।

**रीजेट विश्वविद्यालय अंतराष्ट्रीय विद्यार्थी अगुवों का स्कूल, जुलाई ३१, २००३,** पिछले गुरूवार की रात (जुलाई ३१), गैरी ने एक पाठ पढ़ाया, बाईबली और व्यवाहारीक बुनियादों पर जिस से आप परमेश्वर की आवज को सुन सकते है और भीवष्यवादी अगुवा बन सकते है और प्रचार की ताकत से, विश्वविध्यालय में यीशु के चंगाई के कार्य कर सकते है। विलियम और मेरी के तीन विघार्थी, जिन को हमने पिछले साल हम ने प्रशिक्षीत किया ता, उन्होंने हमारी मदद की अंतराष्ट्रीय विघार्थीयों को सिखाने में। वे दो दो के झुण्ड मे बट गए और एक दूसेर के लिए प्रार्थना करने लगे, तो उन्हों ने परमेश्वर की आवाज को सुनना सीख लिया

परमेश्वर ने हम पर और उन विलियम और मेरी कॉलेज के विद्यार्थीयों पर ज़ाहिर किया की वह उस रात कई तरहा की बिमारीयों मे थी। मैं ने मन की आँखों से परमेश्वर को देखा जो अपने शरीर में विभिन्न भागों की ओर इशारा करके संकेत दे रहा था की इन लोगो में कहाँ कहाँ बिमारीयाँ हैं जो ठीक होती हैं। बैथरीन और उन विलियम और मेरी कालेज के विद्यार्थीयों ने इन्हीं भागों के बारे में परमेश्वर से सुना - परमेश्वर उन्हे चंगा करना चाहता था जो परेशान थे भयंकर पीठ का दर्द, गर्दन का दर्द, पेट दर्द और पेटमें तनाव और कमर दर्द और वह जिस के दाहिने हाथ में दर्द था। परमेश्वर ने पूरी शक्ति से पाँच विद्यार्थीयों को पकड़ा। एक डोनेसिरा का पादरी था जिस के पेट में गलती से मुक्का पड़ गया था जिस के कारण दर्द उस के पेट से उठता और कमर तक जाता। हमे परमेश्वर ने प्रार्थना के माध्यम से उस से कहने को कहा की वह मूर्ती बूजा करना छोड़ दे (जो की ऐशीया के बोध पूज़को को ज्यादा था) और परमेश्वर उस के खानदान की मूर्ती बूजा के इतीहास को छोड़ देगा। उस की इच्छा जान कर मैं ने अपना हाथ उस के पेट और कमर पर रखा और कुछ और लोगों के साथ मिल कर उस के लिए प्रार्थना की। हम ने परमेश्वर की आत्मा से कहा की वह यीशु की चंगाई की ज्योती और शक्ति को उस के पेट पर और तीव्र करदे। फिर परमेश्वर ने मेरी अगूवाई की और मैने २-३ बार आदेश दिया की पेट का दर्द चला जाऐ और यीशु की देह और खून का आदेश माने, जिस के थावों के कारण यह व्यक्ति ने चंगाई पाई है (यशा ५३:५; १ पत २:२४)। उस ने तुरन्त अनूभव किया की वह भयंकर दर्द उस के पेट और कमर को छोड़ कर जा चुका है और वह पूर्ण रूप से स्वस्थ है - वह अपने शरीर के ऊपरी हिस्से को बिना किसी दर्द के कहीं भी मोड़ सकता था। नेपाल से एक विद्यार्यी जो वर्लड बैंक में काम करता था, उस ने कहा की उस के पैर की नसों में कुछ खराबी थी, जिस के कारण वह रात में सो नहीं पाता था। जो उस के लिए प्रार्थना कर रहे थे उन्होंने प्रार्थना के माध्यम से उस से कहा की वह बचपन से जो मूर्ती पूजा करता आरहा है उसे छोड़ दे और परमेश्वर उस के खानदान के मूर्तीपूजा के इतीहास को माफ कर देगा। हम ने पवित्र आत्मा से कहा की वह यीशु की चंगाई की शक्ति और ज्योती को उस के पैरों पर डाले और मेरे मन की आँख ने, डर और बेचैनी के शैतान को उस के पैर को तंग करते देखा। उस ने कहा की उसे ऐसा लगा जैसे कुछ चला गया" हो, और उस के पैर पर पूरी शक्ति छा गई हो, जब हम ने प्रार्थना में आदेश दिया की बेचैनी उस के पैरों को छोड़ कर जाऐ और फिर कभी भी वापस न लौटे। दो व्यक्ति थे जिन की गर्दन और कंधों में भयंकर दर्द था, प्रार्थना करने पर वह पूर्ण रूप से ठीक हो गए। दोनों स्थितीयों मे परमेश्वर ने हमारी अगुवाई की और हम ने दर्द को आदेश दिया की वह

उन के शरीर को छोड़ कर चाल जाऐ और यीशु की देह और खून का आदेश सुने जिस के धावों के कारण इन्होंने चंगाई पाई है। एक महिला जिस के दाहिने हाथ में दर्द था वह ठीक हो गयी, जब विद्यार्थायों ने उस के लिए प्रार्थना की परमेश्वर की तारीफ हो। हम एक अदथुत परमेश्वर की सेवा करते हैं।

**गैरी, जून २००३:** मेरे स्तुती और प्रार्थना के समय, जब मैने फ्रैंक के प्रस्ताव को प्रयोग में लाया मैंने परमेश्वर पर ध्यान लगाया और कहा की वह मेरी मदद करें की मैं पवित्र आत्मा के अभीषेक को अपने फेफड़ों और गले पर ले जाऊँ (जहाँ पर एक विशैला संक्रामक रोग से मैं लड़ रहा था)। अभिषेक मेरे हाथों द्वारा वहाँ पहुँचा और मैंने विश्वास का चित्र बनाया कि परमेश्वर की ज्योती इन भागों में प्रवेश कर रही है और मैने परमेश्वर की उपस्थिती का धन्यवाद दिया और आराधना की। मैने आभीषेक को शरीर उस भाग पर बनाऐ रखा, परमेश्वर  का धन्यवाद करता रहा की उस ने उसे वहाँ केंद्रित किया है और कुछ अधिक देर तक माँगता रहा। मैं इस में २० मिनट तक भीगता रहा जब तक मैंने अपने आप को आत्मा से परीपूर्ण नहीं पाया जिस के मुझे आभास हुआ कि मैं इस में पूर्ण रूप से भीग चुका हुँ।  यह अच्छा था और मुझे लगा की मैं ५०% इस विशैली संक्रामक रोग से छुटकारा पा चुका हुँ। और अधिक प्रार्थना के बाद और कुछ आक्रमण से मुक्त क्रम को उत्तेजक न्यूनता पूर्ती लेने के बाद एक दिन के अंदर मैन इस रोग से छुटकारा पा लिया।

**मार्क, मई २००३:** टौरन्टो एयरपोर्ट क्रिस्तिएन फैलोशिप में एक हफ्ता पढने के बाद मैं अभी लौटा ही था। हमने उस हफ्ते में तीन चंगाईयाँ देखीं।  केवले तीन के लिए प्रार्थना की थी इसलिए नतीजा १००% रहा। परमेश्वर की स्तूती हो।

हम ने कक्षा को तीन झुण्डों में बाँटाँ। हर झुण्ड में ५-६ लोग थे और हर झुण्ड ने २० मिनट तक हाथ रख कर  प्रार्थना की। एक सर दर्द पूर्ण रूप से चला गया, एक की देखने की क्षमता और एक की साँस की बिमारी जो उसे ३ साल की उम्र से थी।

यह बहुत दिलचस्प था। मैं ते यह अगूवाई पाई की मैं उन से कहूँ की वे पवित्र आत्मा से पूछें की इस बिमारी का मूल कारण क्या है और फिर वे अपना ध्यान चित्रों के बहाव और विचारों के बहाव में लगऐं। वह लड़की जिस को साँस की बिमारी थी, उस ने अपना २-३ साल की उम्र का चित्र देखा की वह पालने में लेटी है और उस ने छींक मारी और कुछ उस के अंदर प्रवेश कर गया। मैंनें अनुमान लगया की वह शैतान था और हम ने मुक्ति की प्रार्थन करी। फिर वह इमारत के चारों ओर दौड़ने लगी और ५०% ठीक हो गई थी। अगले दिन हम ने फिर उस के लिए प्रार्थना की और उसने देखा की उस के पालने के पास यीशु आकर कह रहे है, "नहीं तुम्हें यह नहीं मिल सकता", और उन्होंने उस  शैतान को उस में से खेंच बाहर निकाल फेंका। वह फिर बाहार गई और इमारत के ३ चक्कर लगाऐ और पूर्ण रूप से चंगी हो गई।

वह लड़की जिस की दृष्टि कमजोर थी उसके मन में विचार आया की जब उस की दृष्टि कमज़ोर हुई था, वह ८ साल की थी और अपनी माँ के साथ, कार में बैठी हुई थी। उस की एक सहेली ने तब ही दृष्टि कमज़ोर होने के कारण चश्मा पैहना था। उस ने सोचा की चश्मा बहुत अच्छा लग रहा है सो उसने अरनी माँ से कहा की उस की दृष्टि कमज़ोर है और उसे चश्मे की ज़रूरत है। उस की माँ ने कहा नहीं उस की दृष्टि बिलकुल ठीक है क्योंकी सडक के पार जो लिखा हुआ है वह उसे आसानी से पढ़ पा रही है। उस लड़की ने कहा नहीं वह नही पढ़ पा रही है और सच में उसकी दृष्टि खराब हो गई। सो उस ने प्रार्थना में उस ने अपने अधर्मी यकीन को की "चश्मा बहुत अच्छा है" और उस के अंदर की प्रतिज्ञा को की "मुझे चश्मा चाहीए क्योंकी हैं देख नहीं पा रही हुँ," के लिए माफी माँगी और हम ने शैतान को डाँटा और जो भी शैतान इस से जुड़ा हूआ था उस को निकाल बाहार किया। उसकी दृष्टि इतनी अच्छी हो गई की उस को गाडी चलाते में भी चश्में की ज़रूरत नहीं पड़ी।

मेरे ख्याल मे यह ठीक है की हम अपने ग्राहकों से कहें की वे खुद पवित्र आत्मा से बिमारी का मूल कारण पूछे। अपना ध्यान वे खैच्छिक विचार और चित्रो की ओर लगाऐं और जब तक परमेश्वर की ओर से दैवी दर्शन नहीं पाते तब तक खामोश रहें। फिर आवश्यक्ता अनुसार प्रार्थना कर उस बिमारी को जड़ से निकाल बाहर फेंके।

**डेविड रूलमैन, मेई २००३:** हफ्ते के आखरी दिनों में हमारे ३० घंटे के आराधना एंव आपस में बात चीत के वक्त एक बहुत ही नाटकीय घटना हुई। सुबह के वक्त हम सब अपने शहर के अगुवे कि लिए शक्तिपूर्ण प्रार्थना करने लगे। हमने प्रार्थना करी की मानसिक उपस्थिती और व्याकुलता टूट जाए और मानसिक बिमारी खतम हो जाऐ। यह प्रार्थना खास तौर पर पादरीयों और अगुवों के लिए थी। प्रार्थना करते में ऐसा अनुभव हुआ जैसे उन लोगों को स्वर्गदूतों न उठा कर उस आराधना ग्रह से बाहार फेंक दिया हो। हम प्रार्थना अभी कर ही रहे थे की एक पादरी दर्वाजे पर आया और चिल्ला कर कहने लगा, "तुम क्या प्रार्थना कर रहे हो? मैं अपने कमरे में था जब मुझे एक बादल दिखाई दिया और मैंने परमेश्वर की आवाज़ सुनी, "तुम चंगे हो गए हों।" मुझे पता है की तुम प्रार्थना कर रहे हो और मैं मज़बूर था की मैं यहां आऊँ और अपनी चंगाई की गवाही दूँ। वह पादरी एक साल से और उस दिन तक परेशान था मानसिक तनाव, खून के बहाव मे तीव्रता जिस की शुरूआत पिछले अप्रेल में हुई, जब दिल के रोग के कारण छः घंटे तक वह अपना जीवन घंवाँ चुका था। आज मैंने उसे देखा और उस के खन की तीव्रता ११६ पर ७८ था और उस के आने की सुबह से लेकर आज तक वह न कभी व्याकुल और न ही पिडीत हुआ। धन्यवद हो यीशु ।

**एल डब्लयू विल सन ऐज़ेकियल मिनिस्ट्रीज़, मई २००३:** मैन सोचा की मैं इस बात को लिख लेता हुँ। "सामान्य बनो" की सभा के वक्त जब हम चंगाई के लिए प्रार्थना कर रहे हो तो मैं ने सामने आकर आस पडोस की सूक्ष्म ग्रहिता के लिए प्रार्थना की। इस प्रार्थना मे मैंन विश्वास की चित्र पर दबाव डाला। मैं अधिक प्रसन्नात से कह रहा हुँ की ज्यादातर चीज़े जिन से मुझे सर दर्द होना था, वे आब मुझे परेशान नही करती।

प्रार्थना के वक्त, मैने यीशु को अपने सामने खडे हुए पाया वे अपनी बाहें फैलाये हुए थे। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे, मैं कही बाहार खड़ा हो कर अपने आप को देख रहा हुँ और फिर ऐसे हुआ की मैं एक चमकती स्फेद थैली में गायब हो गाया। आचानक, वह फट गया और मैं वहा था परन्तु बिल्लकुल पारदर्शक । मेरा शरीर था, परन्तु उस के आर पार देख सकते थे। ऐसे जैसे की रौशनी में एक बारीक पन्ने को रख दो, मेरे शरीर मे कहीं भी कुछ दाग नहीं थे, कोई भी काले धब्बे नहीं थे। मै साफ था। मैं समझ गाय की इस का मतलब है की मैं चंगा हो गाया। तुरन्त सभा के बाद मैं अपनी पत्नी के साथ उन दो जगाहों पर गया जहाँ जाने से मैं डरता था। सीअरस इत्र की दूकान और "द बौडी शौप"। वहाँ जाने पर मुझे भयानक सर दर्द होता था। मैं वहाँ ४५ मिनट तक रहा परन्तु मुझे तनिक भर भी दर्द न हूआ। मेरी पत्नी ने एक नया इत्र खरीदा, पर मैंने परमेश्वर का धन्यवाद दिया और उस की स्तुती और महीमा की और यीशु के नाम क बढ़प्पन माना। धन्यवाद हो आप के विश्वास के लिए और परमेश्वर के प्रती आप की आज्ञापलन के लिए।

**बिल्ल एफ, मार्च २००३**

प्रिय कैथी और कैरोलीनः

मैं तुम्हे बताना चाहता था की पिछले सप्ताह अपने क्षेत्र की चंगाई संस्था मे क्या हुआ। रवीवार की रात को कौरनर स्टोन में एक सभा हुई। मंगलावार को हम नौरगे, वी.ऐ. गऐ और पिछली रात हम स्ट्रैटफोई हिल्स गए।

कारनारस्टोन :

एक अगुवे ने साक्षी दी की इस प्रार्थना में आने से एक महीन के पहले, उसे डॉक्टर ने बताया था की उस के घुटने को पूर्ण रूप से बदलना परेगा। उस ने सारे इंतजाम कर लिए थे और फिर उस ने सोचा की इस सभा मे शमिल हूआ जाऐ और उसे ऐसा लग रहा था जैसे परमेश्वर उस के घुटने को ठीक करेगा। वह सामने आए और हम ने उस के लिए प्रार्थना की। वह फिर अपने डाकटर के पास गया और वहाँ उसे पता चला की उसे घुटने बदलने की आवश्यक्ता नहीं है और जो कमी डॉकटर को उस के घुटने मैं लगी वह थी जलन। हमने रविवार की रात फिर उस के लिए प्रार्थना की परन्तु मुझे जलन के बारे में अभी पता नहीं चला।

एक औरत सभा के वक्त आगे आई। जिस का पेट का आपरेशन होने वाला था। उस के पेट में दो फोड़े थे जो उसे बहुत दर्द पहूँचाते थे। उस की माँ और नानी दोनों को कैंसर था। डॉकटर काफी उत्सुक था क्योंकी वह उन के घर का इतीहास जानता था। इस कारण उस ने यंत्र चिकित्सा का प्रस्ताव रखा। वह रवीवार की रात को आई और मैंने उस के लिए प्रार्थने करी। प्रार्थना के बाद मैंने उसे ऐसा कुछ करने को कहा जिस से उसे दर्द होता था। उसे सीड़ी चड़ते उतरते दर्द होता था। इतना ज्यादा होता था की वह एक वक्त में

सिर्फ दो सीढ़ियाँ चढ़ पाती थी।

मैंन उस सभा ग्रह में जो सीडीयाँ थी उन पर चड़ने को कहा (जो तीन सीढ़ियाँ थी)। जब वह चढ़ने लगी तो उस ने अनुभव किया की सारा दर्द जा चुका था। उसे प्रार्थना के वक्त कुछ नहीं लगा बस इतना की मैंने कहा की तुम चंगी हो गयी। फिर भी वह यकीन नहीं कर पा रही था सो सोमवार को वह अपने डॉक्टर को दिखाने गयी। उस ने उस की पूरी जाँच करी और कहा की यंत्र चिकित्सा की ज़रूरत नहीं दै। वह पूर्ण रूप से स्वस्थ थी।

मुझे यह ई-मेल एक महिला से मिली जो हमारी आराधन की सदस्या थी। उस ने मुझे यह शाम की सभा के बाद भेजा। मुझे नहीं पता था की कुछ हुआ है।

"आज की रात, मैं वहाँ बैठी थी और तुम मेरे सामने खड़े हो कर परमेश्वर की शारीरिक चंगाई के बारे में बता रहे था। मैंने उतनी गंम्भीरता से या सच्चाई से यूहन्ना ३ के बारे में कभी नहीं पढ़ा था, गिनती के उस भाग को भी कभी नही पढ़ा था। परन्तु अचानक परमेश्वर ने मेरे सामने शादी के वादो को ला कर रख दिया "अच्छे वक्त में और बुरे, बिमारी में और तंदरुस्ती में जितने दिन हम जीवित रहेंगे", और मैं रोने लगी। मैं जानती हुँ की तुम समझ जाओगे की बिना शब्दों का प्रयोग करे परमेश्वर मुझ से क्या कहना चाहता था। यह ऐसे था जैसे चाहे मैं परेशानी में हुए पर फिर भी मै उस की दुल्हन हुँ और वह मुझे उसी गहराई से प्यार करता है। मैं भी उसी तरहा जवाब दे रही थी बिना बोले मैं शादी के वादो को दो राह रही थी और उसे अपना पती बना रही थी। यह इतना आनन्दमय था"।

नौरगे, वीए,

मंगलवार की रात, नौरगे, वीए में एक महीला सभा मे आई वह अपना बाँयाँ हाथ नहीं उठा पा रही थी और उस में निमोनीया के आसार दिख रहे थे। सभा में सिर्फ बैठ कर उस ने चंगाई पाई। किसी ने उसे छुआ नहीं, किसी ने उस के साथ प्रार्थना नहीं करी। वह आखिर में उठ कर आई और उस ने बताया की क्या हुआ।

एक बूढे आदमी के दाहिने कंधे में हड्डीयों की जोडों में दर्द था। वह अपने हाथ को कंधे तक नहीं उठा पाते थे और उस की यह हालत कई सालों से थी। जब हमने उस के लिए प्रार्थना करी, तो उसक सारा दर्द निकल गया और वह अपने हाथों को सर के ऊपर उठाने लगा और घुमाने लगा।

एक व्यक्ति जिसे लकुआ मार गया था और वह पईये वाली कुर्सी पर बैठे रहता था, वह सभा में नहीं आया, परन्तु जो लोग उसे पहचानते है उन्होंने बताया की वह हमारी पिछली सभा के बाद उन्नती कर रहा है। उस ने गिरजाघर में साक्षी दी की परमेश्वर ने उस के बायें तरफ को छुआ और वह स्पर्श को अनुभव करने लगा।

मैन एक व्यक्ति के साथ प्रार्थना की, जिसकी दाहिनी आँख में मोतीयाबिन्द की शास्त्र

चिकित्सा के बाद दर्द था । प्रार्थना के बाद दर्द गायब हो गया।

पिछले तीन महीनों से, एक औरत को भयंकर एक तरफा सरदर्द था। उस के लिए प्रार्थना करी और वह तुरन्त ठीक हो गायी।

**स्ट्रैटफोई हिल्स:**

साक्षी के वक्त, एक औरत जिस के साथ मिलकर पिछले हफ्ते मैने प्रार्थना करी थी, उस ने गवाही दी। वह पिछले हफ्ते आई थी क्योंकी डॉक्टर ने उस की पीठ पर एक चर्म रोग देखा था। वहाँ पर एक तिल था जो कैंसर में बदल चुका था। वह आई और मैंने उस कैसर को शापित किया और आदेश दिया की वह सूख कर गायब हो जाऐ। उस ने कहा की उस हफ्ते में, वह तिल उस की पीठ पर से गिर गया और वह पूरा क्षेत्र चंगा हो गया।

एक और महीला ने साक्षी दी की उस के सर में जो एक तरफा दर्द उठता था, जब मैंने अकटूबर में उस के लिए प्रार्थना करी, वह गायब हो गया, ।

मैंने एक महीला के साथ लगभग एक महीने तक प्रार्थना की उस के कमर और कुल्हे के दर्द के लिए। पिछले हफ्ते मुझे गुस्सा आ गया। उस पर नहीं परन्तु उस दर्द पर जो बार बार लौट आता था, तो मैंने और ताकतवर आदेश दिया चंगाई के लिए। उस ने पिछली रात बाताया की वह दर्द फिर वापस नहीं लौटा और पिछले हफ्ते पूरे दर्द रहित रही है।

मैं ने प्रार्थना संस्था के अधीकारी के साथ मिल कर करी। वह मेरी सभा में आई थी क्योंकी उस का एक दाँत सड़ गया था और मैंने अपना हाथ उस के चेहरे पर रखा, वह इतनी गर्म हो गयी की उस को पसीन आने लगा और कहा की वह जल रही थी। मैंने आज उस से बात की और उस ने बताया की दर्द पूर्ण रूप से जा चुका था। मैंने एक औरत के लिए प्रार्थना करी जो एक कार ऐक्सीडेंट के बाद, कधे और गर्दन में भयंकर दर्द उठता था। वह प्रार्थना के बाद कुछ आराम महसूस करने लगी परन्तु पूर्ण रूप से दर्द से मुक्ति नही मिली थी।

वह औरत जो न्यासर्ग के बहकावे में आ जती थी, उस ने कहा की वह अब आराम से सो रही है और प्रार्थना के बाद उसका न्यासर्ग संतुलित हो गया है। तो तुम दोनों को हफ्ते का अंतिम दिन खुशनुमा हो। काश तुम दोनो उस के राज्य को इस दुनिया में लाने के लिए लगे रहो और काश यह दुनिया देखे और विश्वास करे। आशीश के साथ, बिल।

**बिल एफ फेब ११.२००३:** नौरगे, वीए संस्था केद्रं - फरारी ११२००३ बिल फीलडिगं, चेस्टरफीड़ वी.ए.२३८२८ डव्लयू फीलडिगं @जुनो, कौम हाई कैरोलिन,

जब प्रचार का समय था तो मैं एक व्यक्ति के पास गया जो की लकुए के कारण पईए वाली कुर्सी पर बैठा हुआ था - हो सकता है कई सालो से । उस का पूर बायाँ तरफ उस की चपेत में था। बाये तरफ के चेहरे पर गर्दन और कंधा, बायाँ हाथ और बायाँ पैर, बिलकुल सुन

पड़ा हुआ था।

उस का बायाँ हाथ मुड़ गया था, और अंगुठा उँगलीयों से डबा हुआ था, बायाँ तरफ पूरा चण्ड से जम गया था और हाथ बर्फ की तरहा ठण्डा था। हाथ छाती तक खिंच आया था और सक्त हो गया था। बायीं कलाई मुड़ कर सक्त हो गई थी। वह उस व्यक्ति की तरहा लग रहा था जिस का हाथ मुर्झा गया हो।

एक महीने पेहले जब वो सभा में आया था तो उस ने सर दर्द से चंगाई पाया था।

जब पादरी ऐण्डरसन ने हम लोगों से कहा की लोगों मे जाओ और उन के लिए प्रार्थना करना शुरु करो, तो मैं उस व्यक्ति के पास गया। मैं ने उस का बायाँ हाथ लिया और प्रार्थना करनी शुरू कर दी और आदेश दिया की उस का हाथ ढ़ीला हो जाए और फैल जाए। मैंने दूसरों को चमत्कार के लिए प्रार्थना करते सुना था और कई बार चमत्करा उस व्यक्ति के साथ होता है और वह उन कार्यों को करने लगते है जिन्हें वह नहीं कर पा रहा था। सो मैंने उसका हाथ पकड़ कर आदेश दिया की वह हाथ खुल कर फैल जाऐ और में उसे खेंचने लगा। जब मैं यह करने लगा तों हाथ आगे आने लगा। उसकी पत्नी के मुताबिक यदी मैं उस से पेहले ऐसा करता तो उस के कंधे मे भयंकर दर्द होता था अब कोई दर्द नहीं था कहीं भी और मैं उसका हाथ हिलाने लगा, आगे पीछे एक तरफ से दूसरी तरफ और फिर ऊपर और नीचे। वह ताजूब मे बैठा रहा की क्या यह उसी का हाथ है। मुझे नही पता की कितना समय हुआ होगा इस हाथ को इस तरहा हिलते हुए, परन्तु सारी रात किसी भी भाग में दर्द नहीं था।

जब मैंने ऐसा किया तो मैंन उस के शरीर को आदेश दिया की वह अनुकूल होना शुरू करे, उस के पूरे शरीर के बायें हिस्से मे स्पर्शता लौट आई। मैं बीयी तरफ कहीं भी हाथ लगाता तो उसे मेरा स्पर्श अनुभव होता - उसके चेहरे, हाथ और पैर। इस से पहले यह सब सुन थे।

मैन उस के साथ मिलकर एक घंटे से भी अधिक देर तक प्रार्थना करी। इस समय उसा का हाथ सीधे से बाहार को निकल आता। उस का हाथ खुल गया था।

उल का अंगुठा हिलने लगा और बिना तकलीफ को ऊँगलीयाँ खुल गईं पर पूरे रूप से नहीं। कई बार ऐसे लगता था जैसे माँसपेशीयाँ सिकुड़ कर फिर से मुड़ जाना चाहती हों। मैं प्रार्थना करता और उस के शरीर से आराम करने को कहता। जब मैं ने उस को आराम करने को कहा तो उस के शरीर ने वैसा ही किया, और महसुस कर सकते थे की खिंचाव गायब हो गया और माँसपेशीया ढीली पड़ कर आराम करने लगीं। यह सच में आश्चर्यजनक था। ऐसा लगा जैसे जब भी वह अपेन फैले हुए हाथ को देखता - अपने मस्तिष्क में उसे लगता की वह शरीर की ओर वापस खिंचा आ रहा है और आप अचानक महसूस करते की वह वापस खिंच कर बन्द हो रहा है। जैसे ही मैंन कहा "शरीर शांत हो जाओ या हाथ शांत हो जाओ, तो

खिंचाब बन्द हो जाता और माँसपेशीयां आराम करती और वह फिर फैल जाता। मैंन उस के पैर के लिए भी प्रार्थना करी। प्रार्थना के बाद वो कुछ इंच की दूरी तक अपने पैर को उठाने लगा, जो वह पैहले नहीं कर पा रहा था। उसने पैर को पईये की कुर्सी पर जो पैर रखने की जगाह है वहां से हटा कर कुछ इंच ऊपर उठाया। उस का पूरा बायाँ तरफ गर्म हो गया और गर्दन के ऊपर का हिस्सा तो ज्यादा गर्म था। बर्फ से ठण्डा हाथ गर्म होने लगा जो की दाहिने हाथ से भी ज्यादा गर्म था।

वह व्यक्ति और उस की पत्नी अचंम्बीत हो गऐ। हम बस भयत्रस्त हो देखते रहे। यह कितनी आशीष की बात थी की ऐसा होते देख रहे थे। वह पईये वाली कुर्सी को छोड़ कर यह नहीं चिल्लाया की "मैं चंगा हो गया"। परन्तु वह उन कार्यों को करते हुए गया जिन्हे वह नहीं कर पा रहा था। मैं ने अनुभव किया की जब मैं उस का हाथ ले कर आदेश दिया की वह हिलने लगे और फिर जब मैं हाथ को खेंचने लगा, तो चंगाई का क्रम वहीं से शुरु हुआ। १ कुरि १२:१० मे, पवित्र आत्मा की स्पष्टता ही "चमत्कार के काम करती है" और मुझे काम करना पड़ा उस के हाथ और पैर ताकी वह महसूस कर सकें की उस से दर्द नहीं होता है - वह अनुभव कर सके और वह अंदर बाहर हिलने लगां। वह खुद भी उस को हिलाने लगा - यह केवल मेरे हिलाने से नहीं था। वह कई बार फुलकित हो उठा और आप देख सकते थे की वह विश्वास कर रहा था की यीशु ने उसे छुआ है। में इस मे इतना आशीषित हुआ। जब हमने खतम किया तो वह व्यत्कि थक जुका था। शैलोम, बिल।

**टिप्पणी :** उपर्युक्त स्थिती में कुछ और अतिरिक्त क्रम से भी मदद मिलती। जब भी उस व्यक्ति ने अपने हाथ की ओर देखा वह सिकुड़ने लगा। इसका मतलब यह है की उस में कुछ अर्धमी चित्र और विश्वास होंगे जिन का पश्चताप कर के उन को बदलना चाहीए। उसे आदेश देना चीहिए की वह अपने आप को बदले। उसे आदेश देना चाहिए की वह अपने आप को शांत कर ले, अपनी आँखों को यीशु पर रखे और उस से पूछा जाए की उसे उसका बायाँ शरीर कैसे दिखता है। तब उसे आदेश दें की वह विचारों और चित्रो के बहाव की ओर ध्यान लगाए, और वह जो कहता है आप उसे लिखते जाईए। यह नया दैवी दर्शन उस के पुराने चित्र और लकुए के विचारों को बदल कर विश्वास जगाऐगा। उस के साथ वह भय, लकुआ, मार , मार का भय, लकुए का डर, दुर्बलता जैसे शौतानों और इसके भी अलावा जो शैतान उस से संम्बधित है सब को भगाना है। एक बार यह सब बाहार आ जाए, तो पवित्र आत्मा को समाने की प्रार्थना करीए, और विश्वास, आशा, जीवशक्ति, जीवन और शक्ति को आमंत्रित कीजीए की वे उस में जिवित हों जाऐं, पवित्रा की शक्ति से।

**बिल एफ, फरबरी १२, २००३:** स्टैटफोई संयुत्क मयोडिस्ट चर्च - फखरी १२, २००३।

मैरी इच्छा है की जब भी मैं लिखूँ तो मेरे पास चमकती हुई साक्षी हो। पिछली रात को हमारी बुधवार रात की सभी थी। मुझे ऐसे लगा की एक जंग छीड़ी हुई थी। जिस पहली महिल के लिए मैंने प्रार्थना करी तो मुझे विरोध महसुस हुओ उस की कमर और घुटने में

तकलीफ थी। परमेश्वर की उपस्थिती वहाँ थी - मैंने पवित्र आत्मा का अनुभव किया - मैंने अपना हाथ उस पर रखा, परन्तु किसी कारण वश वह पा नहीं रही थी और मुझे नही पता की क्यों। पादरी जो ने भी उस के लिए प्रार्थन करी परन्तु नहीं पता की उस ने चंगाई पई या नहीं।

मैने एक और महिला के लिए प्रार्थना करी जिस को कमर दर्द था। शारिरिक दर्द का संम्बध भावमय दर्द और सारी दुनिया का बोझ अपने कंधे पर उठा के चलने के कारण था। जैसे ही परमेश्वर ने मुझे और उसे यह दर्शाया तो वह मान गयी की वह संसार का बोझ उठा कर नहीं चलेगी और नियंत्रण परमेश्वर को दे देगी। उस का कमर दर्द गायब होगया। जब तक हम उस पर प्रार्थना कर के उठे तो उस के सारे दर्द - कमर, गर्दन ऐवं पैर दर्द पूर्ण रूप से गायब थे। क्या वे लौट आऐंगे? बिलकुल अगर वह फिर से सबका बोझ अपने ऊपर ले।

इसी प्रकार का अनुभाव मुझे तीसरी महीला से भी हुआ जिसे करम और कुल्हे में दर्द थी। यह भावना से बंधी हुई थी, फर्क बस इतना था की उस की यह भावनाऐं बचपन से थी। भयकंर रूप से बिरोध और स्वंय को तुच्छ समझना - यह भावमय दर्द उस की रीड़ की हड्डी और कुलहे की हड्डी से लिपटा हुआ था। कभी मुझे चित्र मिलते है यदी मैं यीशु से पूछूँ की उस व्यक्ति के जीवन में क्या हो रहा है। फिर भी हम लोगों ने काफी हद तक उस दर्द को बहार निकाल दिया था और साथ में वह अंधकार भी जो इस दर्द से जुड़े हुए थे। मैंने आज उस से बात करी और उस ने बताया की आज सुबाह उस को दर्द रोकने की दवा नहीं लेनी पड़ी। वह बहुत दवा खाती थी ताकी वह सुबाह उठ कर काम पर जा सके।

और हाँ क्या मैं ने तुम्हें और कैथी को उस चार साल के लड़के के बारे में बताया जिस की पीठ में केंसर की गांठ थी। वह अपनी माँ के साथ पिछली रात की सभा में आया था। अब वह गांठ पूर्ण रूप से गायब है। डॉकटर उसे न पा सके। उस की सफेद सैल की गिनती बहुत अधिर बै और वह हँस रहा था और बहुत खुश था।

एक और महिला ने साक्षी दी की लगभग तीन साल पहले डॉक्टर ने बताया की उसे फेफड़े का कैंसर है। अब उसे जीवित रहने के केवल ६ महीने बाकी थे। वह पिछले हफ्ते जब डॉकटर के पास दिखाने के लिए गई तो पता चला की फेफड़े का कैसर गायब था। प्रार्थना के द्वारा वह पूर्ण रूप से ठीक हो गई।

तो यह कुछ और साक्षीयाँ थी, सूची में जोड़ने के लिए।

**बिल एफं फखरी १९,२००३** : स्ट्रैटफोर्ड हिल्स संयुक्त मे योडिस्ट चर्च - फखरी १९,२००३।

बुधवार की रात को जो हुआ उस का एक झटपट ब्योरा। बुधवार की रात कम लोग ही जमा हुए थे परंतु यीशु वहाँ उपस्थित था अपने लोगों को छूने के लिए। मैं बताता हुँ की यीशु मेरे जीवन में कैसे कार्य कर रहा है ताकी तुम्हें भी थोडी समझ आयेगी जब वह तुम्हारे जीवन और संस्था में कार्य करेगा।

एक क्षेत्र जो परमेश्वर मेरे जीवन में बड़ा रहा है वह है ज्ञान के शब्द। इस का मतलब यह है की चंगाई की सथा में - तुम्हे पता है की वहाँ कोई है जो शारीरिक या भावात्मक परेशानी में है। कभी यह एक सामान्य जानकारी होती है और कई बार खास जब परमेश्वर तुम्हें खुद उस व्यक्ती को दिखाऐगा। बाईबल बताती है की यीशु जान जाते थे की लोगों के मन में क्या है - वही चीज़। आप ऐसी चीज़ो का पता लगाएगे जिस के बारे मे आप को किसी ने नही बताया और केवल देख कर आप नही पहचान पाते।

एक बुधवार की रात जब हम आराधना कर रहे थे, मैंने एक व्यक्ति के गले की छबी देखा और गले के दोनों तरफ कुछ गाँठें दिख रही थीं। मैं नही जान पाया की क्या रोग था परन्तु जो मैंने देखा उसे बता सकता था। वह छबी किसी चित्र के प्रकार नहीं थी जिसे तुम देख सकते, परन्तु मेरे लिए यह छवी थी जिसे मैं देख सकता था चाहे मेरी दृष्टि कहीं और लगी हो आर मैं पूर्णरूप से जो देखा उसे बता सकता था, पर यह मेरी शारीरिक आँख से देखा हुआ नहीं था। मुझे पता नहीं की मैं ठीक से समझा पा रहा हुँ की नहीं। मुझे लगता है की यह कुछ ऐसे है जैसे आप अपने सोफे को देखीए फिर कही ओर देखीए, परन्तु आप के मास्तिशाके में उस सोफे की छबी बनी रहेगी चाहे आप किसी और चीज़ को देख रहे हों।

जब मैं वहाँ खड़ा था तो एक और बात हुई। मैने शब्द सुना -"रोटेटर कफ" (कंधे की माँस पेशी) और अपने दाहिने कंधे पर शारिरिक तौर से कुछ महसुस किया, तो मैं समझ गया की यह किसी व्यक्ति के दाहिने कंधे की माँसपेशी की समस्या है। कभी मैं कुछ सुन लेता हुँ और कई बार दर्द महसुस करता हुँ उस खास क्षेत्र मे जहाँ किसी को कोई समस्या है। मैंने यह सीख लिया की यह परमेश्वर का संकेत है की वह उस जगाह को चंगा करेगा। यह सब मैंने पादरी जो को बताया और उन्होंने लोगों से इस बात को कहा। वे कहने लगे की आगे आईए और चंगाई पाईए।

पहले कोई नहीं आया। फिर एक व्यक्ति आगे आया जिस को यह तकलीफ थी। वह पेंट करने वाला था और उस के कंधे मे यदि वह दूर तक हाथ बढाता तो दर्द होता था। यह वही माँसपेशी थी। हम ने उस के लिए प्रार्थना करी और तुरन्त उस का दर्द दूर हो गया। फिर मैंने बाद में उस पर प्रार्थना करी की जब वह अपना हाथ फैलाये तो कोई दर्द या बेआराम महसूस न हो। आगे का परिणाम क्या हुआ इस के लिए हम को इतज़ार करना पडेगा। परन्तु जो दर्द था वह गायब हो गाया था।

दूसरी समस्या गर्दन की थी - एक औरत सामने आयी और पादरी जो ने उस के लिए प्रार्थना करी असल में वह दर्द क्या था हमें नही पता, पर वह जो हमने बताया था उस तरहा की समस्या ही थी।

एक व्यक्ति आया जिस के फेफड़े में कैसर की गाँठ थी। इस के अलावा मैं क्या कहुँ की मैंने मृत्यु की आत्मा जो कैंसर की आत्मा के साथ उस में थी, उस को तोड़ा और आदेश दिया की वह बिमारी खतम हो जाए और गांठ सूख कर गायब हो जाऐ।

एक और औरत आई जिस के भयंकर कमर दर्द था। २० मिनट की प्रार्थना के बाद वह अपने पैरो को हिलाने लगी जो अगर वह पहले करती तो उसे दर्द होता। पर अब वह उस से मुक्त थी। क्योंकी बहुत ज्यादा बर्फ गिरी थी तो हम लोगों से कह रहे थे की हम उन के लिए प्रार्थना करेंगे जिस की कमर बर्फ हटाते हुए दर्द कर रही हो।

दूसरे लोग भी प्रार्थना कर रहे थे परन्तु मुझे नहीं पता की उन के साथ क्या हुआ। कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्हे कंधे और गर्दन की मॉसपेशीयों में दर्द था। सब से अच्छा तरीका दर्द निकालने जो मैंने ढूँढ लिया वह यह है की उपदेश के साथ साथ प्रार्थना करीए, शरीर में शांती के लिए। तो यह सब हुआ था बुधवार की रात को।

परमेश्वर की आशीष हो और आपका हफ्ता आराम दायक हो। बिल।

**बिल अफ फखवरी २६, २००३:** स्ट्रैटफोई हिल्स संयुक्त मेथोडिस्ट चर्च - फखरी २६, २००३।

हैल्लो कैरोलिन,

स्ट्रैटफोई हिल्स में बुधवार रात क्या हुआ उसके बारे मे बताता हुँ।दो सप्ताह पैहले मैंन बताया था की आराधना के समय मैं ने एक छवी देखी थी जिस में एक व्यक्ति के गले में दोनों तरफ कुछ गांठें देखी थीं। पास्टर जो ने उसके बारे में बताया तो एक महीला आगें आई प्रार्थना मे शामिल हुई। पिछली रात उस ने आकर साक्षी दी की उस को थायरौइड़ की समस्या थी और जब पादरी जो ने बताया, तो वह समझ गई की यह उस के लिए है। जब वह सामने आई तो उन्होंने उस के लिए प्रार्थना करी तो उसे ने महसूस किया एक गर्म कालर जैसा उस के गले से लिपट गया है और तुरन्त उस को लगा की जो भी उस की परेशानी थी वह दूर हो गई।

जब लोग प्रार्थना के लिए आगे आऐ, तो मैंने यह शब्द सुने - भयंकर हारमोन का असंतुलन।" मैंने यह पैगी एण्डरसन को बताया परन्तु पादजरी जो ने नहीं बताया। जब प्रार्थना का समय आया, तो एक औरत मेरे सामने खड़ी हो गई और प्रार्थना करवाने लगी, उसने कहा की उस को हारमोन से परेशानी थी - "वे बिलकुल संतुलन खो बैठे थे" और इस के कारण उसे सरदर्द और रात में पसीना आना शुरू हुआ। यह उसे जगा देना था और फिर वह सो

नहीं पाती थी। तो चाहे हमने उसके बारे में नहीं बताया फिर भी परमेश्वर ने उसे प्रार्थना के लिए मेरे पास भेजा ताकी मैं जान जाऊँ की जो मैंने सुना वह परमेश्वर की और से था। कई बार तुम पागलपन सा अनुभव करते हो - क्या यह मेरी ओर से है या परमेश्वर की ओर से? मैं प्रार्थना करता हुँ की मैं परमेश्वर की ओर से सफाई से सुनने के लिए तैयार रहुँ। वह मेरी प्रार्थना का जवाब दे रहा है।

वह चार साल का लड़का जिस की पीठ पर केसर की गांठ थी। वह जाँच के लिए पिछले हफ्ते गया था और गांठ पूरी गयब हो चुकी थी। मैंने एक औरत के साथ प्रार्थना करी जिसै कंधे और गर्दन मैं पिछले दो साल से परेशानी थी। मैने उस पर हाथ रखा और उस की गर्दन और कंधे की माँसपेशीयों को आदेश दिया की वे ढीली हो कर फैल जाऐ। मैं ने आदेश दिया की सारा दर्द चला जाऐ और उस से कहा की वह कुछ ऐसा करे जिस को पहले करने से उसे दर्द होता था। जब उस ने वैसा किया तो अभी भी कुछ दर्द और तनाव बाकी था। मैन फिर उस के लिए प्रार्थना करी और उससे कहा की वह अपना हाथ गोल घुमाऐ। वह अपना हाथ सर के ऊपर तक उठा सकी जिस को पहले वह नही कर पाती थी।

एक महिला प्रार्थना के लिए आई। मैं समझता हुँ की वह नारफोक हस्पनाल में पादरी थी। उसे कैंसर है इसलिए वह प्रार्थना करवाने आई। जब मैं किसी के लिए प्रार्थना करता हुँ जिसे कैसर है तो, मुझे गुस्सा आजाता है - उस व्यक्ति पर नही परन्तु उस बिमारी पर क्योंकी मेरे लिए कैंसरे शैतान से बंधा हुआ है और उस मे शैतानी शक्तियाँ है जो उस व्यक्ति पर डालता है। मैं मृत्यु की आत्मा को कैंसर की आत्मा को और डर की आत्मा को छोड कर जाने का आदेश देता हुँ। फिर में परमेश्वर से कहता हुँ की वह उन के शरीर को ठीक करे। उम्मीद है की यह औरत लौट कर आऐगी तब हमे पता चलेगा की क्या हुआ।

अगले सप्ताह हम नौरगे, वीए, जाऐंगे।विलियमस्वर्गकी एक स्थानिय समाचार की रिपोर्टर वहाँ होगी एक औरत जो पिछली सभा में आयी थी, उस ने इन समाचार पत्र वालों को बुलाया था की उस के कई सालों से कमर का दर्द था वह ठीक हो गया था। जब वह इमारत में घुसी तो किसी ने उस का अभीवादन किया और उस के कंधे पर हाथ रखा। तुरन्त उसका सारा दर्द गायब हो गया। सो उस ने उस समाचार पत्र के रिपोर्टर जो ऐण्डरसन को फोन कर के सब कुछ बताया और आने वाली सभा के लिए भी बताया। यह एक आश्चर्य जनक रात होगी।

पिछले सप्ताह के आखिरी दिनो में र्माक विर्कलर आए और उन्हों ने हमारे लिए शुक्रवार और शनीवार को एक कार्यशाला आयो जित करी। शनीवार की रात जब पढ़ाई खतम हुई और मैं सफाई में मदद कर रहा था, तो एक महीला आई और उसने मुझ से उस के लिए प्रार्थना करने को कहा। उसे भयंकर कमर दर्द था और वह सो नहीं पा रही थी। मैने अपने हाथ उस पर रखे, और यीशु के नाम मे आदेश दिया की दर्द छोड़ कर चला जाए। उसके शरीर को चंगा होने को कहां और उस से वह करने को कहा जिस को करने से उसे दर्द होता था। वह तुरन्त झुक कर अपने पैर के अंगुठे को छूने लगी। और जब वह सीदी हुई तो उस के चेहरे पर एक बड़ी मुस्कुराहट थी। उस का कमर दर्द जा चुका था। दूसरों ने भी यह

देखा और चंगाई के लिए मेरे सामने तीन या चार लोगो ने लाईन लगा ली। परमेश्वर कितना अच्छा है।

इस रवीवार की रात, कोरनरस्टोन में हमारी चंगाई की सभी होगी। पिछले हफ्ते हमने हमारे एक अगुवे के लिए प्रार्थना करी थी। एक डॉक्टर ने कहा था की पूरा दाहिना घुटना बदलना पडेगा। प्रार्थना के बाद, बदलाव की आवश्यक्ता नहीं थी। मैं उम्मीद करता हुँ की जो बैहरी लड़की थी वह वापस आऐगी। मै जानना चाहता हुँ की वह सुन सकती है की नहीं।

तो यह कुछ कार्य हुए हैं। में तुम्हें फिर बताऊँगा की उस रविवार और अगले सप्ताह क्या होता है। सप्ताह के आखरी दिन अच्छा गुज़रे। आशीर्वाद के साथ। बिल।

**सैम लियू और एलसी सायरस, स्टैफोर्ड, विद्यारथीयो को प्रार्थना के अगुबे, फरवरी २००३.**

जब हम (गैरी और कैथरीन) स्टैनफोर्ड में रह कर विद्यार्थी अगुवों को सिखा रहे थे की परमेश्वर की आवाज सुनना और प्रार्थना के द्वार बिमारो को चंगा करना विश्वविद्यलया प्रचार की शक्ति को फैलाना, तो परमेश्वर ने हमे जानकारी के कई शब्द दिये और परिस्थितीयाँ जिन्हे हमने उस सभा में चंगा करना है। उन में से एक था भयंकर घुटनो की चोटें। एक विद्यार्थी जिस का नाम सैम था उसे दो साल पैहले बर्फ पर स्कीईगं करते वक्त एक ऐक्सीडेंट के कारण उस घुटने मे भयंकर दर्द रहता था। हम सैम के लिए प्रार्थना करने लगै की पवित्र आत्मा आऐ और अपनी चंगाई की शक्ति  सैम के घुटने पर उण्डेले। पहले कुछ नहीं हुआ सो हम ने परमेश्वर से कहा की वह हमे रूकाबटें दिखाऐं जो अभीषेक को पूरा नही होने दे रहा है। सैम ने कुछ उत्सुकताओं को परमेश्वर को सौप दिया जो उस के मन को भारी कर रही थीं और फिर जब हमने प्रार्थना करी की आत्मा अपनी चंगाई की तीव्रता को घुटने पर डाले तो उसे थोड़ा ठीक लगा। तब डेविड़, जो एक और विद्यार्थी प्रार्थना अगुवा था, उस ने दर्शन मे देखा की परमेश्वर की चंगाई की शक्ति, ज्योति के रूप में सैम के घुटने में प्रवेश किया और घुटने की हड्डी और दूसरी हड्डीं जो  टूट गयीं थी उन को ठीक कर दिया। हम ने कहा, डेविड ने प्रार्थना करी, परमेश्वर कुपया अपनी आत्मा की चंगाई की ज्योती को सैम की टूटी हड्डीयों को जोड़ने के लिए भेज दो और  उस मे यीशु के नाम से एक नयी ताकत डाल दो'। जब डेविड प्रार्थना कर रहा था, सैम ने महसूस किया की बिजली ने उसके घुटने मे प्रवेश किया, और सारा दर्द दूर हो गया। हम ने परमेश्वर का धन्यवाद दिया। एलसी, एक और  विद्यार्थी प्रार्थना अगुवा, ने अपनी एक सहेली जो कैनेड़ा मे रहती थी, जिस के भी घुटने मे चोट के कारण भयंकर दर्द था, उस को फोन किया। उस ने अपनी दोस्त (जो एक मसीही था) से कहा की वह अपना हाथ अपने घुटने पर रखे, और फिर एलिसा ने वही प्रार्थना करी जो डेविड ने करी थी की यीशु की चंगाई की ज्योती उस की सहली के धुटने मे प्रवेश कर उसे ठीक करेगी। उस की सहेली जो फोन के दूसरी ओर थी, उस ने बिचली को, जो वह जानती थी की परमेश्वर की शक्ति है, अपने धुटने के अंदर जाते देखा और सारा दर्द गायब हो चुका था और उसे पूर्ण रूप से चंगाई मिली थी। कई महीनो के बाद एलसी कि सहेली एक ई मेल भेजा और कहा की उस का घुटना अब तक चंगा और स्वस्त है। परमेश्वर  का धन्यवाद हो।

**जेसन पी,** विलियम और मेरी कालेज, जौनुवरी २००३:

हमारे अनुभव मे चंगाई उतनी गहीरी नही होती जितनी होनी चाहिए, और वह स्थिती जिस में वह व्यक्ति चंगाई पाई थी वह वापस लोट आती है (जैसे यीशु ने चेतावनी दी है यूहन्ना ५:१४ में) यदी वह व्यक्ति अपने मन की समस्याओं को दूर नहीं करता जो चंगाई में बादा बन जाती हैं। इसलिए यीशु ने मत्ती ९:६ मे, पापो की माफी को लंगडे आदमी की चंगाई से जोड़ा (लुका ५:२४, मरकुस २:१०) और यही कराण है की याकुब ५:१६ मे कहता है की यदि किसी व्यक्ति ने पाप किया हो ता वह चंगाई की प्रार्थना के समय वह अपने पापो का इकरार करे: "इसलिए तुम आपस में .......हो सकता है।"

जब हम मसीहो पर चंगाई की प्रार्थना करते समय पवित्र आत्मा को सुनते है तो ज्यादातर समय में वह उतनी या और कोई भी रूकावट जो प्रार्थना के दौरान पता चलता है, मान न ले। एक बार हमने जोसन पी जो विलियम और मेरी कालोज में विव्यार्थी आराधना अगुवा के लिए हम ने प्रार्थना करी । जेसन को सभा में ही बुखार और गले में खराश शुरू हो गीयी। कैथरीन ने, मैं ने और दो अन्य विद्यार्थीयों ने प्रार्थन् करी की पवित्र आत्मा अपनी शक्ति और चंगाई की ज्योती को जेसन के गले और फेफड़ो पर छोड़े। हमने बुखार को और गले की खराश को डाँटा और आदेश दिया की वह उसे छोड़ कर चले जाऐं। यदि हम चंगाई को १ से १० तक को पटटी पर नापे, तो १ का मतलब है पूर्ण चंगाई। जेसन १० से ८ तक पहुँचा, सिर्फ थोड़ी सी चंगाई देखी। फिर हम ने पवित्र आत्मा से पूछा की ऐसा क्या है जो उस को पूर्ण रूप से प्रवेश करने स रोक रहा है। एक विद्यार्थि को एक लड़की का चित्र उसके ध्यान मे आया। जब उस विद्यार्थो ने उस लड़की का ब्योरा बताया, तो पता चला की वह जेसन की पुरानी महिला दोस्त है जिसे जेसन ने माँफ करना है। उस ने उसे कुछ पिछली तकलीफों के लिए माफ किया और तुरन्त आत्मा की ज्यादा चंगाई का अभीषेक उस में समा गया और जेसन को झन झनाहट और गर्मी महसूस हो ने लगा। वह तेजी से साँस लेने लगा और पसीना छोड़ेने लगा (जब उसे बुखार था तब उस को पसीना नही आया था)। हम ने फिर से उस के बुखार और गले की खराश को टोका तो अभीषेक ज्यादा प्रबल हो गया और बुखार पूर्ण रूप से चला गया और गले की खराश १० से २ तक हो गई। वह इतना ठीक हो गया की वह ज्यादा आराधना करने लायक हो गया।
गया।

**डार्यना एक विलियम और मेरी कालेज, डिस्मंबर २००२:** विलियम और मेरी कालेज मे एक सभा मे विद्यार्थीयों को चंगाई की शक्ति के लिए प्रार्थना सिखाते में ताकी वे प्रचार की शक्ति पा सके, डायना नाम एक महील सामने आई की उस के सर की ठण्ड के लिए प्रर्थना की जाए। जैसे हम ने पवित्र आत्मा से कहा की वह अपनी चंगाई की शक्ति को उस पर डाले और उस की तीब्रता उस के नाडी मे रुकावट और गले पर डाले, तो परमेश्वर ने कैथरीन के दिमाग में डाला की उस ने कुछ विष्यों पर अपनी माँ को माफ करना है। जब उस ने किया, तो हम ने उस रुकावट को आदेश दिया की वह यीशु के नाम में उसे छोड़ कर चल जाऐ और पवित्र आत्मा से कहा की उसे चंगाई दे। उस ने

अनुभव किया की वह रूकावट उठ गई है और उस की नाडी खुल गयी हे और उस के सर से सूजन हट गयी है परमेश्वर की स्तुती हो।

**क्रिस साई, एम आई टी, इटर वर्सीटी, अकटुबर २००२:** क्रिस एक मसीही है, जो एम आई टी, में पढ़ती है। उस ने हमें फोन किया और हमें कहा की हम फोन पर उस की चंगाई की प्रार्थना करे। हम ने प्रार्थना में यीशु परमेश्वर की आज्ञा माँगी तो उन्हों ने कहा की वे उस फोन पर ही चंगा करेंगे। क्रिस का दाहिना कंधा टूट गया था जब वह आई वी सी एफ की सभा में गिर गाय था। उस के कंधे पर पट्टी बन्धी हुई थी। हम ने पवित्र आत्मा से कहा की वह आकर अपनी चंगाई की शक्ति की तीब्रता को उस के दाहिने कंधे पर डाले। हम ने दर्द और सूजन को डाँटा और आदेश दिया की कंधा ठिक हो जाए। पहले तो क्रिस ने कहा की उस २५% ठिक लगा। फिर हम ने परमेश्वर से पूछा की क्या कोइ रुकावट है जो उस के अभीषेक को रोक रहा है और परमेश्वर ने हमे जवाब मे बताया की उसको अपने भाई की तरफ चिन्ता और कुछ और समस्याऐ है जो उसने प्रभु के आगे रखना है। क्योंकी क्रिस एक चीनी है। हमनें उसे प्रार्थना के द्वारा सारी चिताओं को तोड़ने के लिए कहा, उस ने माता पिता और पूर्वजो को यीश के नाम मे माफ किया जो मूर्ती पूजक थे। परमेश्वर ने हम से कहा की हम चोट, मूर्ति पूजा और दैवी पूजा और बिमारी की आत्माओ को निकाले। हम ने वैसा ही किया। जब हमने फिर से प्रार्थना करी आत्मा की शक्ति को उस के कंधे पर डाल कर चंगाई देने के लिए, तो उस ने कहा की "महसुस किया की चीजे उस के कंधे मे चारो ओर धूम रही है" सूजना कम हो गयी और दर्द ५०% कम हो गाया। हम ने दूसरी बार उस से फोन पर प्रार्थना की तो उस ने ८५-९०% चंगाई का अनूभव किया। परमेश्वर की स्तूति हो।

**क्रिस्टीयन एल; कोलज आफ विलियम और मेरी, अकटूबर २००२:**

आराधना के बाद और चंगाई की प्रार्थना के प्रशीक्षण के वक्त, परमेश्वर ने हमे शब्दों के ज्ञान से बताय की किसी की कलाई में दर्द हे उस चोट की वजाह से जो उसे तीन सप्ताह पहले लगी थी। पता चला की एक विद्यार्थी जिस का नाम क्रिस्टीयन था उसे वह दर्द था। वह विलियम और मेरी मे अलटीमेट फ्रिस्बी टीम का नेता था और सभा से तीन स्पताह पहले एक खेल खेलते मे चोट लग गई थी। हम ने उस पर प्रार्थना करी की पवित्र आत्मा आए और अपनी चंगाई की शक्ति को क्रिस्टीयन पर छोडे और अपनी तीव्रता उस की कलाई पर डाले। परमेश्वर के कहने पर हम ने दर्द का छोड़ जाने को कहा) क्रीस्टीयन ने परमेश्वर की शाक्ति को अनूभव किया परन्तु कलाई के दर्द मे कुछ कमी नही आई। हमने परमेश्वर से रूकावट का कारण पूछा। परमेश्वर ने मेरे मस्तिशक मे बताया की "उसका भाई"। उसने अपने भाई को माफ करना है। यह उसका सगा भाई नहीं था परन्तु मसीह मे उस का भाई था जिस के साथ हास्टल मे एक साथ रहना मुश्किल था। उस ने परमेश्वर के कहने पर उसे माफ कर दिया। हम ने फिर प्रार्थना करी की पव्रित्र आत्मा अपनी चंगाई की तीव्रता को क्रिस्टीयन की

कलाई पर बढाये। हमे परमेश्वर द्वारा आदेश मिला की हम दर्द को उसकी कलाई छोड़ कर जाने को कहे। इस बारी उस का दर्द पूरी तरहा चले गया और क्रीस्टीयन ज़मीन पर लेट कर हाथों के बल डंण्ड बैठक करने लगा और उसकी कलाई से दर्द बिलकुत गायब था। परमेश्वर की स्तूती हो। परमेश्वर का धन्यवाद है।

**हरस्बर्ग, जरनमी, इन्नर हीलिगं कावफ्रेन्स, मार्च २००१:**

कैथरीन और मैं (गैरी) एक प्रौढ अवस्था का आदमी जिस का नाम सैबैस्टीयन औलबरिच था, उन को घुटने में रोग के कारण वह कुछ उठा कर चल नहीं पाते थे। हमने पवित्र आत्मा से कहा की वह यीशु की चंगाई की ताकत सैबैस्तीयन पर डाले और उसके घुटने पर तीव्रता बढ़ाऐ। जब मैंन यीशु के चेहरे की ओर देखा तो मेरे मन की आँख ने जाना की सेबैस्टीया के खानदान मे टूना टोटका और जादू का आचारण किया जाता है जिस की क्षमा परमेश्वर से माँगनी है। सैबैस्टियन ने इस बात को माना और कहा की उस के माता पिता जादू टोना का आचरण करते है। उस के परमेश्वर से अपने और अपने माता पिता के पापो का इकरार कीय और क्षमा माँगी। हम ने सैबेस्टीयन के सब शापों को तोड़ा और परमेश्वर के बताए अनुसार उस के घुटने में से उन पापों को जिस को उस ने अभी माना है उस के घुटने को छोड़ कर जाने का आदेश दिया। फिर हम ने परमेश्वर के बताए अनुसार दर्द को घुटने में से निकल जाने का आदेश दिया। सैबैस्टीयन को हमारी प्रार्थान से कुछ अनुभव नही हुआ सिर्फ इसके की उस ने परमेश्वर की शांती को अनुभव किया और घुटने में का दर्द चल गया। हम ने पवित्र आत्मा से कहा की वह उस को घुटनो को मज़बूत बनाए और वहा की कोमलास्थि को दूबारा बानाऐ। हम ने परमेश्वर के निर्देश अनुसार प्रार्थना खतम की और पवित्र आत्मा से उस के चंगाई के कार्यों को यीशु के खून की मोहर लगाने को कहा। अगलो दिन सैबैस्टीयन ने बताया की उस के घुटने पूर्ण रूप से ठीक हो गऐ थे । जब सुबह उठ कर उस ने व्यायाम किया तो उस के घुटनों में वह दर्द नही था। उतने सालों में पहली बार वह घर के सामने से भारी पत्थरों को उठा सका और उसे घुटनों मै बिलकुल भी दर्द नही हुआ। परमेश्वर कितना अच्छा है।

**ब्रेथरन चर्च,** हर्सब्रक में उपदेश के बाद जब प्रार्थना का समये आया, तो हमने परमेश्वर से पूछा की वह उस कलीसीया में कौन सी स्थिती को सुधारना चाहता है। जब मैं ने मन की आँखो से परमेश्वर की ओर देखा तो उन्हों ने मुझे दिखाया कीसी व्यक्ति का जिस के नाड़ी की रूकावट करीबन तीन हफ्तों से थी उसे ठीक करना चाहते थे। इस को जब कलीसीया को बताया गया तो एक महीला आगे आई। उसे तीन हफ्तों से लाडी में रूकावट की समस्या थी। हम ने उस से पूछा की तीन हफ्ते पहले क्या हुआ था। उस ने बताया की तीन हफ्ते पहले उसे एक नौकरी छोडनी पड़ी क्योंकी जिन लोगों के साथ वह काम कर रही थी, उन के साथ काम करना निरर्थक था। हम ने उसे से प्रार्थना में कहा की वह उन लोगो को माफ करदे। उस ने उन्हे माफ किया और हमने पवित्र आत्मा से कहा की वह अपनी चंगाई की शक्ति उस की नाडी में डाल कर सब रूकावटों को खोल दे और वैसा ही हुआ। उस के सर मे नाड़ी की हर रुकावट दूर हो गई और तीन हफ्तों मे पहली बार उस ने अनूभव किया कि उस की नाडी

(साईनस) खुल गई है। परमेश्वर ने उसे पूर्ण से चंगाई दी।

प्रीढ़ा एक बुटी महिला थी जिस ने हमारे कहने पर, अपने परीवार के सदस्यों को जिन्होंन उसे चोट पहुँचा रहे थे, उन्हें माफ किया और उस के तुरन्त बाद उस ने अनुभव किया की उस को कमर दर्द और बायें पैर के दर्द से पूर्ण रूप से चंगाई मिली।

हम ने लोगों को तीन तीन के झुण्ड मे बाँटा ताकी वे एक दूसरे के लिए अंदरूणी चंगाई के लिए प्रार्थना करना सीखे।जब वे एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने लगे तो कई लोग थे जिन्हें परमेश्वर ने मुक्त किया। इन मे से सबसे विशिष्ट बदलाव एक महीला में आया, जिस के चेहरे पर आत्मिकता का ना होना, साफ नज़र आ रहा था। उस का चेहरा ऐसे लग रहा था जैसे उस ने काली जाली से अपना चेहरा ढाँक रखा हो या उस के चेहरे पर किसी ने चेहरे पर तैलीय हलकी कालिक लगाई हो। उस की लडाई मृत्यु का डर और बच्चो से दूर हो जाना, थी। प्रार्थना मे उस ने अपने इन डरो को परमेश्वर को सौप दिया और इन सब से उस मुक्त करने को कहा। यीशु उसे उस दृश्य को दिखाने लगे जहाँ उस के पिता उसे डाँट रहे था। उस ने अपने पिता को माँफ किया और फिर हम ने यीशु से कहा की वह उस के ख्यालो में आऐ। जैसे ही उस ने अपने ध्यान में युशु को देखा जिन्होंने उस के पास खड़े हो कर अपना हाथ उस के कंधे पर रखा और उसे अपने अनकहे प्यार का सहारा दिया। तुरन्त उस के दर्द जो पिता की डाँट से मिला था और मृत्यु के डर से उसे छुटकारा मिल गया। उसकी आँखें बन्द थी जब वह हम से यह सब बता रही थी की यीशु क्या कर रहे है। फिर वह मुस्कुराने लगी जब उसे ने अनुभव किया की उस की यादाशत में से डर जा चुका था। एक दम से उस के चेहरे का कालापन चला गया और उस का चेहरा पवित्र आत्मा की उपस्थीती से चमकने लगा। उस के चेहरे ने अपना स्वभाविकपन ले लीया और एक हलकी सी चमक के साथ। यह अदभुत था। परमेश्वर ने उसे मुक्ति किया और उसे अब मृत्यु का डर नहीं था या बच्चो से दूर होने का डर, जो प्रार्थना के पहले उस मे था।

**ताईवान से जैक और विक्टर**, **औप्रेल २००:** ताऊवान मे चंगाई और अंदरुणी चंगाई की शिक्षा सभा से लौटते वक्त, मै (गैरी) एक हवाई जहाज, में ताईवान से सेन प्रानसिको जा रहा था। मैं दो चीनी चुवकों के साथ बैठा हुआ था जिन के नाम,जैक और बिक्टर ते। जैक बहुत बातूनी था। वह मेरे बारे मे सब जानना चाहता था और यह भी की मैने ताईवान मे क्या किया। सो मैंन उसे बताया की मैं एक मसीही शिक्षालय का प्राध्यापक हुँ और मै गिरजाधरो के अगुवो को सिखाता हुँ की आज के दिनों मे यीशु बिमारों को कैसे चंगा करता है। तुरन्त जैक मुझ से धर्म पर बात करने लगा। उस ने मुझे बताया की वह नाईवान मे एक केथोलिक स्कूल मे पढकर बड़ा हुआ है और वह यीशु के बारे में जानता है। परन्तु यह साफ था की उस ने अपने आप को यीशु को नहीं सौपा था। उसने यह भी बताया की एक प्रचारक ने उसे बाईबल देकर पढ़ने को कहा था। परन्तु जैक ने कई बहानो की सूची बना दी की वह यीशु पर या बाईबल मे क्यो विश्वास नहीं करता है। तो मैन उसे बातना शुरू किया की यीशु ने कैसे उन लोगो को चंगा किया जिन्हो भयंकर कमर दर्द और गर्दन दर्द की समस्या थी और यह चंगाई उन को उस वक्त मिली जब उन्होने परीवार की मूती पूजा का खण्डन किया और छोड़ दिया और

जब हम ने प्रार्थना करी तो कैसे यीशु ने शैतानों से भी लोगों को मुक्त किया। जैक की आँखें अच्मंबे से खुलने लगी जब उस ने सुना की यीशु ने क्या किया है। जल्द ही जैक हवाई जहाज़ के हमारे हिस्से में चिल्लान लगा की, "यीशु कितन शक्तिमान है। यीशु कितना शक्तिमान है।" कुछ और चीनी मसीही जो हमारे साथ बैठे हुए थे, वो मुझ से मुलाकात करने लगे क्योंकी जैक चिल्ला ने लगा था की यीशु कितना शक्तिमान है। फिर जैक ने मुझ से पूछा की क्या यीशु उस के पेट के दर्द को और विक्टर के कमर दर्द को दूर कर सकता हे। तो मैंने अपनी आत्मा मे परमेश्वर से पूछा की क्या वह चाहता है की मैं उन के लिए प्रार्थना करुँ? मुझे जवाब मिला, "बिलकुल, प्रार्थना करो, मैं उन्हे चंगाई दूँगा।" (हम ने उस बात को जाना की परमेश्वर अपनी शक्ति और प्यार को दिखाने के लिए गैर मसीहो को और खोजीयो को तुरन्त चंगा करता है।) तो उन की अनुमती से मैंन अपने हाथ को जैक के पिछे से लेते हुए, विक्टर की कमर पर रखा और धीरे से पवित्र आत्मा से यीशु की चंगाई की शक्ति को छोड़ने के लिए कहा। मैंन अपने हाथ को गर्म होते महसुस किया और समझ गया की अभीषेक हो रहा है। मैंन दर्द को ढाँटा और निकल जाने का आदेश दिया। विक्टर के जीवन मे पहली बार ७०% दर्द से उसे छुटकारा मिला और जब तक हम सैन फ्रांनसिस्को पहचँते कई घण्टों बाद बाकी का दर्द भी खतम हो चुका था। जैक के पेट में से भी, मेरे प्रार्थना करने पर दर्द निकल गया। मैने उन से कहा की यीशु चाहता है की वे अपना जीवन उसे सौप दे, क्योकी उस ने अपना जीवन क्रूस पर हमारे लोए बलीदान किया था। वे ध्यान से सुनते रहे। यह सच मे अचंम्बे की बात थी की कैसे परमेश्वर ने इन दो चीनीयो को अपना प्यार और क्रूस की शक्ति की जानकारी दी।

**ताईचुंग हीलींग कान फ्रंस अप्रेल २००:** ताईतव इन्नर हीलिंग कॉनप्रेंस, एल्डर साईमन और पास्टर माईक और अभी बदलाव में आऐ, अप्रेल २०००:
ताईनन इन्टर चर्च हीलिंग सरविस, जून 1999

**गैरी, स्प्रींग १९९८:** मैं, वर्ल्ड प्रेयर सेंटर, कोलोराडो सिगस, को.में, मैं.डॉ. सी पीटर वागवर जो ग्लोबल हार्वेस्ट मिनिस्त्ट्री टीम में है, उन के साथ एक दोरे पर था। मैं यीशु को अपने मन की आँखो से अपने से आगे देखने की कोशीश कर रहा था, जब अचानक यीशु ने एक चीनी पास्टर, जो ताईवान से था, उस की ओर इशारा किया। वे एक झुण्ड के साथ थे और उन का नाम फिलिपथन था, वे ताईवन, ताईवान से थे। मेरे मास्तिशाक मे एक चित्र आया की इस व्यक्ति के बाये हाथ मे चोट या दर्द है। जब मैंने उस से बात करी तो उस ने बताया की उस की कोहनी मे दर्द है और जब मैंन उन के साथ मिलकर प्रार्थना करी और पवित्र आत्मा से कहा की वह अपना आभीषेक उस पर छोड़े, तो वह व्यक्ति काँपने लगा। पवित्र आत्मा से निर्देश पा कर मैंने दर्द को डाँटा और तनाव को उस की कोहनी से मुक्त होन को कहा। वह पूर्ण रूप से चंगा हो गया। फिर यीशु ने एक जोड़े की ओर इशार किया। उन का नाम चक और जैनिफर था। वो कैलीफोखीया के बे क्षेत्र के पास्टर थे। जब यीशु ने उन की ओर संकेत किया तो मैंने पूछा पिता इस जोड़े के लिए आप के मन और मास्तिष्क में क्या है"। उन्होंने मुझे चित्र

दिखाया जिस मे वह आदमी को ऊँचाई से डर था और औरत मे कोई शारीरिक कमज़ारी। जब मैने उन्हे यह बताया, तो यह सच निकला। हमने उस की पत्नी के लिए प्रार्थना की और वह चंगीगी हो गई और फिर हम ने उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करी और उस से कहा की जीवन भर की ऊँचाई का डर वह परमेश्वर पर छोड़ दे और उस डर की आत्मा को निकाल दिया। कई महीनो बाद उसने मुझ से संम्पर्क किया और बताया की वह अब उच्चाई से नहीं डरता।

रैडी हिल, रीजेन्ट स्टूडेंट फाल १९९५:

परवेज़ कार्मोजड़, जनवरी १९९५:

केसी और लिड़ा , और डायन और टॉम, मार्च १९९४:

जोआन हाँफमैन, फरवरी १९९४:

माईक बार्टी, जनवरी १९९४:

**गैरी, स्प्रींग १९९३:** मै हवाई जहाज से लॉस ऐंजलस से जैनवर जा रहा था। मैं बैठा तो तुरन्त मेरी आत्मा व्याकुल हो उठी की मैं यीशु की उपस्थिती को अनुभव करूँ और सुनुँ। मैने जब यीशु की उपस्थिती को अनुभव किया तो मैने उन्हे मेरे बगल मे खड़े होकर मेरे पड़ोस में बैठे व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने को कहा, "इस व्यक्ति के लिए प्रार्थना कर। यह भटका हुआ है"। मैने उस से बातचीत करनी शुरू की तो पता चला की उस का नाम ज़ेनन है और वह एक वकील है। हम कम्पयूटर के बारे मे बात करने लगे और थोड़ा बहुत विश्वास और परमेश्वर के बारे में भी क्योकी उसे पता चला की मैं एक मसीही संम्पादक के लिए काम करता था। जब जेनन और मे आत्मा मे उस से बात कर रहे थे, तो मैंने अपनी आँखे यीशु पर लगाऐ रखी और अपनी साँसो मे अन्नय भाषा में प्रार्थना करी, ताकी परमेश्वर कुछ ज्यदा बता सके। मेरे मस्तिष्यक की आँख मे उस के पिता का चित्र आया जो बहुत ही कठोर और निर्दय था और मैंने मेरी आत्मा ने मुझ से कहा की, "उस की एक बहन्न है जो उस के लिए प्रार्थना कर रही है।" जब मैंने यह सब बाते उस को बतायीं तो वह चकित हो गया की यीशु ने मुझे यह सब कुछ दिखाया। जेनन एक पिछडा हुआ कैथोलिक था और उस की बहन आत्मा से भरी कैथोलिक जो साऊथ बेन्ड, इडियान में रहती थी और जेनन के लिए प्रार्थना करती रहती थी। यह परमेश्वर के बारे मे मामूली बातचीत, परमेश्वर के साथ एक मुलाकात बन गयी। वह जानता था की मैं यह सब जान जाऊँगा क्योकी यीशु सच्चा था और वह हवाई जहाज़ में उपस्थित था और मुझे सब बताता था। वह उतसुक हो गया। फिर यीशु ने उस के फेफड़े की ओर इशारा कर के कहा की उसे सांस लेने मे तकलीफ होती है और वह चाहता था की मैं चंगाई के लिए प्रार्थना करू। जब मैं ने उस बात को ज़ेनन से पूछा तो उस ने मुझे बताया की उस का जीवन भर का अस्थमा है और प्रार्थना का स्वागत किया। मैंने पवित्र आत्मा से कहा की वह अपनी शक्ति को जेनन के फेफड़े पर छोड़ दे और मैं रूकावट को डाँटना शुरू किया और उस के फेफडे को यीशु के नाम मे छोडने को कहा। जेनन ने अभीषेक की गर्मी को फेफड़े और कमर मे महसूस किया। उस ने रूकावट को निकलते देखा और परमेश्वर ने उसे पूर्ण रूप से ठीक कर दिया था और वह बिना किसी तकलीफ के साँस ले पा रहा था। यह बिलकुल ही अवीश्वासीए था।

गैरी, डिस्मबर १९९३ (सरकी ठण्डक को बिना अभीषेक के अनूभव के ठीक हो गया)
फ्रड़, वाईयाई मैरेज वीकऐण्ड, अकटूबर १९९३:
जोनायन ग्रेग, अप्रेल १९९३:
ऐलिस ग्रैरट, जून १९९२:
हर्ब मार्टिन्स, जनुअरी १९९२:
बिल नौर्डल, जनुअरी १९९२:
जौएल, मायो क्लीनिक, रोचेस्टर, एम एन, सितंम्बर १९९१:
डेविट होल्मस, सितंम्बर, १९९१:
ज्पूइश जैक, इन लाईन एठ सिज़लर, जुलाई १९९१: